www.epaper.azadsipahi.in

01 फरवरी, 2024
माघ, कृष्ण पक्ष, षष्ठी
संवत 2080
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

रांची
गुरुवार, वर्ष 09, अंक 102

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

WILD WAADI PARK
An Entertainment Hub
एशिया का
तीसरा सबसे बड़ा फ्लावर पार्क
अब रांची में
HAJAM ROAD, RANCHI (JH.)
Contact Now : 9304816880

FLORENCE
Group of Institutions
(A Unit of Haji Abdur Razzaque Educational Society)
Irba, Ranchi-835219,Jharkhand
Admission OPEN 2024-25
PLACEMENT Assistance Scholarship Facility Available
PHARMACY D-PHARM
NURSING ANM GNM POST BASIC B.SC. BASIC B.SC. M.SC.
PARAMEDICAL DRESSERS DMLT ECG X-RAY OPHTHALMIC ASST. OT ASSISTANT
Separate Hostel For Boys & Girls
M.: 9031231082, 7903999411, 6205145470
E-mail : fsnirba@gmail.com
Website : www.florenceinstirba.com

हेमंत सोरेन गिरफ्तार

- सात घंटे पूछताछ के बाद इडी ले गयी साथ
- गिरफ्तारी से पहले हेमंत सोरेन राजभवन जाकर दिया इस्तीफा
- इडी की हिरासत में राजभवन पहुंचे थे हेमंत सोरेन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड के मुख्यमंत्री रहे हेमंत सोरेन को प्रवर्तन निदेशालय ने बुधवार रात को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें जमीन फर्जीवाड़ा मामले में गिरफ्तार किया गया है। इडी की टीम दोपहर करीब सवा एक बजे बजे मुख्यमंत्री आवास पहुंची। उनसे रात 8 बजे तक पूछताछ की गयी। सूत्रों के मुताबिक इडी के अधिकाधिरियों ने पहले से हेमंत सोरेन से सवाल करने की पूरी तैयारी की थी। जमीन फर्जीवाड़ा से संबंधित कई सवाल उनसे पूछे गये। कई सवालों पर हेमंत सोरेन निरुत्तर थे। हेमंत सोरेन से दिल्ली से अचानक तथाकथित रूप से भूमिगत होने और उनके आवास से मिले 36 लाख रुपये के बारे में भी सवाल पूछे गये। सूत्रों के मुताबिक हेमंत सोरेन ने कई सवालों का तो जवाब दिया, जबकि कुछ सवालों पर निरुत्तर हो गये। इडी उनके कई जवाबों से संतुष्ट नहीं हुई। इसके बाद इडी ने उन्हें हिरासत में लेने की जानकारी दी। इडी की हिरासत में ही हेमंत सोरेन राजभवन पहुंचे। उन्होंने राज्यपाल को अपना इस्तीफा सौंपा। इस दौरान इडी के अधिकारी उनकी गाड़ी में उनके साथ थे।

गिरफ्तारी से पहले राजभवन जाते हेमंत सोरेन। पीछे बैठे हैं इडी के अधिकारी।

यह एक विराम है: हेमंत

रांची (आजाद सिपाही)। इडी द्वारा गिरफ्तार किये जाने के बाद झारखंड के निवर्तमान मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने बड़ी प्रतिक्रिया दी है। उनके ऑफिशियल ट्विटर (एक्स) पर एक पोस्ट ट्वीट किया गया जिसमें हेमंत सोरेन ने कहा है कि मैं समझौते की भीख नहीं मांगूंगा। हेमंत सोरेन के ट्विटर हैंडल से कहा गया है कि यह एक विराम है, जीवन महासंग्राम है।

बता दें कि जब गिरफ्तारी के बाद ईडी के अधिकारी उन्हें लेकर राजभवन जा रहे थे तो मुख्यमंत्री ने हाथ हिलाकर समर्थकों का अभिवादन स्वीकारा। मीडिया की ओर भी थंब दिखाया। इससे पहले 20 जनवरी को ईडी की पूछताछ के बाद आवास से निकलकर हेमंत सोरेन ने समर्थकों से कहा था कि झारखंडी हूं, डरता नहीं हूं। यह पोस्ट कुछ इस प्रकार है-

यह एक विराम है, जीवन महासंग्राम है
हर पल लड़ा हूं, हर पल लडूंगा
पर समझौते की भीख मैं लूंगा नहीं
क्या हार में, क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं
लघुता न अब मेरी छुओ
तुम हो महान, बने रहो
अपने लोगों के हृदय की वेदना
मैं व्यर्थ त्यागूंगा नहीं
हार मानूंगा नहीं...

20 जनवरी को भी हुई थी पूछताछ: गौरतलब है कि इडी ने हेमंत सोरेन से जमीन फर्जीवाड़ा में 20 जनवरी को लगभग 7.30 घंटे पूछताछ की थी। इसके बाद इडी ने उन्हें 29 से 31 जनवरी तक पूछताछ के लिए फिर से समय देने के लिए पत्र लिखा था। इस संबंध में इडी ने पत्र भेज कर उनसे कहा था कि आप 28 जनवरी तक हमें सूचित करें कि किस दिन पूछताछ के लिए उपलब्ध होंगे। इस बीच हेमंत सोरेन 27 जनवरी को चार्टर प्लेन से दिल्ली चले गये। 28 जनवरी तक उन्होंने इडी को इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी। समय सीमा खत्म होते ही इडी के अधिकारी हेमंत सोरेन से पूछताछ करने के लिए 29 जनवरी की सुबह दिल्ली स्थित उनके आवास पर पहुंचे गये। उनकी तलाश झारखंड भवन और दिल्ली स्थित सांसद शिबू सोरेन के आवास पर भी की गयी, लेकिन हेमंत नहीं मिले। इसके बाद से उनकी किसी प्रकार की सूचना नहीं आ रही थी। अचानक वह 30 जनवरी की दोपहर रांची पहुंचे। इडी ने दिल्ली में हेमंत सोरेन की गाड़ी, घर से कुछ कागजात और 36 लाख रुपये जब्त किये थे।

गिरफ्तारी से पहले हेमंत पहुंचे राजभवन

हेमंत सोरेन गिरफ्तारी से पहले रात 8.30 बजे राजभवन पहुंचे। वह इडी की हिरासत में थे। वहां उन्होंने राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से मुलाकात की और अपना इस्तीफा सौंपा। उनका इस्तीफा तत्काल स्वीकार कर लिया गया। उनके साथ इडी के अधिकारी मौजूद थे। इस्तीफा देने के बाद हेमंत को इडी ने गिरफ्तार कर लिया।

हेमंत को जोनल कार्यालय ले गयी इडी

रांची। हेमंत सोरेन को इस्तीफा के बाद इडी राची स्थित अपनी जोनल कार्यालय ले गयी। सूत्रों के मुताबिक इडी हेमंत सोरेन से अभी और पूछताछ करेगी। उन्हें गुरुवार को कोर्ट में पेश किया जायेगा। उनकी मेडिकल जांच करायी गयी।

कल्पना पहुंची इडी कार्यालय

हेमंत सोरेन को राजभवन से जब इडी के अधिकारी अपने जोनल ऑफिस ले गये, उसके तत्काल बाद पत्नी कल्पना सोरेन उनके लिए आवश्यक दवा और खाना लेकर पहुंची। वह देर रात तक वहां रहीं। उनके साथ झामुमो के विधायक भी थे।

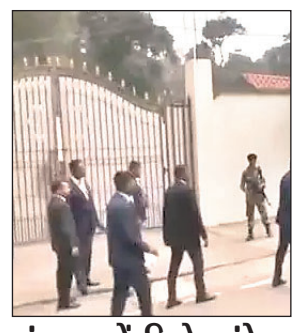

संयम बरतें: विनोद पांडेय

झामुमो के महासचिव सह प्रवक्ता विनोद पांडेय ने पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं से संयम बरतने का आग्रह किया है। उन्होंने झारखंड बंद का खंडन किया।

हेमंत ने इस्तीफा दिया, हमने दावा सौंपा: चंपई

रांची (आजाद सिपाही)। राजभवन से रात 21.15 में मंत्री चंपई सोरेन, आलमगीर आलम, विनोद सिंह और प्रदीप यादव राजभवन से निकले। चंपई सोरेन और आलमगीर ने कहा कि हेमंत सोरेन ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने राज्यपाल को अपना इस्ताफा सौंपा। राज्यपाल ने उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया। चंपई सोरेन ने कहा कि राज्यपाल को महागठबंधन के विधायकों का सरकार गठन का पत्र सौंपा गया। गठबंधन दल के विधायकों ने हमें नेता चुना है। हमने सरकार बनाने का दावा पेश किया। वहीं, आलमगीर ने कहा कि हमें 47 विधायकों का समर्थन प्राप्त है। हमने राज्यपाल को 43 विधायकों का हस्ताक्षर युक्त पत्र सौंपा है। राज्यपाल ने पत्र पढ़ने के लिए समय मांगा है। उन्होंने कहा कि इसके बाद उन्हें सूचित किया जायेगा। चंपई सोरेन से जब पूछा गया कि आप मुख्यमंत्री बन रहे हैं, क्या संदेश देंगे, तो उन्होंने कहा कि समय बहुत है। पहले जो काम करना है, वह करने के बाद सही समय पर आपके सवालों का जवाब देंगे। उधर, राजभवन के बाहर सत्ता पक्ष के कई विधायक मौजूद थे, जिन्हें राजभवन नहीं जाने दिया गया था। उन्होंने राज्यपाल से तत्काल शपथ कराने की मांग की।

राज्यपाल को अपना इस्तीफा और चंपई सोरेन के समर्थन का पत्र सौंपते हेंमत सोरेन।

न्यूज रील्स

कोर्ट ने ज्ञानवापी तहखाने में पूजा की इजाजत दी

वाराणसी। वाराणसी जिला कोर्ट ने बुधवार को ज्ञानवापी के व्यास जी तहखाने में व्यास परिवार को पूजा की इजाजत दे दी है। 31 सालों से यानी 1993 से तहखाने में पूजा-पाठ बंद था।? कोर्ट ने कहा कि वाराणसी के डीएम सात दिन के अंदर पुजारी नियुक्त करेंगे, जिसके बाद व्यास परिवार पूजा-पाठ शुरू कर सकता है। इससे पहले, कोर्ट ने 17 जनवरी को व्यास जी के तहखाने का जिम्मा डीएम को सौंप दिया था। डीएम ने मुस्लिम पक्ष से तहखाने की चाबी अपने पास ले ली थी। डीएम की मौजूदगी में 24 जनवरी को व्यास तहखाने का ताला खोला गया था। वहीं, मुस्लिम पक्ष के वकील मेराजुद्दीन ने कहा कि फैसले के खिलाफ हाइकोर्ट जायेंगे। यह फैसला न्यायसंगत नहीं है।

मोदी सरकार आज पेश करेगी अंतरिम बजट

नयी दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अभिभाषण के साथ ही केंद्र का बजट सत्र बुधवार से शुरू हो गयी। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण आज देश का अंतरिम बजट पेश करेगी। चुंकी आने वाले कुछ महीने में चुनाव है, इसलिए अभी अंतरिम बजट पेश किया जा रहा है।

जो मोदी जी के साथ नहीं गया, वो जेल जायेगा: खड़गे

नयी दिल्ली। हेमंत सोरेन को इडी द्वारा हिरासत में लिये जाने के बाद कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि जो मोदी जी के साथ नहीं गया, वो जेल जायेगा। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया कि हेमंत सोरेन पर इडी लगाकर उनको मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र देने को मजबूर करना फेडरलिज्म की धज्जियां उड़ाना है। पीएमएलए के प्रावधानों को डोरकोनियन (कटोर) बनाकर विपक्ष के नेताओं को डराना-धमकाना, बीजेपी की टूल किट का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि षड्यंत्र के तहत एक-एक करके विपक्ष की सरकारों को अस्थिर करने का भाजपाई काम जारी है। बीजेपी की वॉशिंग मशीन में जो चला गया वो सफेदी की चमकार से साफ है, जो नहीं गया वो दागदार है?

इडी, सीबीआइ अब बीजेपी की विपक्ष मिटाओ सेल: राहुल

नयी दिल्ली। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी के बाद कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने बीजेपी पर हमला बोला है। राहुल ने सोशल मीजिया पर लिखा कि इडी, सीबीआइ, आइटी आदि अब सरकारी एजेंसियां नहीं रहीं। यह भाजपा की विपक्ष मिटाओ सेल बन चुकी हैं। खुद भ्रष्टाचार में डूबी भाजपा सत्ता की सनक में लोकतंत्र को तबाह करने का अभियान चला रही है।

...और जमीन के दलदल में फंस गये हेमंत सोरेन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। जमीन की खरीद-बिक्री मामले में प्रवर्तन निदेशालय हेमंत सोरेन से पूछताछ करना चाहती थी, लेकिन हेमंत सोरेन इडी कार्यालय जाने से बचते रहे। उन्हें डर था कि उनकी गिरफ्तारी हो सकती है। इडी की पूछताछ से बचने के लिए वह सुप्रीम कोर्ट से लेकर हाइकोर्ट तक पहुंचे। हालांकि न सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें कोई राहत दी, न हाइकोर्ट ने। बार-बार इडी की नोटिस पर सियासत भी खूब हुई। झारखंड से दिल्ली तक इसके लिए केंद्र सरकार को कोसा गया। आखिरकार हेमंत सोरेन ने इडी को मुख्यमंत्री आवास में आकर पूछताछ करने की अनुमति दी। सीएम की ओर से चिट्ठी मिलने के बाद 20 जनवरी 2024 को इडी की एक टीम काके रोड स्थित सीएम आवास पहुंची।

सात बार हेमंत सोरेन ने समन को किया इग्नोर

सीओ का बयान दर्ज करने के बाद मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को केंद्रीय जांच एजेंसी की ओर से समन किया गया। इडी ने हेमंत सोरेन से कहा कि वह रांची के जोनल ऑफिस में आकर अपनी संपत्ति का विवरण दें। हेमंत सोरेन ने इडी ऑफिस जाने से इनकार कर दिया। एक-दो बार नहीं, सात बार उन्होंने इडी के समन को इग्नोर किया। यहां तक कि एक बार इडी को चेतावनी तक दे डाली कि अगर सेंट्रल एजेंसी ने अपना नोटिस वापस नहीं लिया, तो वह इडी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई के लिए बाध्य हो जायेंगे। लेकिन, इडी की टीम भी अपने स्टैंड पर कायम रही।

8.50 एकड़ जमीन से जुड़ा है मामला : आखिर अवैध रूप से जमीन के दलदल में हेमंत सोरेन फंस गये। रांची के बड़गाईं अंचल के बरियातू इलाके में 8.50 एकड़ जमीन की खरीद-बिक्री से जुड़ा है। इस मामले की जब इडी ने जांच शुरू की, उसके कागजात खंगाले, तो इस जमीन से जुड़े कागजात राजस्व उप निरीक्षक भानु प्रताप प्रसाद के मोबाइल फोन से मिले। भानु प्रताप को कागजात की हेराफेरी करके जमीन बेचने के मामले में गिरफ्तार किया जा चुका है। मोबाइल फोन में मिले दस्तावेजों के आधार पर इडी ने जमीन की जांच शुरू की। गिरफ्तार राजस्व उप निरीक्षक और बड़गाईं अंचल के तत्कालीन अंचल अधिकारी का बयान भी इडी ने दर्ज किया।

इडी ने जमीन घोटाले में कब-कब जारी किया समन

- पहला समन- 8 अगस्त को भेजा गया। 14 अगस्त को हाजिर होने का था निर्देश।
- दूसरा समन- 19 अगस्त को भेजा गया। 24 अगस्त को हाजिर होने का निर्देश था।
- तीसरा समन- 1 सितंबर को भेजा गया, 9 सितंबर को हाजिर होने का था निर्देश।
- चौथा समन- 17 सितंबर को भेजा गया। 23 सितंबर को हाजिर होने का था निर्देश
- पांचवा समन- 26 सितंबर को भेजा गया, 4 अक्टूबर को हाजिर होने का निर्देश।
- छठा समन- 11 दिसंबर को भेजा गया, 12 दिसंबर को हाजिर होने का निर्देश।
- सातवां समन- 29 दिसंबर को भेजा गया, पूछताछ के लिए समय और जगह खुद तय करने को कहा।
- आठवां समन- 13 जनवरी को भेजा गया। 16-20 जनवरी तक बयान दर्ज कराने का समय दिया गया।
- पूछताछ-20 जनवरी को हुई सीएम से पहली बार पूछताछ।
- नौवां समन- 25 जनवरी को भेजा गया, पूछताछ के लिए 27 से 31 जनवरी के बीच का समय बताने को कहा। हेमंत सोरेन ने व्यस्त होने का दिया हवाला।
- दसवां समन- 27 जनवरी को भेजा गया। बयान दर्ज कराने के लिए 29 जनवरी से 31 जनवरी तक का समय निर्धारित करने को कहा। इस बीच 27 जनवरी की रात को ही दिल्ली निकल गये थे हेमंत सोरेन। 29 जनवरी की सुबह इडी की टीम हेमंत सोरेन के दिल्ली आवास पर पहुंची। इधर, सीएमओ ने इडी को इमेल भेजकर 31 जनवरी को सीएम आवास पूछताछ के लिए आने को कहा। 31 अक्टूबर को पूछताछ के बाद हेमंत सोरेन को गिरफ्तार कर लिया गया।

चंपई सोरेन होंगे नये मुख्यमंत्री, दावा पेश

- हेमंत ने सौपा इस्तीफा, चंपई के पक्ष में सर्मथन पत्र
- सत्ता पक्ष के विधायकों ने राज्यपाल को सौंपा पत्र
- केवल पांच विधायकों से मिले राधाकृष्णन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी के साथ ही राज्य में सियासी हलचल बढ़ गयी। उनकी गिरफ्तारी के पूर्व हेमंत सोरेन राजभवन पहुंचे। उन्होंने राज्यपाल को अपना इस्तीफा सौंपा। सत्ताधारी दल (कांग्रेस, झामुमो, राजद) के विधायक तीन बस में सवार होकर राजभवन पहुंचे थे। हालांकि राज्यपाल ने केवल पांच विधायकों से मुलाकात की। उन्होंने चंपई सोरेन को गठबंधन दल का नेता बनाने और उनके नेतृत्व में सरकार गठन का पत्र दिया। विधायकों ने तत्काल चंपई सोरेन को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाने की मांग की। हालांकि राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने मांग को नहीं स्वीकार किया और मामले पर जल्द फैसला लेने का आश्वासन दिया।

तीन बस में विधायक पहुंचे राजभवन: मुख्यमंत्री आवास से सत्ता पक्ष के विधायक तीन बस में सवार होकर रात 8.20 बजे राजभवन पहुंचे। उन्हें राजभवन के गेट पर ही रोक दिया गया। इस पर विधायकों ने नाराजगी जाहिर की। उन्होंने चंपई सोरेन को तत्काल मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाने की मांग की। राज्यपाल से मिलने पांच विधायक अंदर गये। उन्होंने चंपई सोरेन को समर्थन का पत्र सौंपा। राज्यपाल ने उन्हें विधिसम्मत कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। सूत्रों के मुतबिक राज्यपाल विधि और संविधान विशेषज्ञों से राय लेने के बाद कोई कदम उठायेंगे।

कौन हैं चंपई सोरेन

रांची (आजाद सिपाही) । सरायकेला-खरसावां जिला स्थित जिलिंगगोड़ा गांव निवासी आदिवासी सिमल सोरेन खेती किसानी किया करते थे। उनके चार बच्चों में बड़े बेटे का नाम चंपई सोरेन है। चंपई भी अपने पिता के साथ हाथ बंटाते थे। 10वीं क्लास तक सरकारी स्कूल से चंपई ने पढ़ाई लिखाई की। इस बीच उनका विवाह कम उम्र में ही मानको से कर दिया गया। शादी के बाद चंपई के चार बेटे और तीन बेटियां हुईं। इसी दौरान बिहार से अलग झारखंड राज्य की मांग उठने लगी। शिबू सोरेन के साथ ही चंपई भी झारखंड के आंदोलन में उतर गये। जल्द ही 'झारखंड टाइगर' के नाम से मशहूर भी हो गये। इसके बाद चंपई सोरेन ने अपनी सरायकेला सीट से उपचुनाव में निर्दलीय विधायक बन कर अपने राजनीतिक करियर का आगाज कर दिया। इसके बाद वह झारखंड मुक्ति मोर्चा में शामिल हो गये। चंपई सोरेन भाजपा की अर्जुन मुंडा की सरकार में झामुमो की तरफ से मंत्री बनाये गये। इसके बाद राष्ट्रपति शासन लग गया था। फिर हेमंत सोरेन की अगुवाई में बनी झामुमो की सरकार में चंपई सोरेन को खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, परिवहन मंत्री बनाया गया। दूसरी बार हेमंत सरकार बनी तो फिर 2019 में चंपई सोरेन को परिवहन, अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्री बनाया गया। वह वर्तमान में झामुमो के उपाध्यक्ष भी हैं।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
189200 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

सर्राफा
सोना (बिक्री) 59,300 रु./10 ग्राम
चांदी 76,000 रु./प्रति किलो

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 01 फरवरी, 2024
www.azadsipahi.in

मोदी की हैट्रिक का संकेत दे रही हैं जनवरी की तीन घटनाएं

■ अयोध्या में मंदिर के उद्घाटन ने पूरे देश में एक किस्म की लहर पैदा कर दी है

■ विपक्षी गठबंधन में हो रहे बिखराव से मजबूत हुई भाजपा की राजनीतिक जमीन

■ नीतीश कुमार की वापसी ने जातीय समीकरण को भाजपा के अनुकूल कर दिया

आजाद सिपाही विशेष

140 करोड़ की आबादी वाला देश भारत अब पूरी तरह चुनावी मोड में आ चुका है। राजनीतिक दलों और संगठनों के भीतर चुनावी तैयारियां जोर पकड़ चुकी हैं। समीकरण साधे जा रहे हैं और नेताओं-कार्यकर्ताओं की तरफ से टिकट हासिल करने की जद्दोजहद भी तेज होने लगी है। आम चुनाव से जुड़ीं इन तमाम राजनीतिक गतिविधियों के बीच आज देश के आम लोगों के बीच सबसे प्रमुख चर्चा इसी बात की हो रही है कि क्या इस बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा लगातार तीसरी बार देश की सत्ता हासिल कर सकेगी। भाजपा इसके लिए पूरा जोर लगा रही है, तो विपक्षी दल उसकी हैट्रिक को रोकने के लिए अपना सब कुछ झोंकने के लिए तैयार हो रहे हैं। इस बेहद जटिल राजनीतिक माहौल में छोटी से छोटी घटनाओं के राजनीतिक असर का आकलन किया जाना स्वाभाविक है। 2024 का पहला महीना खत्म हो रहा है और अब, जबकि चुनाव कुछ ही महीने दूर हैं, ऐसी घटनाओं का मूल्यांकन जरूरी हो जाता है। जनवरी महीने की तीन बड़ी घटनाएं बताती हैं कि दुनिया के सबसे लोकतंत्र का चुनावी माहौल इन घटनाओं से खासा प्रभावित होने वाला है। ये घटनाएं हैं अयोध्या में भव्य राम मंदिर का उद्घाटन, विपक्ष के इंडी अलायंस में बिखराव और नीतीश कुमार की एनडीए में वापसी। इन तीन घटनाओं से साफ संकेत मिल रहे हैं कि 2024 में पीएम मोदी के नेतृत्व में भाजपा की हैट्रिक का रास्ता लगभग साफ हो चुका है। अब इस पर केवल मुहर बाकी है। क्या हो सकता है इन घटनाओं का राजनीतिक असर, बता रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।

राकेश सिंह

दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में भले ही लोकसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान नहीं हुआ है, लेकिन भारत में इसके पहले ही सियासी सरगर्मी तेज हो चुकी है। चूंकि आम चुनाव अब कुछ ही महीने दूर है, 2024 राजनीतिक दृष्टि से बहुत संवेदनशील है। इस साल का पहला महीना ही सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक घटनाओं से भरा हुआ रहा। साल के पहले महीने में ही घटी इन घटनाओं ने देश के राजनीतिक माहौल को और भी चार्ज कर दिया है। अब देश में यही चर्चा हो रही है कि क्या इन घटनाओं ने देश की सत्ता पर भाजपा की लगातार तीसरी बार कब्जे का रास्ता साफ कर दिया है। इसका उत्तर सकारात्मक ही है, क्योंकि पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा काफी उत्साहित नजर आने लगी है।

पिछले सप्ताह बिहार की सियासत ने एक बार फिर करवट बदली और जदयू महागठबंधन को छोड़कर एनडीए में शामिल हो गया। नीतीश कुमार ने नौवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। इसके साथ ही भाजपा ने कहा है कि आगामी लोकसभा में एनडीए बिहार की सभी 40 सीटों पर जीत दर्ज करेगा। इससे पहले सियासी जानकार इंडी गठबंधन के अगुआ नीतीश कुमार को बिहार में भाजपा के लिए चुनौती मान रहे थे। हालांकि ताजा घटनाक्रम से सारे समीकरण बदल चुके हैं। एक ओर जहां राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद भाजपा अपने चुनावी प्रचार को धार देने में जुट गयी है, तो वहीं दूसरी ओर घटक दलों के अलग होने के साथ इंडी गठबंधन भी कमजोर होता जा रहा है। इन तीन अनुकूल घटनाओं के बाद यह सवाल उठता है कि भाजपा ने अपने चुनाव अभियान को कैसे शुरू किया है। बिहार में नीतीश के पाला बदलने से क्या बदलेगा और हालिया घटनाक्रमों के बाद भाजपा के सामने विपक्षी गठबंधन की कितनी चुनौती है।

अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा

22 जनवरी को अयोध्या में भव्य राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हुई। मुख्य जजमान के रूप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस धार्मिक अनुष्ठान को पूरा किया। इस कार्यक्रम के दौरान देश-विदेश से करीब आठ हजार विशेष मेहमानों की भी उपस्थिति रही। इस भव्य कार्यक्रम में शामिल होने के लिए कांग्रेस समेत विपक्षी गठबंधन के कई दलों को न्योता मिला था, लेकिन उन्होंने इसे ठुकरा दिया था। शुरुआत से ही भाजपा ने इस मुद्दे को पुरजोर तरीके से उठाया। भाजपा के तमाम बड़े नेताओं ने दावा किया कि कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का न्योता ठुकरा कर हिंदू धर्म की आस्था का अपमान किया है। इसके साथ ही पार्टी ने कांग्रेस को हिंदू विरोधी करार दिया और दावा कि कांग्रेस तो शुरुआत से भगवान श्रीराम के अस्तित्व पर सवाल उठाती रही है।

लोकसभा चुनाव के लिए जारी थीम सांग में राम मंदिर

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के दो दिन बाद ही भाजपा ने 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए अपने अभियान का थीम सांग लांच किया। भाजपा का प्रचार अभियान 'सपने नहीं हकीकत बुनते हैं, तभी तो सब मोदी को चुनते हैं' थीम पर आधारित है। यह थीम सांग फर्स्ट टाइम वोटर्स कॉनक्लेव में लांच किया गया। दो मिनट 12 सेकंड के वीडियो में पीएम मोदी के कार्यकाल में हुए कामों को दर्शाया गया है। पार्टी ने दावा किया कि वीडियो में दिखाया गया कि कैसे प्रधानमंत्री मोदी ने करोड़ों भारतीयों के सपनों और आकांक्षाओं को वास्तविकता में बदल दिया है। वीडियो में स्टार्टअप अर्थतंत्र, उद्यमशीलता, रोजगार, किसानी, महिला भागीदारी और कम होती गरीबी जैसे मुद्दों को दिखाया गया है। इसके अलावा पिछले कुछ समय में देश को मिली सफलताओं पर फोकस किया गया है, जिसमें चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग, जी-20 का सफल आयोजन, खेलों में देश का अच्छा प्रदर्शन आदि शामिल है। दिलचस्प है कि वीडियो के अंत में प्रधानमंत्री को अयोध्या में नवनिर्मित मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा करते हुए दिखाया गया है।

बुलंदशहर से चुनावी आगाज में रामलला

25 जनवरी को ही पीएम मोदी ने लोकसभा चुनावों की तैयारी का बिगुल फूंक दिया। पीएम ने उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनावों की तैयारी का आगाज बुलंदशहर से किया। इसे संयोग माना जाये या रणनीति, लेकिन ठीक 10 साल पहले 2014 के लोकसभा के चुनावों में भी प्रधानमंत्री ने लोकसभा चुनावों का सियासी बिगुल उत्तर प्रदेश में बुलंदशहर से ही फूंका था। अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने बुलंदशहर से प्रदेश को अरबों रुपयों की बड़ी सौगातें भी दीं। अपने संबोधन में पीएम ने कई बार राम मंदिर या रामलला का जिक्र किया। जानकार कहते हैं कि प्रधानमंत्री मोदी का बुलंदशहर से चुनाव अभियान की शुरुआत करना और प्रदेश को अरबों की सौगात देना महज सामान्य प्रक्रिया का हिस्सा नहीं है। प्रधानमंत्री ने 2014 में यहीं से लोकसभा चुनाव की रैलियों का सियासी आगाज किया था। उसके बाद उत्तर प्रदेश में भाजपा को बंपर सफलता मिली थी और केंद्र में भाजपा की सरकार बनी थी।

इंडिया गठबंधन से दूरी बनाते दल

करीब छह महीने पहले देश के कुछ प्रमुख विपक्षी दलों ने इंडी गठबंधन की स्थापना की थी। इसका सबसे बड़ा उद्देश्य आगामी लोकसभा में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए के खिलाफ एकजुट होकर लड़ना था। हालांकि यह गठबंधन चुनाव से पहले बिखरता हुआ नजर आ रहा है। लोकसभा चुनावों के लिए सीट बंटवारे को लेकर गठबंधन के सहयोगी दलों के बीच मतभेद देखने को मिल रहा है। यही कारण है कि 24 जनवरी को ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल में टीएमसी के अकेले चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया। उसी दिन पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान का बयान भी आया, जिसमें उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी पंजाब में सभी 13 सीटों पर उम्मीदवार उतारेगी।

गठबंधन की पहल करने वाले नीतीश ने दिया बड़ा झटका

29 जनवरी को इंडी समूह को एक बड़ा झटका लगा, जब इसके अगुवा नीतीश कुमार फिर से एनडीए में शामिल हो गये। जदयू प्रमुख नीतीश कुमार ने बिहार में चल रही महागठबंधन सरकार को भंग कर दिया और भाजपा के साथ चले गये। इस दौरान जदयू ने इंडी गठबंधन को भी आड़े हाथों लिया। जदयू नेता केसी त्यागी ने कहा, 'हमें अफसोस है कि हमने कांग्रेस पार्टी को देश की राजनीति में स्वीकार्यता दिला/१> यह पार्टी राजनीति में अछूत हो चुकी थी। टीएमसी, आप, सपा आदि सभी पार्टियों ने गैर भाजपा, गैर कांग्रेस मोर्चे की कोशिश की थी। यह सिर्फ नीतीश कुमार थे, जिनकी वजह से इंडी गठबंधन बना और कांग्रेस को फिर से राजनीति में स्थापित करने और सम्मान दिलाने का काम हमने किया।' वहीं नीतीश कुमार के शपथ ग्रहण समारोह में पटना पहुंचे भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा कि नीतीश कुमार एनडीए में लौट आये हैं, यह उनके लिए खुशी की बात है। जेपी नड्डा ने दावा किया कि पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए लोकसभा चुनाव 2024 में जीत हासिल करेगा और सरकार बनायेगा।

हाल के घटनाक्रमों के बाद भाजपा के सामने विपक्षी गठबंधन की कितनी चुनौती है, इस विषय पर जानकारों को लगता है कि विपक्ष को जोड़ने के लिए जिस तरह की पहल करनी चाहिए थी, कांग्रेस उसमें चूक गयी है। यूपी में 80 सीटें आती हैं। वहां कांग्रेस और सपा को मायावती को अपने साथ जोड़ना चाहिए था। इसी तरह बंगाल और महाराष्ट्र में भी होना चाहिए था। इसका खामियाजा विपक्ष को लोकसभा चुनाव में भुगतना पड़ेगा। बड़े राज्यों में विपक्षी एकता का परसेप्शन पूरी तरह से धराशायी हो गया है। ऐसे में यह गठबंधन लोकसभा चुनाव में बहुत प्रभावी नहीं रहेगा। जानकारों की मानें, तो इन घटनाओं से जहां भाजपा की स्थिति अनुकूल हुई है, वहीं विपक्ष को अपनी रणनीति पर एक बार फिर से विचार करने की जरूरत आ पड़ी है।

सशक्त भारत के लिए सशक्त भाजपा आज समय की मांग: बाबूलाल मरांडी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा नव गठित ज्वाइनिंग कमेटी की बैठक प्रदेश कार्यालय में बुधवार को पार्टी की हुई। इसमें प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि प्रधानमंत्री ने सबका साथ, सबका विकास का संकल्प सबके प्रयास और सबके विश्वास के साथ पूरा करने का निश्चय किया है, जिसे लगातार धरातल पर उतारा जा रहा।

उन्होंने कहा कि हमें सबके बीच जाना है और सबको भाजपा में लाना है। सशक्त भारत के लिए सशक्त भाजपा आज युग की मांग है। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर भारत, स्वाभिमानी भारत, विकसित भारत के निर्माण में भाजपा देश में हर घर भाजपा के संकल्प को सिद्धि में बदलना चाहती है।

सर्वव्यापी भाजपा पार्टी का संकल्प: कर्मवीर

प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने कहा कि भाजपा कोई परिवार की पार्टी नहीं। यह राष्ट्रीय विचार से परिपूर्ण पार्टी है। विकसित भारत, विश्व गुरु भारत का निर्माण पार्टी का संकल्प है। उन्होंने कहा यह सबके सहयोग से ही पूरा किया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि हम सर्वव्यापी, सर्वस्पर्शी, सर्वसमावेशी भाजपा के लिए संकल्पित हैं। उन्होंने कहा कि ज्वाइनिंग कमेटी को इस सोच के साथ लोगों को भाजपा से जोड़ने की दिशा में पहल करनी चाहिए। समाज का कोई वर्ग छूटे नहीं।

इनकी रही मौजूदगी : बैठक में प्रदेश संयोजक डॉ रविंद्र कुमार राय, विधायक बिरंची नारायण, ढुल्लू महतो, गिरिनाथ सिंह, गणेश तिवारी सहित जिलों के संयोजक और सह संयोजक उपस्थित थे।

नेतरहाट आवासीय विद्यालय में बापू की प्रतिमा का अनावरण

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। नेतरहाट आवासीय विद्यालय कार्यकारिणी समिति के सभापति संतोष उरांव और प्राचार्य डॉ प्रसाद पासवान के द्वारा संयुक्त रूप विद्यालय प्रांगण मे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा का लोकार्पण किया गया। इसके बाद सभापति संतोष उरांव ने बताया कि विद्यालय की स्थापना के मूलभूत उद्देश्यों में महात्मा गांधी के विचारों को ही मुख्य रूप प्राथमिकता दी गयी थी। उनकी प्रतिमा को स्थापित करना ही उनके प्रति सच्ची श्रधांजलि है। डॉ प्रसाद पासवान ने बताया कि विद्यालय में राष्ट्रपिता की प्रतिमा को स्थापित करने से बच्चों को उनके विचारों को आत्मसात करने में सहायता मिलेगी।

जेएसएलपीएस: 1500 पदों पर जल्द होगी बहाली, प्रक्रिया पूरी करने का रास्ता साफ

रांची (आजाद सिपाही)। जेएसएलपीएस में 1500 अधिकारी-कर्मियों की नियुक्ति का रास्ता साफ हो गया है। लगभग दो साल से अधिक समय से अटकी इन नियुक्तियों को करने के लिए राज्य सरकार के शासी निकाय ने मंजूरी प्रदान कर दी है। डीपीएम, पीएम, सीसी, बीपीएम सहित कई पदों पर अब नियुक्ति प्रक्रिया पूरी की जा सकेगी। मिली जानकारी के अनुसार इन पदों पर जेएसएलपीएस ने नियुक्ति के लिए दो साल पहले विज्ञापन जारी किया था, इसकी लिखित परीक्षा भी हो गयी थी। बीच में सरकार के द्वारा सारी नियुक्ति प्रक्रिया पर रोक के बाद यह भी लटक गया था। हालांकि जिनकी परीक्षा ली गयी थी उसका रिजल्ट अब आ गया है। ऐसे में सरकार से मंजूरी लेकर इन पदों पर बहाली के ग्रुप डिस्कशन सहित अन्य प्रक्रिया पूरी कर योग्य अधिकारी और कर्मियों की नियुक्ति की जायेगी। ये नियुक्तियां कलस्टर से लेकर राज्य स्तर तक की जानी है।

---

10 जिलों के 121 महत्वपूर्ण स्थल पर्यटक स्थल घोषित

रांची का बड़ा तालाब भी बना पर्यटक स्थल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्य सरकार ने 10 जिलों के 121 पर्यटक महत्व के स्थलों को पर्यटक स्थल और प्रक्षेत्र के रूप में घोषित किया है। रांची में बड़ा तालाब सहित देवधर, दुमका सहित अन्य जिलों के प्रमुख पर्यटक महत्व वाले स्थलों को चिंहित करते हुए डी श्रेणी दी गयी है। पर्यटन विभाग अब इन्हें विकसित करने की कार्रवाई प्रारंभ करेगा। राशि भी मुहैया करायी जायेगी। इस संबंध में पर्यटन विभाग ने अधिसूचना जारी कर दी है।दुमका जिलाः मडपानाथ मंदिर, संथालकाटा पोखर, केशरी सूर्य मंदिर जरमुंडी, बासुकीनाथ तारा मंदिर, पांडेश्वरनाथ मंदिर जरमुंडी, बेलदाहानाग मंदिर जरमुंडी।

पलामू–दंगवार सूर्य मंदिर, सेमरी पंचायत में द्वारपाल, चियांकी पार्क, नौडीहा बाजार अंतर्गत ग्राम चोडंडा में स्थित सूर्य मंदिर।

सिमडेगा–अलसंगा नंदी बाबाधाम, शारदा धाम, सुग्गाकाटा, कोयल नदी जलप्रपात डाडिंगदोह, कुंश टोंगरी, हजरत सैयद सुफी शाह कयामुद्दीन अंजान शाह पीरवाबा दरगाह।

चतरा–लेंबोड़या मंदिर, भवानी मठ, जोरी काली मंदिर, दासी पहाड़ी, मालुदाह फॉल, डुमेर-सुमेर।

साहेबगंज– बड़ा तालाब बरहेट।

बोकारो–बनासो मंदिर, कोनार डैम, बुढ़ा बाबा धाम मेला, भवानी के नजदीक प्राकृतिक गुफा नवाडीह, चेचका धाम चास, गरगा डैम, रामलखन टुगरी, दुर्गा पहाड़।

देवघर– दुखिया मंदिर, तुतरा पहाड़ी, डकायूट मंदिर, ताराजोरा, जय माता मंदिर, बंदा जारी दुबेबाबा मंदिर, दुबेबाबा मंदिर पहरीडीह, पावेश्वर मंदिर, मकरा पहाड़, बाबादुबे मंदिर सरकारी पंचायत, शिव मंदिर कुशमाहा, बाबा शरेवशनाथ धाम, दुर्गा धाम, सूर्यधाम देवी, अहरा बाबाधाम बारवा, कौशलडीह भागवती धाम, नाढ़सिमर काली धाम दरंगा, रामसाग गोरीशंकर धाम, दुबेधाम बेहरन, बाबुपुर काली मंदिर, मजार बांकछीट, झालर शिव मंदिर मोहनपुर, सुरंगी पहाड़ी मोहनपुर, हरलाजोरी मंदिर, पौराणिक भागवती मंदिर गिधनी, छठघाट कुरैवा, छठघाट बेंगी, शिवमंदिर सिमरा, काली मंदिर सरसा, चोलेश्वरनाथ महादेव मंदिर, शीतलधाम खिरौंधा, नाग बाबानाथ धाम पालाजोरी, फुलजोरी पहाड़ पालाजोरी, हनुमान धाम, सुभाषचंद्र बोस स्मारक स्थल करौं, रामेश्वर शिव मंदिर रानीडीह, शिवधाम बसकुपी, बाबादुबे मंदिर टेकरा, रामेश्वर शिवधाम, पथरड्डा पहाड़ सारठ, दुर्गामंदिर पिपरासोल, रामदरबार धाम मधुपुर, शीतला धाम मधुपुर, बाबा शिवधाम पहाड़ी, फुलजोरी पहाड़, कसैसा तालाब पर छठ घाट का निर्माण, नेताजी सुभाषचंद्र बोस स्मृति भवन।

सरायकेला–शिव मंदिर रामगढ़, उड़ीबाबा शिव मंदिर, सोना झारना, काली मंदिर पारडीह। तिल्लापाट मंदिर नीमडीह, झरीडीह हदहदी झरना, चाडरी पार्क बीरबांस, डुडरा शिवमंदिर, राजगांव का पाड़री मंदिर, तिल्ला पाट मंदिर नीमडीह।

गढ़वा– मुकुंदपुर में नारायण वन, सिलिदाग मेंचा, जिरूआ बांध।

रांची–बड़ा तालाब।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
189200 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
1 Channel
Subscribe NOW

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	27.5 ℃	11.6 ℃
सूर्यास्त (आज)	:	17.34 बजे
सूर्योदय (कल)	:	06.30 बजे

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 01 फरवरी, 2024
www.azadsipahi.in

जेएसएससी : विरोध कर रहे अभ्यर्थियों का फूटा गुस्सा

अध्यक्ष की गाड़ी तोड़ी, लाठीचार्ज

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। जेएसएससी सीजीएल की परीक्षा के प्रश्न पत्र वायरल होने के बाद से छात्रों में आक्रोश है। अभ्यर्थी जेएसएसएससी कार्यालय के बाहर धरना प्रदर्शन कर रहे थे। इस दौरान इतने उग्र हो गये कि अध्यक्ष की गाड़ी को क्षतिग्रस्त कर दिया, जिसके बाद पुलिस ने लाठीचार्ज किया। इस लाठी चार्ज में दो छात्रों को चोटें आयी हैं।

जानकारी के अनुसार अभ्यर्थी कार्यालय का गेट खोलने का प्रयास कर रहे थे। पुलिस-प्रशासन ने अभ्यर्थियों को काफी समझाने की कोशिश की, लेकिन वे सुनने के लिए तैयार नहीं थे। इसके बाद छात्रों को काबू पाने के लिए लाठीचार्ज किया गया। इसके बाद छात्र उग्र हो गये और गेट खोलकर कार्यालय के अंदर घुस गये। इसी बीच अध्यक्ष नीरज सिन्हा की गाड़ी कार्यालय के अंदर घुसी। उनकी गाड़ी को देखकर अभ्यर्थी उग्र हो गये और गाड़ी को रोक दिया। इस बीच काफी धक्का.मुक्की भी हुई। उनकी गाड़ी का कांच तोड़ दिया।

सामान्य ज्ञान के प्रश्न पत्र हुआ था लीक : बीते 28 जनवरी को जेएसएससी सीजीएल की परीक्षा हुई थी, लेकिन इस परीक्षा के सामान्य अध्ययन के प्रश्न पत्र सोशल मीडिया पर लीक हो गया था। कुछ प्रश्नों के उत्तर वाट्सएप पर परीक्षा से पहले ही वायरल हो रहे थे। इसके बाद जेएसएसएससी ने सामान्य ज्ञान की परीक्षा को रद्द करने का नोटिफिकेशन जारी किया। पेपर कैंसिल होने से गुस्साये अभ्यर्थी नामकुम स्थित कार्यालय पहुंचकर विरोध-प्रदर्शन कर रहे थे।

पत्रकारों के साथ मारपीट, पहुंचे एसपी : जेएसएससी सीजीएल की परीक्षा रद्द कराने की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे अभ्यर्थी लाठीचार्ज के बाद उग्र हो गये। नाराज अभ्यर्थियों ने मौके पर मौजूद पत्रकारों को भी नहीं छोड़ा।

4 को होनेवाली जेएसएससी सीजीएल परीक्षा स्थगित

रांची (आजाद सिपाही)। प्रश्नपत्र लीक मामले में झारखंड कर्मचारी चयन आयोग ने झारखंड सामान्य स्नातक योग्यताधारी संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा 2023 के तीनों पालियों में ली गयी परीक्षा को रद्द कर दिया है। इस संबंध में आयोग की ओर से सूचना भी जारी कर दी गयी है। पूर्व में 28 जनवरी को ही प्रश्नपत्र लीक होने की गंभीरता को देखते हुए आयोग ने तृतीय पाली की परीक्षा को रद्द किया था। अब 28 जनवरी 2024 को आयोजित परीक्षा की प्रथम और द्वितीय पाली को भी रद्द कर दिया है। आयोग के परीक्षा नियंत्रक ने इस संबंध में कहा कि जल्द ही परीक्षाओं का फिर से आयोजन किया जायेगा। नये सिरे से परीक्षा की तिथि चार फरवरी को जारी की जायेगी। वहीं 4 फरवरी 2024 को होने वाली परीक्षा को भी स्थगित कर दिया गया है।

जेएसएससी चेयरमैन, सदस्यों और एजेंसी पर हो एफआइआर : बाबूलाल

रांची। सरकार दोषी के ऊपर कार्रवाई न कर, निर्दोष छात्रों के ऊपर लाठी बरसा रही है। छात्रों के ऊपर किये गये लाठी चार्ज की घटना की निंदा करते हुए प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि जेएसएसएससी की परीक्षा से पहले प्रश्न पत्र लीक होने के बाद छात्रों द्वारा विरोध प्रदर्शन के दौरान पुलिस द्वारा बुरी तरह से लाठी चार्ज करना युवाओं की आवाज को दबाना है। उन्होंने कहा कि निर्दोष छात्रों को बुरी तरह पीटा गया, जबकि इस प्रकरण में पूरी तरह से दोषी सरकार, जेएसएसएससी एवं एजेंसी है। उन्होंने कहा कि जेएसएसएससी के चेयरमैन, सदस्यों एवं एजेंसी के ऊपर एफआइआर होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि घायल छात्रों का उचित इलाज करवाया जाये।

हेमंत सोरेन ने इडी के खिलाफ एससी एसटी थाने में दर्ज करायी प्राथमिकी

दिल्ली में छापेमारी को लेकर इडी के अधिकारियों पर प्राथमिकी दर्ज

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। दिल्ली में छापेमारी को लेकर हेमंत सोरेन ने प्राथमिकी दर्ज करायी है। राजधानी रांची के एससी-एसटी थाना में इडी के अधिकारियों के विरुद्ध यह प्राथमिकी दर्ज करायी है। हेमंत के आवेदन पर यह प्राथमिकी दर्ज की गयी है। हेमंत का आरोप है कि उनकी गैरमौजूदगी में दिल्ली स्थित आवास पर छापेमारी करने और कर्मचारियों से दुर्व्यवहार किया गया। बताते चलें कि बीते 29 जनवरी को हेमंत सोरेन के दिल्ली स्थित आवास पर इडी ने छापेमारी की थी। छापेमारी में बीएमडब्ल्यू कार, 35 लाख रुपये सहित कई अहम दस्तावेज जब्त किये थे। ज्वाइंट डायरेक्टर कपिल राज, देवव्रत झा, अनुपम कुमार, अमन पटेल और अज्ञात पर यह प्राथमिकी दर्ज की गयी है। एफआइआर में बताया गया है कि 30 जनवरी को मीडिया के माध्यम से कार्रवाई की जानकारी मिली कि नयी दिल्ली स्थित शांति निकेतन में सर्च ऑपरेशन चलाया गया। सीएम का आरोप है कि मुझे परेशान और बदनाम करने के लिए यह कार्रवाई की जा रही है। इडी के अधिकारियों ने दिल्ली स्थित आवास में बिना सूचना के छापेमारी की। इडी के अधिकारी ने मुझे 29 और 31 जनवरी को रांची में उपस्थित रहने के लिए कहा था। जानबूझ कर मीडिया के माध्यम से अपमानित किया जा रहा है।

हेमंत सोरेन की एफआइआर फर्जी पुलिस जांच करे : बाबूलाल मरांडी

एफआइआर में हेमंत ने अपने आपको साहेबगंज विधानसभा का विधायक बताया, जबकि वो बरहेट से हैं विधायक

साहिबागंज नाम से कोई विधानसभा क्षेत्र राज्य में नहीं

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने एसटी-एससी थाना ने तथाकथिक एफआइआर पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि इडी के कुछ अफसरों के ऊपर एसटी एससी एक्ट के तहत एसटी एससी थाना में एफआइआर दर्ज किया है। कहा कि हेमंत सोरेन इतना डरे हुए हैं कि अपना सुध बुध भी खो चुके हैं और जो उनके लिए काम कर रहे हैं, वे भी अपना सुध बुध खो चुके हैं।

एफआइआर की प्रथम पंक्ति में ही गलतियां हैं। एफआइआर के अनुसार हेमंत सोरेन अपने आप को साहेबगंज विधानसभा क्षेत्र का विधायक बता रहे हैं, लेकिन झारखंड में साहेबगंज नाम का कोई विधानसभा क्षेत्र नहीं है। कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि एफआइआर ही फर्जी है। क्योंकि हेमंत सोरेन को अपना विधानसभा बरहेट के जगह साहेबगंज बताना, एफआइआर की फर्जीवाड़ा को बताता है। उन्होंने कहा कि एफआइआर पूरी तरह से फर्जीवाड़ा है। कहा कि डीजीपी एवं पुलिस अधिकारी इस एफआइआर की सत्यता की जांच करें। सचमुच में हेमंत सोरेन ने एफआइआर किया है या उनके नाम से किसी ने एफआइआर किया है। कहा कि उनके यहां फर्जीवाड़ा का पहले भी रिकॉर्ड रहा है। मुझे स्मरण है शिबू सोरेन के समय एक बार 2-3 लोगों को एक जगह टिकट दिया गया और चुनाव लड़ गये थे। बाद में बोला गया कि फॉर्म में फर्जी हस्ताक्षर किया गया था।

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

मेष सुख-सुविधा के साधन बनेंगे। आर्थिक लाभ.व्यापारिक यात्रा लाभप्रद सिद्ध होगी।

वृष कर्मक्षेत्र में अनुकूल वातावरण, सोचा हुआ काम पूरा होगा, मान-यश-प्रतिष्ठा-उपहार-पुरस्कार की प्राप्ति।

मिथुन प्रभावशाली व्यक्तियों से वांछित सहयोग मिलेगा। मन प्रसन्न रहेगा। सद्भावनाएं एवं शुभ संदेश प्राप्त होगा।

कर्क विद्या-बुद्धि-प्रतिभा का विकाश होगा, परीक्षा-प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी।

सिंह कठिन परिश्रम-प्रयास से आजीविका के क्षेत्र में सफलता, आत्मबल एवं कर्मबल में वृद्धि होगी।

कन्या नौकरी-व्यापार की स्थिति में सुधार, नई आशाओं का उदय होगा, धैर्य व साहस से सभी कार्य पूरे होंगे।

तुला परिस्थितियों में सुधार,नौकरी में बदलाव होने की संभावना,विविध समस्याओं का समाधान।

वृश्चिक स्वास्थ्य में सतर्कता आवश्यक है, राजनीतिक सम्पर्क प्रभाव बढ़ेगा, चिन्तित मनोरथ की सिद्धि होगी।

धनु रुके कामों में प्रगति, सामाजिक-राजनीतिक व्यक्तियों के लिए कुछ कर दिखाने का पर्याप्त अवसर मिलेगा।

मकर आजीविका संबंधी चिंता दूर होगी, साहसिक कार्य में सफलता,संतान पक्ष से शुभ समाचार की प्राप्ति।

कुंभ लाभकारी प्रयास सफल होगा, स्वजन-मित्रों का सहयोग, स्वाभिमान और स्वावलम्बन बढ़ेगा।

मीन चिन्तनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी, पश्चिम का फल मिलेगा, कर्मक्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य करने का अवसर मिलेगा।

मैनेजमेंट में लगे हैं हेमंत : निशिकांत

रांची (आजाद सिपाही)। निशिकांत दुबे के मुताबिक सीएम हेमंत इडी की पूछताछ से बचने को तमाम कोशिशें कर चुके हैं। सोशल मीडिया के जरिये कहा है कि सूत्रों के अनुसार इडी की पूछताछ से बचने के लिए झारखंड हाइकोर्ट के जजों को दबाव दे रहे हैं। उन्हें डराने और मैनेजमेंट का प्रयास मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन करते रहे। निशिकांत दुबे ने सीएम से कहा है कि यह न्यायपालिका है, कानून का राज है। सीधे प्रश्नों का जवाब दीजिए।

मुख्यमंत्री से पूछताछ के दौरान शहर में सुरक्षा के कड़े इंतजाम

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। प्रवर्तन निदेशालय (इडी) हेमंत सोरेन से बुधवार को मुख्यमंत्री आवास में पूछताछ की। इस दौरान राजभवन, इडी कार्यालय और मुख्यमंत्री आवास पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किये गये थे। उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा, एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा, सिटी एसपी राजकुमार मेहता और ग्रामीण एसपी मनीष टोप्पो सहित अन्य अधिकारी लगातार पल-पल की मॉनिटरिंग करते दिखे। राजभवन, इडी कार्यालय और मुख्यमंत्री आवास के पास धारा 144 लागू है। हर चौक चौराहों पर पुलिस बल की तैनाती की गयी थी। मुख्यमंत्री आवास के सभी वाटर कैनन और वज्र वाहन मौजूद दिखा। कार्यकर्ताओं के विरोध-प्रदर्शन की आशंका के मद्देनजर मुख्यमंत्री आवास की ओर आने और जाने वाले दोनों रास्तों को बैरिकेडिंग कर रोक दिया गया था। सुरक्षा को लेकर लगभग दो हजार जवान और 18 डीएसपी को अलग से प्रतिनियुक्त किये गये है।

इडी के अनुरोध पर विधि-व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए राज्य गृह विभाग ने आदेश जारी किया है। वित्त विभाग के सचिव प्रशांत कुमार नेतृत्व में आइएएस अरवा राजकमल, आइजी प्रभात कुमार, आइएएस प्रशांत कुमार स्थिति पर नजर बनाये हुए थे।

पारंपरिक हथियार और ढोल-मांदर के साथ पहुंचे जेएमएम कार्यकर्ता

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झामुमो कार्यकर्ता सीएम के समर्थन में रांची के मोरहाबादी मैदान में बुधवार को जुटे। हेमंत सोरेन के समर्थन में नारा लगा रहे थे। ढोल-मांदर बजा रहे थे। कार्यकर्ताओं के साथ पूर्व मंत्री जगरनाथ महतो के पुत्र मिथलेश महतो भी मोरहाबादी मैदान पहुंचे। कार्यकर्ता अपने हाथ में झारखंड का पारंपरिक हथियार तीर-धनुष लेकर प्रदर्शन कर रहे थे। भाजपा और इडी के खिलाफ नारा लगा रहे थे। पहले भी रांची **पहुंचे थे सैकड़ों कार्यकर्ता :** इससे पहले जब इडी की टीम सीएम से पूछताछ करने सीएम हेमंत सोरेन से आवास पहुंची थी। उस दौरान भी सैकड़ों कार्यकर्ता सीएम आवास के पास पहुंचे थे। उस दौरान कार्यकर्ता अपने पास तीर-धनुष साथ लेकर पहुंचे थे।

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

हेमन्त सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड

अपील

वार्षिक माध्यमिक / इन्टरमीडिएट परीक्षा, 2024

विदित हो कि **वार्षिक माध्यमिक एवं इन्टरमीडिएट परीक्षा दिनांक 06 फरवरी 2024** से प्रारम्भ हो रही है। परीक्षा के सुचारू रूप से संचालन के लिए सभी परीक्षार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, आम नागरिकों एवं परीक्षा कार्य में संलग्न सभी कर्मियों / पदाधिकारियों का पूर्ण सहयोग अपेक्षित है।

राज्य सरकार शिक्षा में गुणात्मक सुधार तथा मानव संसाधन विकास हेतु कटिबद्ध है। इसके लिए आवश्यक है कि **संपूर्ण राज्य में परीक्षाओं का संचालन पूर्णतः शांतिपूर्ण वातावरण में कदाचार मुक्त तरीके से सम्पन्न हो।** झारखण्ड अधिविद्य परिषद द्वारा जिला प्रशासन के सहयोग से समुचित व्यवस्थाएँ की गयी है। कदाचार मुक्त वातावरण में परीक्षाओं का संचालन, समय पर परीक्षाफल का प्रकाशन तथा शिक्षा को सर्वसुलभ बनाना सरकार की प्राथमिकता है। राज्य सरकार द्वारा कदाचार मुक्त परीक्षा संचालन हेतु सभी संबद्ध व्यक्तियों को आवश्यक निर्देश दिये गए हैं, साथ ही उनसे अपेक्षा है कि वे वांछित कार्यों का सम्पादन निष्ठापूर्वक करेंगे। झारखण्ड सरकार स्वच्छ एवं कदाचार मुक्त परीक्षा सम्पन्न कराने के लिए दृढ़ संकल्पित है, इस दिशा में इस बार भी सभी जिला के परीक्षा केन्द्रों पर आवश्यकतानुसार सी.सी.टी.वी. कैमरा अधिष्ठापित किया गया है ताकि परीक्षा में पारदर्शिता कायम रह सके। किसी भी स्तर पर कदाचार करने अथवा कराने वालों एवं निर्धारित दायित्वों का निर्वहन नहीं करनेवाले कर्मियों के विरूद्ध **झारखण्ड परीक्षा संचालन अधिनियम,** 2001 के तहत सख्त कानूनी कार्रवाई की जायेगी।

इस अवसर पर जनहित एवं राज्यहित में सभी परीक्षार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं आम नागरिकों से अपील है कि वे नि:स्वार्थ भाव से परीक्षा की पवित्रता के साथ–साथ झारखण्ड की गरिमा बनाये रखने तथा बच्चों के उज्जवल भविष्य के निर्माण के लिये कदाचार मुक्त परीक्षा एवं मूल्यांकन कार्य के सफल संचालन में ईमानदारी एवं निष्ठा से सहयोग करें।

आएँ झारखण्ड को हम सब मिलकर बनायें
ज्ञान आधारित एवं अनुशासन प्रिय प्रदेश

हेमन्त सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री
झारखण्ड

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 01 फरवरी, 2024
www.azadsipahi.in
04

हाइकोर्ट में अपील दायर कर सरकार ने एकल पीठ के आदेश को दी चुनौती

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्य सरकार ने झारखंड हाइकोर्ट की खंडपीठ में एलपीए दायर कर एकल पीठ के आदेश को चुनौती दी है। हाइकोर्ट की एकल पीठ ने चार जनवरी को तीन सप्ताह में झारखंड में निकाय चुनाव की अधिसूचना जारी करने के आदेश दिये थे।

अपील में राज्य सरकार की ओर से कहा गया है कि पिछड़ा आयोग को ही डेडिकेटेड कमीशन के रूप में नियुक्त कर दिया गया है। यह राज्य के जिलों में ओबीसी की आबादी का आकलन करेगी और इस संबंध में डाटा राज्य सरकार को उपलब्ध करायेगी। इसके आधार पर निकाय चुनाव में वार्डों में ओबीसी के लिए आरक्षण दिया जायेगा। इसलिए निकाय चुनाव पूरा करने के लिए समय दिया जाये।

राज्य सरकार ने एकल पीठ के आदेश पर तत्काल रोक लगाने और एकल पीठ के आदेश को रद्द करने का आग्रह हाइकोर्ट से किया है। अपील में राज्य सरकार ने झारखंड म्युनिसिपल एक्ट के प्रोविजन का हवाला देते हुए नगर निगम में प्रशासक की नियुक्ति को सही ठहराया है।

आजसू विधायक लंबोदर महतो ने साफ कहा था कि आजसू पार्टी पिछड़ों के हक और अधिकार के लिए लड़ाई लड़ेगी। ओबीसी आरक्षण के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था, जिसमें झारखंड सरकार की ओर से शपथ पत्र दायर यह बताया गया था कि राज्य सरकार की ओर से ओबीसी आरक्षण के लिए ट्रिपल टेस्ट राज्य पिछड़ा आयोग की ओर से कराया जायेगा, जबकि राज्य राज्य पिछड़ा आयोग कई वर्षों से नहीं है। ऐसे में ट्रिपल टेस्ट नहीं हुआ और एक तरह से राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को गुमराह करने का काम किया। हमारी पार्टी फिर से कोर्ट का रुख करेगी।

राज्य में नगर निकायों का चुनाव जल्द कराने को लेकर पूर्व पार्षद रोशनी खलखो सहित अन्य की याचिका को हाइकोर्ट के जस्टिस आनंद सेन की कोर्ट ने स्वीकार कर लिया था। कोर्ट ने राज्य सरकार को निर्देश दिया था कि तीन सप्ताह में झारखंड में निकाय चुनाव की अधिसूचना जारी करें। कोर्ट ने अपने आदेश में कहा था कि निकाय चुनाव नहीं करना संवैधानिक तंत्र की विफलता है।

अवैध खनन का मामला

दाहू के बेटे राहुल की जमानत खारिज

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। 1250 करोड़ रुपये के अवैध खनन मामले में दाहू यादव के बेटे राहुल यादव की जमानत याचिका की सुनवाई बुधवार को इडी कोर्ट में हुई। मामले में दोनों पक्षों की सुनवाई पूरी हो गयी। इसके बाद इडी के विशेष न्यायाधीश पीके शर्मा की कोर्ट ने जमानत को खारिज कर दिया। दरअसल, हाइकोर्ट के आदेश के आलोक में राहुल ने 2 जनवरी 2024 को इडी कोर्ट में सरेंडर किया था। इसके बाद कोर्ट ने उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया था। इडी भी उसे रिमांड पर लेकर पूछताछ कर चुकी है। बता दें कि प्रार्थी को अवैध खनन मामले में इडी ने समन जारी कर पूछताछ के लिए बुलाया गया था। लेकिन वे इडी के समक्ष उपस्थित नहीं हुए थे। इसके बाद इडी की विशेष अदालत ने राहुल यादव के खिलाफ 31 मार्च 2023 को नन बेलेबल वारंट जारी किया था। इसे उन्होंने हाइकोर्ट में याचिका दाखिल कर चुनौती दी थी। याचिका में उनकी ओर से कहा गया था कि वह इडी को अनुसंधान में सहयोग करने के लिए तैयार हैं। हाइकोर्ट के आदेश के आलोक में उसने इडी कोर्ट में सरेंडर किया था।

इंटरमीडिएट प्रशिक्षित शिक्षक नियुक्ति मामला

सरकार की अपील खारिज

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड हाइकोर्ट ने इंटरमीडिएट प्रशिक्षित शिक्षक कक्षा एक से पांच की काउंसिलिंग में शामिल करने के एकल पीठ के आदेश को चुनौती देने वाली राज्य सरकार के एलपीए पर बुधवार को फैसला सुनाया। हाइकोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस एस चंद्रशेखर की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने राज्य सरकार की अपील को खारिज कर दिया। साथ ही एकल पीठ के आदेश को बरकरार रखा। मामले में राज्य सरकार की ओर से अलग-अलग 13 एलपीए दाखिल किया गया था। वर्ष 2022 में हाइकोर्ट की एकल पीठ ने याचिकाकर्ताओं को इंटरमीडिएट प्रशिक्षित शिक्षक पद के काउंसिलिंग में शामिल करने का आदेश दिया था, लेकिन राज्य सरकार ने उन्हें यह करते हुए काउंसिलिंग में शामिल नहीं किया था कि उनकी काउंसिलिंग पहले हो चुकी है, इसलिए सेकेंड राउंड की काउंसिलिंग में उन्हें शामिल नहीं किया जायेगा।

सांसद निशिकांत दुबे को हाइकोर्ट से राहत बरकरार

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड हाइकोर्ट से भाजपा के गोड्डा सांसद निशिकांत दुबे की क्रिमिनल याचिका पर बुधवार को सुनवाई हुई। इस दौरान अदालत ने उन्हें मिली राहत को बरकरार रखते हुए पीड़क कार्रवाई पर रोक के आदेश को अगली सुनवाई तक विस्तार दिया।

निशिकांत दुबे की ओर से अधिवक्ता प्रशांत पल्लव और पार्थ जालान ने पक्ष रखा। फिलहाल, अदालत ने इस केस की अगली सुनवाई की तिथि निर्धारित नहीं की है। सांसद ने सचिवालय घेराव को लेकर धुर्वा थाना में दर्ज प्राथमिकी को निरस्त करने के लिए याचिका दाखिल की है।

जस्टिस प्रदीप श्रीवास्तव बने हाइकोर्ट के स्थायी जज

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। एडिशनल जज प्रदीप कुमार श्रीवास्तव झारखंड हाइकोर्ट के स्थायी जज होंगे। केंद्र सरकार ने जस्टिस प्रदीप कुमार श्रीवास्तव को झारखंड हाइकोर्ट के स्थायी जज के पद पर नियुक्त किया है। इस संबंध में विधि मंत्रालय ने अधिसूचना जारी कर दी है।

सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने 18 जनवरी को जस्टिस श्रीवास्तव को स्थायी न्यायाधीश के रूप में नियुक्त करने की सिफारिश की थी।

कॉलेजियम के प्रस्ताव में कहा गया था कि वह इस नियुक्ति के लिए उपयुक्त हैं।

डीएसपी तबादला पर गृह विभाग की मुहर

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड पुलिस में आठ दर्जन पुलिस उपाधीक्षक का तबादला किया गया है। इनमें चार आइपीएस और नवप्रोन्नत डीएसपी भी शामिल हैं। लोकसभा चुनाव से पूर्व राज्य में एक जगह पर जमे पुलिस अधिकारियों का तबादला होना है, लेकिन अधिसूचना जारी होने से पूर्व तबादले की सूची बिना हस्ताक्षर के वायरल हो गयी। बाद में गृह विभाग ने उसी लिस्ट की अधिसूचना जारी की। प्रशिक्षु आइपीएस कुमार शिवाशीष को हजारीबाग एसडीपीओ, ऋत्विक श्रीवास्तव को एसडीपीओ देवघर, पारस राणा को एसडीपीओ चक्रधरपुर और राकेश सिंह को एसडीपीओ विश्रामपुर बनाया गया है। वहीं राजधानी रांची के सदर डीएसपी अमित कुमार, सिटी डीएसपी कुमार वेंकटेश रमन, हटिया डीएसपी प्रमोद मिश्र को बनाया गया है।

रिटायर हुए भवन निर्माण विभाग के सीइ और रांची के इइ

रांची (आजाद सिपाही)। भवन निर्माण विभाग के मुख्य अभियंता अविनाश कुमार दीपक सहित चार अभियंता 31 जनवरी को रिटायर हो गये। भवन निर्माण विभाग के सीइ अविनाश कुमार दीपक ने लंबे समय तक पथ निर्माण विभाग में कार्य किया। सड़क निर्माण के डीपीआर सूत्रण, निर्माण में इनका योगदान काफी रहा। रोड में प्रभारी सीइ भी रहे। इनके अलावा पथ निर्माण विभाग के गुण नियंत्रण निदेशालय में कार्यरत अधीक्षण अभियंता महेंद्र गुप्ता, रांची पथ प्रमंडल के कार्यपालक अभियंता इजरायल मंसूरी और गिरिडीह पथ के कार्यपालक अभियंता प्रेम प्रकाश भी रिटायर हो गये। इन इंजीनियरों के अलावा भी कई और अभियंता भी रिटायर हुए।

खेलकूद प्रतियोगिता 18 से, कमेटी गठित

रांची (आजाद सिपाही)। रांची के ठाकुरगांव में स्व जगदीश महतो स्मृति खेलकूद प्रतियोगिता 18 फरवरी से होगी। कार्यक्रम के सफल आयोजन को लेकर रंथेश्वर गिरी ने बुधवार को बताया कि खेलकूद प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए कमेटी का गठन किया गया, जिसमें अध्यक्ष कृष्णा महतो, सचिव हरिप्रसाद महतो, कोषाध्यक्ष विजय कुमार महतो, उपाध्यक्ष कैलाश पांडेय सहित 11 कार्यकारिणी सदस्यों का चयन किया गया। प्रतियोगिता में बालक और बालिका वर्ग में खेलकूद का आयोजन किया जायेगा।

श्री कृष्ण प्रणामी ने बांटे कंबल-ऊनी वस्त्र

रांची (आजाद सिपाही)। श्री कृष्ण प्रणामी सेवा धाम ट्रस्ट, स्वामी सदानंद प्रणामी चैरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को टेंडर गांव और आसपास के स्लम एरिया में ऊनी वस्त्र और कंबल का वितरण किया गया। परमहंस श्रीश्री 1008 स्वामी सदानंद महाराज के मार्गदर्शन और अध्यक्ष डुंगरमल अग्रवाल, सचिव मनोज चौधरी के निर्देशानुसार यह कार्यक्रम हुआ। इसी क्रम में श्रीकृष्ण प्रणामी सेवाधाम ट्रस्ट की ओर से ऊनी वस्त्र का वितरण किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष डुंगरमल अग्रवाल, उपाध्यक्ष निर्मल जालान, राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल, सचिव मनोज कुमार, विशाल जालान, ओमप्रकाश सरावगी, पवन पोद्दार, विष्णु सोनी, धीरज कुमार गुप्ता, रमेंद्र पांडेय, आलोक सिंह सहित अन्य मौजूद थे।

पूर्वी क्षेत्र किसान मेला 3 फरवरी से

रांची । राष्ट्रीय कृषि उच्चतर प्रसंस्करण संस्थान रांची का कृषि विज्ञान केंद्र तोरपा खूंटी में तीन दिवसीय पूर्वी क्षेत्र किसान मेला का आयोजन किया जायेगा। पूर्वी क्षेत्र किसान मेला का उद्घाटन कृषि मंत्री अर्जुन मुंडा करेंगे। इसमें नौ राज्यों के किसान आयेंगे, जिसमें देश भर के कृषि वैज्ञानिक जुटेंगे। कृषि मेला का उद्घाटन 3 फरवरी को होगा। इसका समापन 5 फरवरी को राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन करेंगे। 4 फरवरी को पूर्व लोकसभा उपाध्यक्ष कड़िया मुंडा, विकास भारती के सचिव अशोक भगत उपस्थित रहेंगे।

सरकारी स्कूल के छात्रों ने मनवाया प्रतिभा का लोहा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। समग्र शिक्षा अभियान और भारती फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को झारखंड शिक्षा परियोजना सभागार डोरंडा में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें जिला के ओरमांझी, कांके और रातु प्रखंड के 36 सरकारी विद्यालय के 72 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। इसमें प्राथमिक वर्ग से प्रथम रामवि डहु की छात्रा साक्षी कुमारी और अंजु कुमारी को द्वितीय स्थान मिला।

बारीडिह और बीआइटी मेसरा को तृतीय स्थान मिला। रामवि की स्वीटी कुमारी ने भी शानदार प्रदर्शन किया। छात्र अमन मुंडा, अजीत करमाली को द्वितीय स्थान मिला। मारसिलिंग की छात्रा रुपा कुमारी, सुरभी कुमारी, निधि कुमारी को भी पुरस्कृत किया गया। आयुष राणा, सत्यम प्रमाणिक, जैद अंसारी, वर्षा कुमारी, जुली कुमारी, विक्रम सिंह ने भी बेहतरीन प्रदर्शन किया। मध्य वर्ग से प्रथम रामवि रातु बालिका की छात्रा आराध्या कुमारी, द्वितीय स्थान पर रामवि डहु की छात्रा हिना परवीन, आरजु परवीन और तृतीय स्थान पर सुरुती कुमारी, दिलशाद अमीन रहे। प्रतियोगिता के आयोजन का उद्देश्य छात्रो में अंग्रेजी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाना था। प्रतियोगिता के सफल आयोजन में भारती फाउंडेशन के परियोजना समन्वयक प्रमोद चदौरे, मो तनवीर हसन खान, अकज कुमार, पंकज पोद्दार, अंजली गिरी, नितेश कुमार, अली असगर का सराहनीय योगदान रहा।

एचइसी कर्मियों की मांगों को माने केंद्र : बंधु तिर्की

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। पूर्व मंत्री सह कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने कहा है कि श्रमिकों और देश के उद्योग जगत के हित में केंद्र सरकार को एचइसी को पुनर्जीवित करने के साथ ही यहां के अधिकारियों-कर्मचारियों की मांगों को अविलंब मान लेना चाहिए। श्री तिर्की ने कहा कि राजधानी के धुर्वा क्षेत्र में जारी आंदोलन एचइसी के किसी अधिकारी, कर्मचारी और धुर्वा क्षेत्र में रहनेवाले लोगों के निज स्वार्थ के कारण ही नहीं, बल्कि देश हित के लिए है। उन्होंने कहा कि एचइसी को चलाने में केंद्र सरकार को सकारात्मक रवैया अपनाना चाहिए। एचइसी मुख्यालय के समक्ष एचइसी के अधिकारियों, कर्मचारियों, उनके परिवार के सदस्यों और धुर्वा क्षेत्र में रहनेवाले लोगों की एक सभा को संबोधित करते हुए श्री तिर्की ने कहा कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने तब अपने सपनों को जमीन पर मूर्त रूप दिया था, जब उन्होंने एचइसी की स्थापना की थी। इसकी स्थापना का सर्वप्रमुख उद्देश्य यही था कि देश में उद्योग धंधों का तेजी से विकास हो। केंद्र सरकार ने एचइसी के प्रति जिस प्रकार से लापरवाही, उदासीनता और अपेक्षापूर्ण रवैया अपनाया है, वह दुर्भाग्यपूर्ण है। 22 महीने से अधिकारियों-कर्मचारियों को वेतन न मिलना अफसोसजनक है। श्री तिर्की ने कहा कि इसके कारण न केवल देश के उद्योग धंधों का नुकसान हुआ है, बल्कि देश में बेरोजगारी भी बढ़ रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से अपील की कि वह किसी भी पूर्वाग्रह के बिना एचइसी के भविष्य को देखते हुए सकारात्मक निर्णय लें।

बिजली बिल भुगतान के लिए एचइसी ने मांगा समय

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। एचइसी ने झारखंड बिजली वितरण निगम से बिजली बिल भुगतान के लिए समय की मांग की है। जेबीवीएनएल के अनुसार बकाया बिजली भुगतान के लिए एचइसी की ओर से आर्थिक तंगी का हवाला देते हुए समय की मांग की गयी है। एचइसी की ओर से जेबीवीएनएल को मिले पत्र में कहा गया है कि बिजली बिल भुगतान के लिए अतिरिक्त समय दिया जाये, जिससे एचइसी प्रबंधन आर्थिक स्थिति को देखते हुए बिजली बिल भुगतान कर सके। इस पर जेबीवीएनएल की ओर से अभी कोई पत्राचार नहीं किया गया है। इसके साथ ही पंद्रह दिनों के अंदर एचइसी की बिजली कटौती को रोक दी गयी है।

बताते चलें कि पिछले दिनों जेबीवीएनएल की ओर से एचइसी को नोटिस जारी किया गया था, जिसमें जल्द से जल्द बकाया बिजली बिल भुगतान करने की बात कही गयी थी। जारी नोटिस में एचइसी का कुल 180 करोड़ रुपये बिजली बिल बकाया बताया गया था, जो लगभग पिछले एक साल का बिजली बिल बकाया है। एचइसी हर महीने 29 करोड़ रुपये की बिजली जेबीवीएनएल से लेता है। आर्थिक संकट झेलने के कारण एचइसी ने लंबे समय से जेबीवीएनएल का बकाया भुगतान नहीं किया था, जिसके बाद 6 जनवरी को जेबीवीएनएल ने एचइसी को नोटिस जारी किया था।

पूर्व में भी जेबीवीएनएल ने एचइसी को कई बार बकाया बिजली बिल भुगतान के लिए नोटिस जारी किया था। इसमें से एक बार जेबीवीएनएल ने एचइसी की बिजली काट दी गयी थी।

छात्र सड़क पर हैं, वहीं सीएम सत्ता बचाने में व्यस्त: एस अली

झारखंड में आज सीएम का पुतला दहन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित सीजीएल परीक्षा में बड़े पैमाने पर धांधली हुई है, जिसमें 15 से 25 लाख रुपये के बीच सीटों की खरीद-फरोख्त किया गया है। वहीं परीक्षा से पहले ही समान्य ज्ञान पेपर तीन के प्रश्नपत्र और उत्तर दोनों लीक हो गये, जिसके कारण आयोग, परीक्षा एजेंसी की धांधली उजागर हो पायी। उक्त बातें आजसू पार्टी के संगठन सचिव एस अली की

अध्यक्षता में केंद्रीय कार्यालय में बुधवार को बैठक में कहीं।

बताया कि आजसू पार्टी इस मामले की भर्त्सना करती है। कर्मचारी चयन आयोग की झारखंडी छात्र विरोधी नीतियों के खिलाफ गुरुवार को रांची सहित राज्यभर में मुख्यमंत्री का पुतला दहन किया जायेगा।

निर्णय लिया गया कि संपूर्ण परीक्षा प्रक्रिया के साथ परीक्षा एजेंसी, झारखंड कर्मचारी चयन आयोग के भ्रष्टाचार में लिप्त कार्यशैली की जांच सीबीआइ से करायी जाये। प्रतियोगी परीक्षाओं का केंद्र गृह जिला रखा जाये, ताकि अभ्यर्थियों का आर्थिक और शारीरिक दोहन नहीं हो सके।

आजसू के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष गौतम सिंह ने झारखंड कर्मचारी चयन आयोग की तानाशाही और भ्रष्टाचारी कार्यशैली के खिलाफ विरोध कर रहे अभ्यर्थियों पर हुए बर्बर लाठीचार्ज की निंदा करते हुए मांग की है कि अविलंब आयोग के चेयरमैन को बर्खास्त किया जाये। कहा कि वर्तमान की सरकार सत्ता में अपनी नियुक्ति बनाये रखने में ज्यादा व्यस्त है, जबकि राज्य के युवा नियुक्तियों को लेकर सड़क पर हैं। इसमें नीतीश सिंह, वेदांत कौस्तुव, विशाल महतो, राहुल तिवारी आदि उपस्थित थे।

खास खबरें

सीसीएल में रिटायर कर्मियों को दी गयी विदाई

रांची (आजाद सिपाही)। सीसीएल मुख्यालय में विभिन्न विभागों से सेवानिवृत्त हुए 20 कर्मियों महाप्रबंधक मनोरंजन बिरुआ, बालकृष्ण लाडी, सत्येंद्र कुमार सिंह, डॉ मयूरी भट्टाचार्य, प्रवीण कुमार, संजय कुमार, भगवान सिंह, अविनाश श्रीवास्तव, प्रदीप कुमार, ओम प्रकाश मंडल, मंजू घोष, मुर्तजा अंसारी, सांता सविता भेंगरा, तारिक अहमद खान, रबींद्र प्रसाद वर्मा, कृष्ण कुमार, मो सुल्तान, बेनी नाथ महली, बिंदेश्वर साहू को सीसीएल परिवार की ओर से विदाई दी गयी। इस अवसर पर सीसीएल के निदेशक कार्मिक हर्ष नाथ मिश्र उपस्थित थे। इस अवसर पर सेवानिवृत्त कर्मियों के कार्यानुभवों पर एक शॉर्ट फिल्म प्रदर्शित की गयी। इस वीडियो में कर्मियों ने सेवाकाल के यादगार लम्हों को सबसे साझा किया।

टीआरएल संकाय: टीएन साहू और डॉ राम किशोर हुए सेवानिवृत्त, दी गयी विदाई

रांची (आजाद सिपाही)। जनजातीय-क्षेत्रीय भाषा संकाय में प्रो डॉ त्रिवेणी नाथ साहू और डॉ राम किशोर भगत के सेवानिवृत्त होने पर समारोह आयोजित कर विदाई दी गयी। विदाई समारोह की अध्यक्षता करते हुए समन्वयक डॉ हरि उरांव ने दोनों शिक्षकों की मेहनत, लगन पर प्रकाश डाला। कहा कि सही मायने में एक शिक्षक कभी सेवानिवृत्त नहीं होता। शिक्षण संस्थान में भले ही सेवाकाल पूरा हो जाये, मगर एक अध्यापक आजीवन अपने चारों ओर ज्ञान का प्रकाश फैलाया करते हैं। प्राध्यापक डॉ उमेश नंद तिवारी ने दोनों ही शिक्षकों के सेवानिवृत्ति पर कहा कि आप दोनों की विशेषज्ञता, दयालु कर्म और हमारे प्रति कोमलता ने दिलों पर एक अमिट छाप छोड़ी है, जिसे कोई भी कभी नहीं हटा सकता है। मौके पर डॉ किशोर सुरीन, डॉ सविता केसरी, मनय मुंडा, डॉ गीता कुमारी सिंह, डॉ मेरी एस सोरेंग, डॉ रिझू नायक, डॉ बीरेंद्र कुमार महतो, बंधु भगत, प्रेम मुर्मू समेत अन्य मौजूद थे।

आरएलएसवाइ कॉलेज: डॉ खालिक को विदाई दी गयी

रांची (आजाद सिपाही)। रामलखन सिंह यादव कॉलेज के जनजाति-क्षेत्रीय भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ खालिक अहमद को नागपुरी भाषा में प्रशस्ति पत्र प्रदान कर विदाई दी गयी। पूरे रांची विश्वविद्यालय में अपनी भाषा में प्रशस्ति पत्र देने का तीसरा मौका है। इससे पहले डॉ सिकरादास तिर्की को मुंडारी और डॉ एलेक्सुस खाखा को कुड़ुख भाषा में प्रशस्ति पत्र दिया गया है। भाषा को आगे बढ़ाने और लोगों को इस ओर आकर्षित करने का सबसे बड़ा अवसर होता है। मौके पर टीआरएल के छात्र-छात्राओं ने कॉलेज परिसर अखड़ा में नृत्य प्रस्तुत किये। डॉ खालिक जी का पैर धोकर स्वागत किया गया। प्राचार्य डॉ जेपी सिंह ने कहा कि शिक्षक कभी रिटायर नहीं होते हैं। सरकारी कार्य से मुक्त नहीं हो रहे हैं। सरकार के मापदंड से जरूर सेवा मुक्त हो रहे हैं। डॉ आशुतोष, डॉ एलेक्सुस खाखा, डॉ शशि शेखर, डॉ माधुरी दास, डॉ स्थिता किरण, प्रो नीतु कुमारी, डॉ मृदुला प्रसाद, डॉ विजय कुमार, डॉ रीता कुमारी, डॉ मनीष चंद्र, डॉ अजीत मुंडा, डॉ नैंसी समेत अन्य मौजूद थे।

मॉकड्रिल: हटिया में दुर्घटनाग्रस्त हुई रामगढ़-कन्याकुमारी स्पेशल ट्रेन!

रांची (आजाद सिपाही)। मॉकड्रिल के दौरान बुधवार को दिखाया गया कि रामगढ़ से कन्याकुमारी के बीच चलने वाली स्पेशल ट्रेन संख्या 00025 रामगढ़-कन्याकुमारी होली डे स्पेशल ट्रेन 11.30 बजे हटिया यार्ड में दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। इसमें कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया जा रहा है। दुर्घटना की सूचना मिलते ही राहत और बचाव कार्य के लिए रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों की टीम के साथ दुर्घटना राहत यान, दुर्घटना राहत चिकित्सा यान और चिकित्सकों का दल दुर्घटना स्थल के लिए रवाना हो गया। दो कोच डिरेल हुआ है। एसपीआरओ निशांत कुमार ने बताया कि यह मॉकड्रिल था, जिसमें देखा गया कि एक्सीडेंट की स्थिति में हालात से कैसे निपटा जा सकेगा।

राजधानी समेत कुछ जिलों में आज गर्जन के साथ बारिश संभव

रांची (आजाद सिपाही)। राज्य के मौसम ने एक बार फिर से करवट ली है। जहां कोहरा और बादल के कारण मौसम का मिजाज बदल गया है। वहीं, एक फरवरी को राज्य के कुछ हिस्सों में बारिश होने की संभावना है। इस संबध में मौसम विज्ञान केंद्र की ओर से सूचना जारी की गयी है। इसमें बताया गया है कि एक फरवरी को राज्य के कुछ हिस्सों में बारिश हो सकती है। इसमें दक्षिणी, उत्तर पूर्वी और मध्य हिस्से में बारिश होने की संभावना है। इसमें पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, सिमडेगा, सरायकेला खरसावां, देवघर, चतरा, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, बोकारो, रांची, खूंटी, रामगढ़ में बारिश की संभावना है। इसके साथ ही इस दौरान अन्य जिलों में बादल छाये रहेंगे। केंद्र की मानें, तो एक फरवरी तक न्यूनतम तापमान में गिरावट नहीं दर्ज की जायेगी। दो फरवरी से चार फरवरी तक न्यूनतम तापमान में चार डिग्री तक की गिरावट होगी, जिससे लोगों को ठंड का सामना करना पड़ेगा। वहीं पांच और छह फरवरी को फिर से राज्य में आंशिक बादल छाये रहने की संभावना है। वहीं छह फरवरी तक राज्य भर में सुबह और शाम के वक्त कोहरा छाये रहने की संभावना है। इस दौरान कुछ जिलों में दोपहर के समय में भी कोहरा का असर देखा जा सकता है। दो फरवरी से चार फरवरी तक दिन के समय आसमान साफ रहने की जानकरी दी गयी है।

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 01 फरवरी, 2024
www.azadsipahi.in
05

झारखंड में राजनीतिक अस्थिरता के बीच निर्दलीय भी बने मुख्यमंत्री

24 साल में बनीं 11 सरकारें, अब 12वें की बारी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड की राजनीति के अजब-गजब किस्से हैं। एक से बढ़कर एक प्रयोगों की वजह से 14 वर्षों तक राज्य में राजनीतिक अस्थिरता का दौर रहा। आलम यह था कि विधानसभा के एक टर्म में चार मुख्यमंत्री बने। इस राज्य ने 20 वर्षों में 11 सरकारें देखीं, अब 12वें की बारी है। इस दौरान तीन बार राष्ट्रपति शासन लगा। झारखंड में ही अनूठा प्रयोग हुआ, जब 18 सितंबर 2006 को झामुमो, कांग्रेस, राजद और निर्दलीयों की मदद से निर्दलीय विधायक मधु कोड़ा मुख्यमंत्री बन गये। यह पूरे देश की राजनीति में चौंकानेवाली घटना थी। 14 वर्षों तक झारखंड में निर्दलीयों का कुनबा सरकार बनाने-गिराने की ताकत में रहा और राजनीति की धुरी बना रहा।

राज्य गठन के बाद वर्ष 2005 में पहली बार विधानसभा चुनाव हुआ, जिसमें यूपीए-एनडीए किसी को बहुमत नहीं मिला। झारखंड की राजनीति में कुर्सी के लिए जोड़-तोड़ का नया अध्याय यहीं

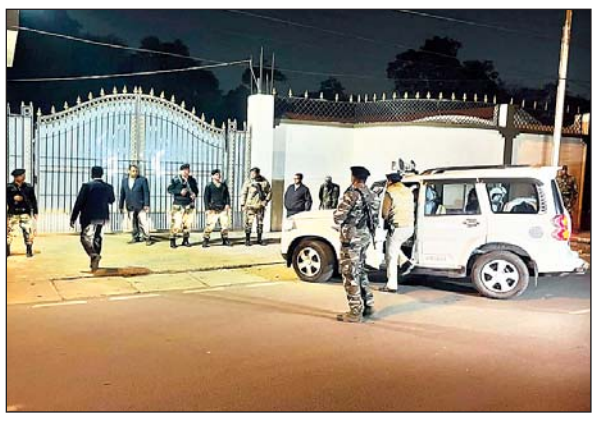

से शुरू हुआ। इस विधानसभा कार्यकाल में चार सरकारें बनीं। बहुमत का आंकड़ा नहीं होने के बावजूद झामुमो नेता शिबू सोरेन ने दावा ठोक दिया और मुख्यमंत्री भी बने। हालांकि 10 दिन में शिबू की सरकार गिर गयी, फिर अर्जुन मुंडा मुख्यमंत्री बने। इसके बाद निर्दलीय मधु कोड़ा को कांग्रेस, झामुमो और राजद ने हवा देकर मुख्यमंत्री बना दिया। मधु कोड़ा दो वर्ष का कार्यकाल भी पूरा नहीं कर सके। फिर शिबू सोरेन मुख्यमंत्री बने। इसके बाद राष्ट्रपति शासन लगा।

2009 की विधानसभा में तीन सरकारें

राष्ट्रपति शासन में ही वर्ष 2009 में चुनाव हुआ, लेकिन राजनीतिक स्थिरता नहीं आयी। इस विधानसभा के कार्यकाल में तीन सरकारें बदलीं। भाजपा के सहयोग से शिबू सोरेन मुख्यमंत्री बने। तब वे सांसद थे, लेकिन संसद में उन्होंने यूपीए को वोट कर दिया, जिससे नाराज भाजपा ने नाता तोड़ लिया। झारखंड में फिर राष्ट्रपति शासन लगा। पांच माह बाद झामुमो-भाजपा साथ आये। 28-28 महीने का समझौता हुआ। झारखंड की राजनीति में फिर एक प्रयोग था। अर्जुन मुंडा के नेतृत्व को झामुमो ने समर्थन दिया, लेकिन वह 28 महीना पूरा नहीं कर सके। झामुमो ने सरकार गिरा दी, फिर राष्ट्रपति शासन लगा। राष्ट्रपति शासन के क्रम में ही झामुमो के साथ यूपीए फोल्डर साथ आया। इसके बाद हेमंत सोरेन के नेतृत्व में यूपीए की सरकार बनी।

2014 में राज्य को मिली स्थिर सरकार

वर्ष 2014 में झारखंड में तीसरा विधानसभा चुनाव हुआ। 14 वर्ष बाद झारखंड स्थिरता के रास्ते पर चला और एनडीए को पूर्ण बहुमत मिला। भाजपा-आजसू ने मिल कर सरकार बनायी। मुख्यमंत्री रघुवर दास बने और पहली बार किसी सरकार ने पांच वर्ष का कार्यकाल पूरा किया। वर्ष 2019 के विधानसभा चुनाव में भी झारखंड राजनीतिक स्थिरता की राह पकड़ कर चला। इस बार यूपीए को पूर्ण बहुमत मिला और हेमंत सोरेन के नेतृत्व में दूसरी बार राज्य में पूर्ण बहुमत की सरकार बनी।

अस्थिर राजनीति के भंवर में ही झूलती रही सियासत

झारखंड की राजनीति अस्थिरता की भंवर में झूलती रही। 24 सालों में झारखंड की सियासत में कितने उतार चढ़ाव आये, कितने मुख्यमंत्री बने और कब-कब राष्ट्रपति शासन रहा। 15 नवंबर 2000 को बिहार से अलग होकर झारखंड राज्य की स्थपना हुई। जल, जंगल, जमीन की लड़ाई अलग राज्य बनने का आधार बना। लोगों को नये राज्य से काफी उम्मीदें थीं, लेकिन राजनीतिक अस्थिरता के कारण लोगों की उम्मीदें अब तक पूरी नहीं हुईं। झारखंड की राजनीतिक इतिहास में अब तक एक मात्र मुख्यमंत्री रघुवर दास रहे हैं, जिन्होंने पांच साल का अपना कार्यकाल पूरा किया। झारखंड की राजनीति में राज्य ने अबतक 11 मुख्यमंत्री देखे। जल्द ही 12वें मुख्यमंत्री के रूप में चंपई सोरेन शपथ लेंगे। रघुवर दास को छोड़ दें, तो अबतक किसी मुख्यमंत्री ने अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया है। झारखंड में बीजेपी और जेएमएम का दबदबा रहा है, पांच बार बीजेपी के मुख्यमंत्री बने, तो पांच पार जेएमएम के नेता मुख्यमंत्री बने, लेकिन इनमें से एक को छोड़कर किसी के नाम कार्यकाल पूरा करने का रिकॉर्ड नहीं है। बीजेपी से अर्जुन मुंडा और जेएमएम से शिबू सोरेन तीन-तीन बार मुख्यमंत्री बन चुके हैं लेकिन इन्होंने एक बार भी अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया।

झारखंड के नाम अनोखा रिकॉर्ड

झारखंड ही एक ऐसा राज्य है जहां पर एक निर्दलीय को मुख्यमंत्री बनाया गया। 10 सितंबर 2006 को निर्दलीय विधायक मधु कोड़ा ने कांग्रेस और जेएमएम के समर्थन से मुख्यमंत्री पद की शपथ ली, लेकिन वह भी अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाये। मधु कोड़ा लगभग दो साल तक झारखंड के मुख्यमंत्री रहे।

आज हेमंत की इडी के खिलाफ याचिका पर हाइकोर्ट में सुनवाई

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। पूर्व सीएम हेमंत सोरेन के द्वारा हाइकोर्ट में इडी के खिलाफ दाखिल क्रिमिनल रिट की सुनवाई गुरुवार को सुबह 10.30 बजे होगी। यह सुनवाई हाइकोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस एस चंद्रशेखर की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में सूचीबद्ध है। दरअसल, हेमंत सोरेन बनाम इडी एवं अन्य की याचिका हाइकोर्ट में दाखिल की गयी है। इसमें हेमंत सोरेन से जमीन घोटाला मामले में इडी की पूछताछ एवं उनकी गिरफ्तारी को चुनौती दी गयी है। बता दें कि इडी के चौथे समन को सीएम हेमंत सोरेन के द्वारा हाइकोर्ट में चुनौती दी गयी थी। याचिका देर से दाखिल किये जाने पर कोर्ट ने सीएम की याचिका को खारिज कर दिया था।

हाई टेक्नोलॉजी से लैस होकर पहुंचे थे इडी के अधिकारी

सवालों-जवाबों की रिकार्डिंग की गयी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सीएम पद से इस्तीफा पद से इस्तीफा दे चुके हेमंत सोरेन से आज ईडी ने लगभग सात घंटे तक पूछताछ की। खबर है कि इस दौरान ईडी के अधिकारी हाई टेक्नोलॉजी से लैस होकर सीएम आवास पहुंचे थे।

हेमंत सोरेन से भूमि घोटाला से संबंधित सवाल पूछे गये। ईडी की टीम ने उनके जवाबों को रिकार्ड भी किया। बता दें कि झारखंड मुक्ति मोर्चा के वरीय विधायक चंपाई सोरेन झारखंड के अगले मुख्यमंत्री होंगे। कल सीएम आवास में मीटिंग के बाद हेमंत सोरेन के उत्तराधिकारी के रूप में जब विकल्पों पर चर्चा की जा रही थी तो चंपाई सोरेन का नाम सबसे आगे था।

सोशल मीडिया पर ट्रेंड करते रहे हेमंत

जारी सियासी हलचल के बीच सोशल मीडिया पर बुधवार को हेमंत सोरेन दिनभर ट्रेंड करते रहे। वे ट्वीटर यानी एक्स पर पूरे दिन टॉप 4-5 ट्रेंडिंग न्यूज में बने रहे।

मुख्यमंत्री की रेस में सबसे आगे चल रही थीं कल्पना

अचानक पिक्चर से हो गयीं बाहर

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। हेमंत सोरेन अब झारखंड के मुख्यमंत्री नहीं रहे। रांची के कथित जमीन घोटाले में घिरे हेमंत सोरेन ने बुधवार को सीएम पद से इस्तीफा दे दिया। अब चंपई सोरेन झारखंड के नये मुख्यमंत्री होंगे। ये चौंकाने वाला नाम है। वह इसलिए क्योंकि अभी तक हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना का नाम मुख्यमंत्री की रेस में सबसे आगे चल रहा था। लेकिन बुधवार को विधायक दल की जब बैठक हुई, तो चंपई राय को नेता चुन लिया गया।

कल्पना सोरेन का मुख्यमंत्री न बनना इसलिए भी थोड़ा चौंकाता है, क्योंकि मंगलवार को विधायक दल की बैठक में वो भी मौजूद थीं। सियासी परिवार से आने वाली कल्पना सोरेन राजनीति से दूर ही रही हैं, लेकिन कुछ दिनों से उनकी चर्चा बहुत हो रही थी।

क्या परिवार में टूट के कारण नहीं बन सकीं सीएम?

सोरेन परिवार झारखंड का सबसे बड़ा सियासी परिवार माना जाता है। हेमंत सोरेन से पहले उनके पिता और झामुमो के प्रमुख शिबू सोरेन तीन बार झारखंड के मुख्यमंत्री रहे हैं। ऐसे में जब कल्पना सोरेन का नाम मुख्यमंत्री की रेस में शामिल हुआ, तो पार्टी में टूट का खतरा भी बढ़ गया। बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे ने दावा किया कि झामुमो के 29 में से 18 विधायक कल्पना सोरेन को मुख्यमंत्री चुने जाने के लिए राजी नहीं थे। निशिकांत दुबे ने ये भी दावा किया कि 18 विधायक कल्पना सोरेन की बजाय हेमंत सोरेन के भाई बसंत सोरेन को सीएम बनाने की मांग कर रहे थे। माना जा रहा है कि ऐसे में अगर परिवार के बड़ों को दरकिनार कर

कल्पना सोरेन को मुख्यमंत्री बनाया जाता तो परिवार में टूट हो सकती थी।

परिवार में हो सकती थी कलह!

कल्पना सोरेन को अगर मुख्यमंत्री बनाया जाता, तो परिवार में कलह भी हो सकती है। मंगलवार को जब गठबंधन सरकार के विधायकों की बैठक हुई, तो उसमें कई विधायक नहीं पहुंचे थे। बताया जा रहा है कि जो विधायक इस बैठक में नहीं पहुंचे थे, वो कल्पना सोरेन की बजाय सीता

सोरेन को मुख्यमंत्री बनाने की मांग कर रहे थे। मुख्यमंत्री पद पर कल्पना सोरेन को बैठाने की चर्चाओं पर कुछ समय पहले सीता सोरेन ने कहा था कि मैं सोरेन परिवार की बड़ी बहू हूं। मेरे पति ने झारखंड के निर्माण के लिए बहुत लंबे समय तक आंदोलन किया है। मैंने हेमंत सोरेन को उत्तराधिकारी माना था और किसी को नहीं।

हेमंत के खिलाफ भी जा चुकी हैं सीता सोरेन

अप्रैल 2022 में सीता सोरेन मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की सरकार के खिलाफ खुलकर बगावत कर दी थी। सीता सोरेन ने हेमंत पर निशाना साधते हुए कहा था कि सरकार खनिज समृद्ध राज्य में जमीन की लूट को रोकने में नाकाम रही है। सीता सोरेन ने आरोप लगाया था कि गुरुजी शिबू सोरेन और मेरे पति के जल, जंगल, जमीन के विजन को नष्ट किया जा रहा है। भ्रष्ट अधिकारियों को बचाया जा रहा है। लोगों को हमारी सरकार से उम्मीदें थीं, लेकिन अब वो निराश हैं। उन्होंने झारखंड के चतरा में एक खननन कंपनी के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर राज्यपाल से मुलाकात भी की थी। उन्होंने दावा किया था कि झारखंड में जंगलों को अवैध तरीके से हड़पा जा रहा है। इतना ही नहीं, सीता सोरेन की दो बेटियां राजश्री और जयश्री भी झामुमो सरकार से मुकाबला करने में अपनी मां के साथ रही हैं। साल 2021 में उन्होंने दुर्गा सोरेन सेना की स्थापना की थी, जिसका मकसद झारखंड में भ्रष्टाचार और लूट से लड़ना था।

कल्पना का विधायक न होना भी एक वजह!

कल्पना सोरेन को मुख्यमंत्री न चुने जाने के पीछे की एक वजह उनका विधायक न होना भी माना जा रहा है। कल्पना सोरेन को अगर मुख्यमंत्री बनाया जाता, तो संविधान के तहत उन्हें छह महीने के भीतर विधानसभा का सदस्य बनना पड़ता, यानी कि किसी सीट पर उपचुनाव करवाया जाता। हालांकि सरफराज अहमद ने अपनी सीट गांडेय विदानसभा छोड़ दी है। लेकिन माना जा रहा है कि चुनाव आयोग शायद उपचुनाव के लिए राजी न होता। वह इसलिए क्योंकि इसी साल नवंबर-दिसंबर में झारखंड में विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में अगर उपचुनाव नहीं होते, तो कल्पना को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ता। भाजपा ने इसे लेकर मोर्चा खोल दिया था। राज्यपाल को इस बाबत ज्ञापन भी सौंपा गया था।

चंपई सोरेन को लोबिन हेंब्रम का समर्थन नहीं

हेमंत की गिरफ्तारी पर बोले- दुर्भाग्य है

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी के बाद चंपाई सोरेन को विधायक दल का नेता घोषित किया गया है। चंपाई सोरेन ने राज्यपाल से मुलाकात के बाद सरकार बनाने का दावा पेश किया है। इस बीच बोरियो से झामुमो विधायक औ? वरिष्ठ नेता लोबिन हेम्ब्रम ने कहा कि मैं चंपाई सोरेन के नाम का समर्थन नहीं करूंगा। उन्होंने कहा कि झारखंड की सियासत में जो भी हो रहा है, वह दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि झारखंड गठन के 23 साल बाद

अधिकांश समय तक यहां आदिवासी मुख्यमंत्री ही रहे हैं लेकिन बावजूद इसके आदिवासी बहुल राज्य की दुर्दशा देखकर दुख होता है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि सत्ता परिवर्तन हो रहा है, तो शिबू सोरेन के परिवार का ही कोई सदस्य होता, तो अच्छा रहता।

देर रात तक जमे रहे झामुमो कार्यकर्ता

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। ठंड के बावजूद झामुमो के कार्यकर्ता देर रात तक जमे रहे। रांची जिलाध्यक्ष मुस्ताक आलम के नेतृत्व में रांची, पूर्वी सिंहभूम, पलामू, धनबाद, बोकारो, चतरा, सिमडेगा, खूंटी, पश्चिमी सिंहभूम समेत अन्य जिलों के कार्यकर्ता डटे रहे। मौके पर केंद्रीय सदस्य समनूर मंसूरी, सुशील एक्का, पवन जेडिया, अफरोज अंसारी, एजाज शाह, डॉ हेमलाल मेहता, अश्विनी शर्मा, जनक नायक, रामानंद बेदिया, बीरु साहू, कलाम

आजाद, लालजी रमण, रामशरण तिर्की, डॉ तालकेश्वर महतो, सुकुआ मुंडा, आदिल इमाम, कुद्दूस अंसारी, सुजीत उपाध्याय, प्रदीप मिर्धा, आफताब आलम, नवीन चंचल, अरुण वर्मा, अरविंद सिंह देवल, कैथरीना तिर्की समेत सैकड़ों की संख्या में झामुमो कार्यकर्ता दिन के 11 बजे से ही मोरहाबादी मैदान में जमे रहे।

तीन आइएएस का हुआ तबादला

सीएस को गृह विभाग का अतिरिक्त प्रभार

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्य सरकार ने मुख्य सचिव झारखंड के पद पर पदस्थापित एल ख्यांग्ते को अगले आदेश तक अपने कार्यों के साथ अपर मुख्य सचिव गृह कार्य आपदा प्रबंधन विभाग, आपदा प्रबंधन प्रभाग को छोड़ कर अतिरिक्त प्रभार दिया है। साथ ही सदस्य राजस्व परिषद रांची के पद पर पदस्थापित राजीव अरुण एक्का को अपने कार्यों के साथ अपर मुख्य सचिव वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग रांची का अतिरिक्त प्रभार सौंपा है। इस संबंध में बुधवार को कार्मिक प्रशासनिक सुधार राजभाषा विभाग ने अधिसूचना जारी कर दी है। राज्य सरकार ने भारतीय प्रशासनिक सेवा के तीन अधिकारियों का स्थानांतरण पदस्थापन किया है। निदेशक खान रांची के पद पर पदस्थापित अरवा राजकमल को स्थानांतरित करते हुए अगले आदेश तक प्रभारी सचिव अनुसूचित जनजाति-अनुसूचित जाति अल्पसंख्यक एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग रांची के पद पर पदस्थापित किया गया है। निदेशक पेंशन निदेशालय वित्त विभाग मुकेश कुमार को स्थानांतरित करते हुए उन्हें प्रभारी सचिव श्रम नियोजन प्रशिक्षण विभाग के पद पर पदस्थापित किया गया है। निदेशक भू अर्जन उमाशंकर सिंह को स्थानांतरित करते हुए प्रभारी सचिव स्कूली शिक्षा साक्षरता विभाग रांची के पद पर पदस्थापित किया गया है।

हेमंत का क्रांतिकारी कदम : मनोज पांडेय

रांची (आजाद सिपाही)। राजद महासचिव मनोज कुमार पांडेय ने कहा कि जिस तरीके से राज्य की राजनीति की करवट ली है और राज्य के सबके चहेता हेमंत सोरेन द्वारा इस्तीफा देना भाजपा के मुंह में तमाचा है। भाजपा चुनी हुई सरकार को अपदस्थ करने में लगी थी। इन सबको विराम देते हुए हेमंत सोरेन ने इस्तीफा देकर क्रांतिकारी कदम उठाया। अब राज्य के नये मुख्यमंत्री चंपई सोरेन के नेतृत्व में महागठबंधन की सरकार विकास में अग्रसर होगी।

सीएमपीडीआइ के नौ कर्मी सेवानिवृत

रांची (आजाद सिपाही)। सीएमपीडीआइ नौ कर्मियों की सेवानिवृत्ति के अवसर पर कांफ्रेंस हॉल में विदाई-सह-सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इनमें महाप्रबंधक बीए रेड्डी, एसपी नारायण, सत्येंद्र सिंह, विश्वनाथ घोष, सुदक्षिणा मुखर्जी, संजय कुमार दत्ता, उमेश महतो, सुरेश चंद्र सिंह, अरूण कुमार सिन्हा शामिल हैं। इस मौके पर सीएमपीडीआइ के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक मनोज कुमार ने सेवानिवृत्त हो रहे कर्मियों को पौधा, मान पत्र, प्रतीक चिह्न और शॉल देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक तकनीकी अजय कुमार, निदेशक तकनीकी सतीश झा ने सेवानिवृत्त हो रहे कर्मियों के योगदान की प्रशंसा की। मौके पर यूनियन के सतीश कुमार केसरी, प्रलय भट्टाचार्या, राजन कुमार रजक, राजेश साव ने भी विचार व्यक्त किये। मंच का संचालन और धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्रबंधक राजभाषा अभय मिश्र ने किया।

जिसने गलत किया, वह जेल जायेगा : बाबूलाल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। जमीन घोटाला से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी के बाद प्रदेश बीजेपी अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी की पहली प्रतिक्रिया सामने आई है। बाबूलाल मरांडी ने कहा कि किसी व्यक्ति ने चोरी या गड़बड़ी की है तो उसे सजा मिलेगी। यह स्वाभाविक प्रक्रिया है। बाबूलाल मरांडी ने कहा कि सोरेन परिवार का अतीत ही भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ है। याद कीजिए की कैसे शिबू सोरेन कोयला मंत्री रहते बिना इस्तीफा दिये पार्लियामेंट से भाग गये थे। तात्कालीन पीएम मनमोहन सिंह को उनको खोजना पड़ा था। बीजेपी द्वारा साजिश के आरोपों पर बाबूलाल मरांडी ने कहा कि जिसने गलत किया उसे जेल जाना होगा इसमें बीजेपी कहां से आ गयी।

लालू किसकी सरकार में जेल गये थे : बाबूलाल मरांडी ने कहा कि लालू प्रसाद यादव को भी चारा

घोटाला केस में जेल जाना पड़ा था। तब तो बीजेपी की सरकार नहीं थी। यूपीए गठबंधन की सरकार थी। बाबूलाल मरांडी ने कहा कि हेमंत सोरेन को पताना चाहिए कि उन्होंने बेनामी संपत्ति कहां से अर्जित की। उन्होंने नाम बदलकर जमीन खरीदी। हेमंत सोरेन को हेमंत कुमार सोरेन कर दिया। शिबू सोरेन को शिव कुमार सोरेन लिखा। दिवंगत दुर्गा सोरेन को दुर्गा प्रसाद सोरेन में बदलकर जमीनें खरीदी। उन्होंने कहा कि कानून साफ है कि यदि किसी ने गलत किया है तो उसकी गिरफ्तारी होगी।

हेमंत सरकार के कार्यकाल में लूट हुई : बीजेपी और केंद्र सरकार पर षड्यंत्र रचने के आरोपों पर बाबूलाल मरांडी ने कहा कि कहने वाले तो कुछ भी कहेंगे। हेमंत सोरेन स्पष्ट करें कि उन्होंने लूट नहीं मचाई। 36 लाख रुपये की बरामदगी पर कहा कि बीजेपी ने पैसा प्लांट किया। किसी ने कहा कि पार्टी का पैसा था लेकिन मैं जानना चाहता हूं कि पार्टी का पैसा था तो अकाउंट में होना चाहिए। घर में क्यों था। बाबूलाल मरांडी ने कहा कि हेमंत सरकार के 4 साल के कार्यकाल में झारखंड में कोयला, पत्थर और बालू की लूट हुई है। बाबूलाल मरांडी ने कहा कि पीएम मोदी कहते हैं कि न खाएंगे न किसी को खाने देंगे। जो भी गलत करेगा उसे जेल जाना होगा। चंपाई सोरेन को विधायक दल का नेता बनाने पर बाबूलाल मरांडी ने कहा कि यह तो उनकी पार्टी और गठबंधन का हक है कि किसे मुख्यमंत्री बनाना

चंपई सोरेन के गांव में जश्न और उल्लास

मांदर की थाप पर थिरकते रहे ग्रामीण

खूब हुई आतिशबाजी, जमकर नारेबाजी

आजाद सिपाही संवाददाता

सरायकेला। चंपई सोरेन को झारखंड का नया सीएम बनने की सूचना के बाद उनके पैतृक गांव में जश्न और उल्लास का माहौल है। चंपई सोरेन का गांव जिलींगगोडा में मांदर की थाप पर ग्रामीण थिरकते रहे। क्या पुरुष, महिला और क्या बच्चे, सभी मांदर की थाप पर झूम रहे थे। शनिवार की रात खूब आतिशबाजियां हुईं। बागबेड़ा, बेड़ाढीपा, मतलाडीह, रानीडीह, करनडीह आदि क्षेत्रों में भी आतिशबाजियां की गयीं। साथ ही चंपई सोरेन जिंदाबाद के नारे भी लगाये गये। ग्रामीण बताते हैं कि राजनगर के जिलिंगगोडा में रहनेवाले विधायक चंपई सोरन अस्सी के दशक के आसपास राजनीति में आये थे। तब उन्हें अगर

कोई सलाह देता था, तो वह थे स्व बाबूलाल मुमरू। विधायक बनने से लेकर आज तक उनके घर पर गरीबों का मेला लगता है। क्षेत्र के गरीब यह सोचकर उनके घर पर आते हैं कि उन्हें आर्थिक सहायता मिलेगी। चंपई सोरेन गरीबों के बीच खुद ही क्षमता के अनुरूप पैसे का वितरण भी करते हैं। उनके दरबार से कोई खाली नहीं जाता है।

निर्मल महतो से चंपई ने सीखी राजनीति : चंपई सोरन ने राजनीतिक सफर में काफी उतार-चढ़ाव देखा है और यह महा संयोग ही है कि हर बार उनके सिर पर ताज चढ़ा है। झामुमो के अध्यक्ष रहे निर्मल महतो की अंगुली पकड़कर प्रखंड स्तर से राजनीति की शुरुआत करनेवाले चंपई सोरेन सरायकेला खरसावां जिले के होने के बावजूद पूर्वी सिंहभूम के जिलाध्यक्ष बनाये गये थे। यह वही वक्त था जब कोल्हान में निर्मल महतो की शहादत के बाद झामुमो का राजनीतिक ग्राफ काफी बढ़ा हुआ था। चंपई सोरन के अध्यक्षीय काल में ही लोकसभा चुनाव हुआ था, जिसमें जमशेदपुर से पहली बार झामुमो का तीर-धनुष चमका और शैलेंद्र महतो संसद के गलियारे में पहुंचे थे।

कैंब्रियन के छात्रों का शानदार प्रदर्शन

रांची (आजाद सिपाही)। सीबीएसइ द्वारा आयोजित आर्यभट्ट गणित चैलेंज - 2023 में कैंब्रियन पब्लिक स्कूल, कांके रोड के दसवीं कक्षा के छात्र आर्यन कुमार एवं सोनल खलखो ने पटना रीजन में टॉप 100 छात्रों की सूची में स्थान हासिल किया। मौके पर प्राचार्या डॉ नीता पांडेय ने प्रसन्नता व्यक्त की एवं छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि छात्र उच्च कोटि की गुणवत्ता के साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान बनाने में सफल हों।

विकास ठीक, पर रोजगार भी तो बढ़ना चाहिए

अंतरिम बजट से पहले सरकार की ओर से जारी की गयी रिपोर्ट 'इंडियन इकोनॉमी-ए रिव्यू' में यह उम्मीद जतायी गयी है कि भारत 2027 तक पांच ट्रिलियन डॉलर और 2030 तक सात ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी बन जायेगा। रिपोर्ट में इसे हासिल होने लायक लक्ष्य बताते हुए उन चीजों का जिक्र किया गया है, जो इसे मुमकिन बना सकते हैं। रिपोर्ट में छिपे सकारात्मक नजरिये की सराहना करते हुए भी कुछ अहम बिंदुओं पर ध्यान देना जरूरी है, जो इस तरह के लक्ष्य के साथ जुड़े हैं। दुनिया के बड़े देशों में भारत को सबसे तेज इकोनॉमी का दर्जा हासिल है। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि तेज विकास दर के बावजूद रोजगार के मोर्चे पर खास प्रगति नहीं हुई है। आज भी युवा बेरोजगारी का स्तर 40 फीसदी तक बताया जाता है। यह स्थिति गंभीर इसलिए भी है कि यह तेज विकास दर के फायदों को सीमित करती है। जाहिर है, विकास दर को जारी रखने या और तेज करने के प्रयासों के साथ उसे रोजगारोन्मुख बनाने पर भी ध्यान देने की जरूरत है।

खपत के मोर्चे पर चुनौती अभी बनी हुई है। जानकारों के मुताबिक प्राइवेट फाइनल कंजंप्शन एक्सपेंडिचर (पीएफसीइ) मौजूदा वित्तीय वर्ष में 5.2 फीसदी रहने का अनुमान है, जबकि पिछले वित्तीय वर्ष में यह वृद्धि 7.5 फीसदी थी। यह महत्वपूर्ण इसलिए है कि भारत की अर्थव्यवस्था में खपत का योगदान 60 प्रतिशत है। लेकिन आबादी के निचले आधे हिस्से के हाथ में इतना पैसा नहीं बच रहा है कि वह खुलकर खर्च कर सके। अगर यह तबका खर्च बढ़ायेगा, तो उससे उत्पादन और सेवाओं की मांग बढ़ेगी। लिहाजा नये रोजगार पैदा होंगे और तेज विकास का चक्र पूरा होगा।

इस साल देश में चुनाव होने हैं। चुनाव से पहले मोदी सरकार अपना अंतरिम बजट पेश करेगी। अंतरिम बजट से पहले सरकार की तरफ से जारी रिपोर्ट में देश की आर्थिक सेहत के संबंध में कई लक्ष्यों का जिक्र किया गया है।

एक बड़ी चुनौती यह भी है कि निजी पूंजी निवेश में बढ़ोतरी नहीं हो रही है। कोविड-19 के बाद विकास दर में जो बढ़ोतरी देखने को मिली और इकोनॉमी नये सिरे से उठ खड़ी हुई, उसके पीछे सरकार द्वारा किये गये निवेश की ही प्रमुख भूमिका रही है। लेकिन निजी निवेश में रिवाइवल के बगैर विकास की तेज रफ्तार का टिके रहना मुश्किल होगा। इसलिए इस ओर अभी से ध्यान देना जरूरी है।

कृषि क्षेत्र के प्रदर्शन में गिरावट लगातार चिंता की बात बनी ही हुई है। खराब मानसून की वजह से पिछली तिमाही (जुलाई-सितंबर) में कृषि क्षेत्र की वृद्धि घट कर 1.2 फीसदी पर आ गयी, जो उससे पहले की तिमाही (अप्रैल-जून) में 3.5 फीसदी थी। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में खपत कमजोर होने की एक वजह यह भी है।

श्रम शक्ति में महिलाओं की कम भागीदारी आर्थिक ही नहीं, सामाजिक और अन्य दृष्टियों से भी चिंता की बात है। इस मामले में हम पड़ोस के बांग्लादेश और पाकिस्तान से भी पीछे हैं। ध्यान रहे, विश्व बैंक का कहना है कि महिलाओं की श्रम शक्ति में भागीदारी बढ़ाकर वृद्धि दर में 1.5 फीसदी तक की बढ़ोतरी की जा सकती है।

अभिमत
आजाद सिपाही

प्रधानमंत्री इस बात को बखूबी समझते हैं कि पढ़ाई और परीक्षा का तनाव छात्रों के लिए अभिशाप है। वह शिक्षा के स्तर को तो सुधार ही रहे हैं, लेकिन 'परीक्षा पे चर्चा' के माध्यम से छात्रों का मनोबल भी बढ़ा रहे हैं, ताकि परीक्षा तनावमुक्त हो और मोदी के गुरु मंत्रों का सीधा फायदा छात्रों को मिले।

निराशा को आशा में बदलने की खिड़की है 'परीक्षा पे चर्चा'

ललित सिंह

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 'परीक्षा पे चर्चा' के दौरान दिया गया उद्बोधन एवं गुरु मंत्र छात्रों के लिए ऐसा आलोक स्तंभ है, जो भविष्य की अजानी राहों एवं परीक्षा के जटिल क्षणों में पांव रखते समय उस आलोक को साथ में रख लिया गया, तो उनके मार्ग में कहीं भी अवरोध, तनाव एवं संकट नहीं आ सकेगा, क्योंकि मोदी के ये गुरुमंत्र उनकी समर्थता, सिद्धता, अनुभव एवं साधना से उपजे हैं, जो छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों और अभिभावकों के लिए भी रामबाण औषधि की तरह हैं।

बोर्ड परीक्षाओं को लेकर छात्रों के अंदर डर और तनाव दोनों होता है। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बच्चों के भीतर से इस डर और तनाव को समाप्त करने के लिए हर साल 'परीक्षा पे चर्चा' कार्यक्रम करते हैं। इस वर्ष भारत मंडपम, आइटीपीओ, नयी दिल्ली में हुए इस अनूठे एवं प्रेरक कार्यक्रम में जहां तकरीबन चार हजार छात्रों ने हिस्सा लिया, वहीं लगभग 2.26 करोड़ रजिस्ट्रेशन हुए थे, जो एक रिकॉर्ड है। यह 'परीक्षा पे चर्चा' का सातवां संस्करण था, जिसमें छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों के साथ प्रधानमंत्री मोदी ने बातचीत करते हुए परीक्षाओं को तनाव का कारण न बनने देने की सीख दी। इस विलक्षण प्रयोग एवं उपक्रम में छात्रों ने अपनी जिज्ञासाओं के पंख खोले। वे परीक्षा से जुड़े अनेक संदेहों, शंकाओं एवं डर को लेकर यहां आये, लेकिन लौटते समय उन चेहरों पर संतोष की झलक थी। उन्होंने कुछ अद्भुत या मौलिक, समाधानकारी एवं प्रभावी पाया या नहीं, लेकिन जितना पाया, वह उनकी उम्मीद से अधिक था। वे ही नहीं, भारत के असंख्य छात्रों एवं परीक्षार्थियों के लिए यह आयोजन नवऊर्जा एवं नयी दिशाओं के उद्घाटन का माध्यम बना है, जहां से छात्रों के जीवन में व्यापक परिवर्तन, उत्साह एवं जिजीविषा की ज्योति प्रज्वलित हुई है।

विद्यार्थी जीवन में आने वाली अनेक समस्याएं प्रायः किसी न किसी रूप में जीवन के दूसरे पड़ाव में भी जरूर आती हैं।

प्रधानमंत्री इस बात को बखूबी समझते हैं कि पढ़ाई और परीक्षा का तनाव छात्रों के लिए अभिशाप है। वे शिक्षा के स्तर को तो सुधार ही रहे हैं, लेकिन 'परीक्षा पे चर्चा' के माध्यम से छात्रों का मनोबल भी बढ़ा रहे हैं, ताकि परीक्षा तनावमुक्त हो और मोदी के गुरु मंत्रों का सीधा फायदा छात्रों को मिले। 'परीक्षा पे चर्चा' की विशेषता यह है कि इससे जुड़े प्रतिभागी किसी खास वर्ग, क्षेत्र, उम्र, जाति या धर्म के न होकर भारत के सभी राज्यों से लेकर विदेश तक के जूनियर और सीनियर कक्षाओं के विद्यार्थी के साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थी होते हैं। प्रधानमंत्री मोदी के संवाद की व्यापकता विद्यार्थियों द्वारा पूछे प्रश्नों के उत्तर में अपनी बात को केवल परीक्षा तक ही सीमित न कर उसे जीवन से जोड़ देती है। विद्यार्थी जीवन में आने वाली अनेक समस्याएं प्रायः किसी न किसी रूप में जीवन के दूसरे पड़ाव में भी जरूर आती हैं।

नरेंद्र मोदी के शब्दों का जादू और भारत की शिक्षा को ऊंचाई तक ले जाने की तड़प ने एक-एक छात्र एवं शिक्षक को भीतर तक हिला दिया। इस अभिक्रम को देख कुछ लोग तो आश्चर्य में डूब गये, क्योंकि मोदी ने शुरुआत में ही कहा कि छात्र पहले से कहीं अधिक नवोन्मेषी हो गये हैं, इसलिए यह कार्यक्रम उनके लिए भी एक परीक्षा की तरह है। उन्होंने माता-पिता से कहा कि आपको किसी बच्चे की तुलना किसी दूसरे से नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यह उसके भविष्य के लिए हानिकारक हो सकता है। कुछ माता-पिता अपने बच्चे के 'रिपोर्ट कार्ड' को अपना 'विजिटिंग कार्ड' मानते हैं, यह ठीक नहीं है। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि प्रतिस्पर्धा और चुनौतियां जीवन में प्रेरणा का काम करती हैं, लेकिन प्रतिस्पर्धा स्वस्थ होनी चाहिए। इसके लिए उन्होंने प्रेरणा, आत्मविश्वास, एकाग्रता, आशा, उत्साह, समय और तनाव प्रबंधन आदि ऐसे अनेक विषयों पर बोला, जो विद्यार्थी से लेकर आम व्यक्ति के जीवन को रोशन करने के लिए जरूरी है।

'परीक्षा पे चर्चा' कार्यक्रम के दौरान मोदी से सवाल हुआ कि छात्रों को प्रेरित करने में शिक्षकों की क्या भूमिका होनी चाहिए और छात्रों को किस तरह से तनावमुक्त रखना चाहिए? मोदी ने कहा कि किसी भी शिक्षक और छात्र के बीच परीक्षा को लेकर सिर्फ नाता नहीं होना चाहिए। अगर ऐसा है तो उसे ठीक करने की जरूरत है। शिक्षक और छात्र का नाता पहले दिन से ही निरंतर प्रगाढ़ता से बढ़ते रहना चाहिए। अगर ऐसा होता है, तो परीक्षा के दिनों में तनाव की नौबत ही नहीं आयेगी। उन्होंने कहा कि बच्चों के तनाव को कम करने में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। इसलिए शिक्षक और छात्रों के बीच हमेशा सकारात्मक रिश्ता रहना चाहिए। शिक्षक का काम सिर्फ जॉब करना नहीं, बल्कि जिंदगी को संवारना है, जिंदगी को सामर्थ्य देना है, यही परिवर्तन लाता है। उन्होंने कहा कि शिक्षक को सिलेबस से आगे बढ़कर छात्रों से संग रिश्ता बनाना चाहिए। इसी से छात्रों के उन्नत, सक्षम, प्रखर एवं चरित्रसंपन्न जीवन की संभावनाओं का धरातल मजबूत होगा और इसी से वे वर्चस्वी और यशस्वी बनेंगे, उनकी रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभा निखरेगी। संभवतः इसी से सशक्त भारत एवं विकसित भारत का सपना आकार ले सकेगा।

ग्रामीण छात्रों की पसंद विज्ञान एवं तकनीकी विषयों की बजाय आर्ट्स विषय ही होना, शिक्षा के प्रति उपेक्षा एवं शिक्षकों की उदासीनता को ही दर्शा रहा है। समस्या गणित या भाषा नहीं है, ग्रामीण क्षेत्रों की पढ़ाई में यह पिछड़ापन अपने देश के लिए कोई नयी बात नहीं। यह चुनौती बड़ी इसलिए है कि नवीन शिक्षा नीति घोषित होने के बावजूद स्कूली पढ़ाई की नियमित प्रक्रिया में इसका इलाज नहीं तलाशा गया है। जाहिर है, विशेष प्रयास करने पड़ेंगे, ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा को प्राथमिकता देनी होगी, अन्यथा दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी बनने की राह पर बढ़ रहे देश के लिए यह चुनौती एक अंधेरा ही है। इसके लिए शिक्षकों एवं छात्रों के रिश्ते को नये आकार में ढालने की अपेक्षा है। भारत जैसे देश में शिक्षा और उसके पढ़ाई के स्तर पर ऐसी कई पेचीदिगियां एवं चुनौतियां हैं। पढ़ाई का स्तर और पढ़ाई के ढंग की वजह का सीधा असर छात्रों के परीक्षा पर पड़ता है। ये भी हकीकत है कि 2014 में केंद्र में मोदी सरकार के आने के बाद से शिक्षा के क्षेत्र में आमूल-चूल परिवर्तन की शुरुआत की गयी है, नयी शिक्षा नीति घोषित की गयी है, लेकिन अभी भी शिक्षा में कई क्रांतिकारी परिवर्तन की जरूरत है। भारत में परीक्षा का तनाव इतना घातक है कि इसके तनाव से छात्र खुदकुशी तक कर लेते हैं। एनसीआरबी के आंकड़ों के मुताबिक परीक्षा में फेल होने के कारण साल 2014 से साल 2020 के बीच कुल 12 हजार 582 छात्रों ने आत्महत्याएं की हैं। आधुनिक शिक्षा के सामने आज अनेक चुनौतियां हैं, जबकि हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरंतर सामंजस्यपूर्ण विकास करके हमारे स्वभाव को परिवर्तित करने का सशक्त माध्यम है। हमने प्राचीन शिक्षा प्रणाली की इन विशेषताओं को भुला दिया है। आजादी के बाद से चली आ रही शिक्षा प्रणाली में शिक्षालय मिशन न होकर व्यवसाय बन गया था। मोदी 'परीक्षा पे चर्चा' से शिक्षा के गौरव को स्थापित करने को भी तत्पर हैं।

'परीक्षा पे चर्चा' में अनेक छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान आकर्षित किया गया, जैसे हाथ से लिखने की आदत का कम होना। आइपैड और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर समय बिताने के कारण बहुत से छात्रों की कलम से कागज पर लिखने की आदत छूट गयी है। दैनिक आधार पर छात्रों को लिखने का अभ्यास करना चाहिए। एक विषय लें और उस पर लिखें और फिर उसमें खुद ही सुधार करें। यह अभ्यास आपको अपनी गलतियों को सुधारने में मदद करेगा और आपको सही तरीके से रणनीति बनाने में भी मदद करेगा। आज परीक्षा में सबसे बड़ी चुनौती हाथ से लिखना ही है। इसके लिए निरंतर लिखने का अभ्यास जरूरी है, क्योंकि अगर आपको तैरना आता है, तो पानी में जाने से डर नहीं लगता। जो प्रैक्टिस करता है, उसे भरोसा होता कि मैं पार कर जाऊंगा। छात्रों एवं परीक्षा के लिए एक स्वतंत्र आयोजन, निश्चित ही दूरगामी सोच का परिणाम है। नरेंद्र मोदी शिक्षा में नये मूल्यों की स्थापना कर उसे सुंदर शक्ल देने की बड़ी जिम्मेदारी मानते हुए ही ऐसे आयोजन को महत्व दे रहे हैं। उनको खुद को इसका बेसब्री से इंतजार रहता है। वे परीक्षाओं को मनोरंजक और तनाव मुक्त बनाने से संबंधित नये-नये तरीके प्रस्तुत कर छात्रों की निराशाओं को अवसरों की खिड़की बना कर उससे ताजी हवा का अहसास कराते हैं।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

जमशेदपुर की खबरें

सिंहभूम चैंबर में देश के केंद्रीय आम बजट-24 का सीधा प्रसारण आज

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। सिंहभूम चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के द्वारा गुरुवार को पूर्वाह्न 10.45 बजे से चैम्बर भवन में भारत सरकार के ह्यूनियन बजट-2024 का सीधा प्रसारण किया जायेगा। इस अवसर पर वित्त और कर विशेषज्ञ इस बजट से व्यापार, उद्योग और आम आदमी पर पड़ने वाले असर पर चर्चा कर अपनी राय दी जायेगी। यह जानकारी अध्यक्ष विजय आनंद मूनका और मानद महासचिव मानव केडिया ने संयुक्त रूप से दी। उपाध्यक्ष सह वित्त और कराधान अधिवक्ता राजीव अग्रवाल और सचिव अधिवक्ता अंशुल रिंगसिया ने बताया, सिंहभूम चैंबर के द्वारा प्रत्येक आम बजट पर इसका सीधा प्रसारण वित्तीय और कर विषय के विशेषज्ञों की उपस्थिति में किया जाता है। इस बार भी इसका आयोजन चैंबर भवन में किया गया। जिसमें चैंबर के सदस्यों के अलावा व्यवसायियों, उद्यमी और प्रोफेशनल्स को आमंत्रित किया गया। ताकि इस कार्यक्रम में उपस्थित रहकर अपने व्यवसाय और उद्योग पर पड़ने वाले असर के बारे में जानकारी हासिल कर इसका लाभ उठा सकें। चैंबर के सदस्यों ने व्यवसायियों और उद्यमियों से अपील करते हुए कहा वे इस आम बजट के सीधा प्रसारण के दौरान चैंबर भवन में उपस्थित होकर विशेषज्ञों द्वारा दिये गये राय का लाभ उठायें। इस अवसर पर अध्यक्ष विजय आनंद मूनका, मानद महासचिव मानव केडिया, उपाध्यक्ष अधिवक्ता राजीव अग्रवाल, अनिल मोदी, पुनीत कांवटिया, अभिषेक अग्रवाल गोल्डी, सचिव अधिवक्ता अंशुल रिंगसिया, भरत मकानी, विनोद शर्मा, सुरेश शर्मा लिपु, कोषाध्यक्ष अनिल अग्रवाल रिंगसिया शामिल रहे।

को-ऑपरेटिव कॉलेज में बीएड के छात्र-छात्राओं के लिए विदाई समारोह का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। को-ऑपरेटिव कॉलेज के शिक्षा संकाय में बीएड के 2021-23 के छात्र-छात्राओं के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया। बुधवार को कार्यक्रम के दौरान कॉलेज के प्राचार्य डॉ अमर सिंह, को-ऑर्डिनेटर ब्रजेश कुमार व विभागाध्यक्ष डॉ राजू ओझा, बर्सर डॉ एके रवानी, डॉ प्रभात कुमार सिंह शामिल हुए। मौके पर अतिथियों के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की गयी। स्वागत भाषण डॉ राजू ओझा के द्वारा किया गया। वहीं सत्र 2022-24 और 2023-25 के छात्र-छात्राओं ने विद्यार्थियों के सम्मान में विदाई गीत प्रस्तुत की। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर संथाली नृत्य प्रस्तुत की गयी। इस अवसर पर राहुल गोप और जंयति को बेस्ट स्टुडेंट चुना गया।

मौके पर कॉलेज के प्राचार्य सहित सभी अतिथियों ने अपनी बातों को रखें। कार्यक्रम को सफल बनाने में कृतिकेष, सुष्मिता, सोभित, भोला, अभितोष सहित विभिन्न स्टुडेंटस का योगदान रहा। इस अवसर पर विभाग के शिक्षक फ्लोरेंस बेक, डॉ इरशाद खान, मनोज कुमार, डॉ विनय पाठक, अजीत दुबे, पूनम कुमारी, बीरूपक्ष महतो, कार्तिक चंद्र साव, भीम राम, अमित जेना, जोबा टुडू समेत सभी शिक्षकेतर कर्मचारी सहित कॉलेज के छात्र-छात्राएं शामिल रहे।

भाजपा ने 'गांव चलो अभियान' और 'शक्ति वंदन' कार्यक्रम पर विस्तारपूर्वक किया विचार-विमर्श

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। भाजपा जमशेदपुर महानगर के जिला पदाधिकारी व जिला अध्यक्षों की बैठक तुलसी भवन के सभागार में आयोजित की गयी। बुधवार को महानगर अध्यक्ष बनने के बाद सुधांशु ओझा के प्रथम बैठक में जिला पदाधिकारी और मोर्चा जिलाध्यक्षों ने गर्मजोशी से स्वागत किया। वहीं बैठक में आगामी कार्यक्रमों की सफलता और बेहतर क्रियान्वयन को लेकर व्यापक चर्चा की गयी। मौके पर भाजपा प्रदेश मंत्री नंदजी प्रसाद शामिल हुए। इस अवसर पर जिलाअध्यक्ष सुधांशु ओझा ने विभिन्न सांगठनिक कार्यों और दायित्वों पर विस्तृत जानकारी ली। बैठक में 'गांव चलो अभियान' और 'शक्ति वंदन' कार्यक्रम समेत अन्य कार्यक्रमों पर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श किया गया। जिलाध्यक्ष ने लोकसभा चुनाव के साथ प्रदेश में भाजपा की मजबूत सरकार बनाने के लिए उपस्थित कार्यकर्ताओं को पूरी तन्मयता के साथ जुटने का आह्वान किया। वहीं प्रदेश मंत्री नंदजी प्रसाद ने पार्टी के 4 से 11 फरवरी तक होने वाले गांव चलो अभियान के निमित्त विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा गांव चलो अभियान के माध्यम से हमें बूथों का सशक्तिकरण करना है। इसके साथ ही 24 घंटे के प्रवास के तहत लोगों से मिलकर उनकी समस्याओं का समुचित समाधान भी करने की दिशा में कार्य करना है। बैठक में जिला उपाध्यक्ष संजीव सिन्हा, जिला महामंत्री अनिल मोदी, जिला मंत्री मंजीत सिंह, नीलू मछुआ, जिला कोषाध्यक्ष राजीव सिंह, कार्यालय मंत्री बोलटू सरकार, मीडिया प्रभारी प्रेम झा, सोशल मीडिया प्रभारी ज्ञान प्रकाश, बिनोद सिंह, आईटी सेल प्रभारी कौस्तव राय, भाजयुमो जिलाध्यक्ष अमित अग्रवाल, ओबीसी मोर्चा जिलाध्यक्ष धर्मेंद्र प्रसाद, किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष मुचिराम बाउरी, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष ज्योति अधिकारी, अनुसूचित जाति मोर्चा जिलाध्यक्ष अजीत कालिंदी, अल्पसंख्यक मोर्चा जिलाध्यक्ष मोहम्मद निसार सहित अन्य उपस्थित रहे।

सीएनजी पंप चालू कराने की मांग को लेकर प्रदर्शन

आजाद सिपाही संवाददाता

चांडिल। नीमडीह थाना अंतर्गत अदारडीह गांव व घाघरा पेट्रोल में सीएनजी चालु करने की मांग को लेकर शिक्षित बेरोजगार टेंपो संघ ने जमकर विरोध प्रदर्शन किया। बुधवार को प्रदर्शन के दौरान सैकड़ो संघ के सदस्य शामिल रहे। मौके पर संघ के अध्यक्ष डाबलू मार्डी ने बताया नीमडीह प्रखंड क्षेत्र में 50 से अधिक सीएनजी वाहन होगाया है। लेकिन क्षेत्र में सीएनजी पंप नहीं है। जिसके कारण चालक को 30 किलोमीटर दूर चांडिल प्रखंड के आसनबनी में जाकर सीएनजी गैस भरना पड़ता है। इसके कारण वाहन मालिकों को अतिरिक्त आर्थिक बोझ उठाना पड़ता है। वहीं सचिव उत्तम नाग ने बताया भारत पेट्रोलियम और इंडियन ऑयल का मिलाकर तीन पेट्रोल पंप है। दो पंप पर सीएनजी गैस का टंकी भी लगाया गया। लेकिन पंप चालू नहीं होने पर वाहन चालक परेशानी उठाने में मजबूर है। संघ के सभी कार्यकर्ताओं का मांग है जल्द सीएनजी पंप खोला जाये ताकि चालकों को सुविधा मिल सके। इस अवसर पर उपाध्यक्ष प्रकाश दास, मिलन कर्मकार, तपन नाग, लुधा कर्मकार, जयंत प्रमाणिक, बाबलू महतो, झंटु नाग, दिनेश मधार्ना, सुभाष माहली, संजय गोप, मयना गोस्वामी, गोवर्धन महतो, सिस्टी महतो, संदीप दास, मंगल मुदी सहित अन्य ऑटो चालक शामिल रहे।

अमरेंद्र को डीआइजी ने शॉल ओढ़ाकर किया सम्मानित

रंका। 75वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में रंका अनुमंडल मुख्यालय के स्वयंसेवक समाजसेवी अमरेंद्र कुमार को पुलिस उप महा निरीक्षक (डीआईजी) राजकुमार लकड़ा और गढ़वा पुलिस अधीक्षक दीपक कुमार पांडेय के द्वारा शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। ज्ञात हो कि काफी समय से अमरेंद्र कुमार के द्वारा समाजसेवा के क्षेत्र में यथा शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, रक्तदान, बाल विवाह, कोरोना वारियर्स, दवा वितरण में अहम भूमिका निभा रहे हैं। इस मौके पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी संतोष कुमार, रंका थाना प्रभारी शंकर प्रसाद कुशवाहा सहित काफी संख्या में पुलिस पदाधिकारी उपस्थित थे।

शादी का झांसा देकर नाबालिग को किया प्रेग्नेंट, आरोपी गिरफ्तार

लड़की 5 माह की प्रेग्नेंट। लड़की ने शादी करने के लिए कहीं, तो युवक ने शादी करने से किया इंकार

आजाद सिपाही संवाददाता

बरडीहा। बरडीहा थाना पास्को एक्ट के प्राथमिक कि अभियुक्त विकास कुमार यादव को बरडीहा पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। मिली प्राप्त जानकारी के अनुसार विकास कुमार बरडीहा थाना क्षेत्र के एक नाबालिग लड़की को शादी का झांसा देकर कई महिनों तक शारीरिक संबंध बनाया। इसी बीच लड़की 5 माह के प्रेग्नेंट हो गयी। इसके बाद लड़की शादी करने के लिए कहीं तो युवक शादी करने से इंकार कर दिया। जबकि पीड़ित लड़की और लड़का दोनों एक ही जाति के बताये गये। जिसको लेकर थाना में लिखित आवेदन दिया। इधर इस संबंध में जानकारी देते हुए थाना प्रभारी पवन कुमार ने बताया कि थाना कांड संख्या 11/24 के अंतर्गत धारा 376 (2) भादवि और पर पोक्सो एक्ट तहत 30 जनवरी को प्राथमिक की दर्ज किया गया। इसके बाद प्राथमिकी अभियुक्त विकास कुमार यादव पिता उपेंद्र यादव ग्राम + थाना मेराल जिला गढ़वा निवासी को 31 जनवरी को न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। वहीं पीड़ित लड़की को मेडिकल जांच करायी गयी।

अलखनाथ पांडेय ने पूर्व बीडीसी सदस्य के पिता के निधन पर जताया शोक

गढ़वा (आजाद सिपाही)। सदर प्रखंड के करुआकला गांव निवासी भाजपा नेता पूर्व बीडीसी सदस्य धनंजय तिवारी के पिता के निधन होने के पश्चात वरिष्ठ भाजपा नेता सह पलामू लोक सभा के सह संयोजक अलखनाथ पांडेय, भाजपा नेता मुकेश निरंजन सिन्हा, सांसद प्रतिनिधि प्रमोद चौबे, ब्रजेश उपाध्याय, विजय चौबे, चंद्रमणि धर दुबे, चंदन जायसवाल, सीधी उपाध्याय, लक्ष्मण उपाध्याय, रंगनाथ पांडेय, शिवनारायण चंद्रा, राम सरीख चंद्रा, पुष्प रंजन, रोशन धर दुबे, शैलेश चौबे, नरेंद्र तिवारी, विनोद तिवारी सहित अन्य गढ़वा जिला के वरिष्ठ नेता गण, समाजसेवी गण और अन्य लोग उपस्थित होकर धनंजय तिवारी के पिता के पार्थिव शरीर को संयुक्त रूप से श्रद्धांजलि दिया। उपस्थित सभी भाजपा नेता द्वारा उनके अंतिम संस्कार में भी शामिल हुए। मौके पर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए संयुक्त रूप से भगवान से प्रार्थना की गयी।

पूर्व तट रेलवे

निविदा सूचना सं. MSM-ROH-SLRA-1-24

कार्य का नाम : चार वर्षों की समयावधि हेतु सरला स्थित कोचिंग डिपो के संचालन एवं रख-रखाव के साथ रूटीन ओवर हॉलिंग (ROH) और वैगनों की मरम्मत।

कार्य की अनुमानित लागत (₹): 29,16,40,191.61, EMD (₹): 16,08,200/-, निविदा दस्तावेज की लागत (₹): 11,800/-, पूरा होने की अवधि : 48 महीने ।

निविदा बंद होने की अंतिम तिथि व समय : दिनांक - 19.02.2024 को 1500 बजे।

इस निविदा के लिए मैनुअल प्रस्ताव की अनुमति नहीं है। इस तरह प्राप्त मैनुअल प्रस्ताव पर ध्यान नहीं दिया जायेगा।

निविदा दस्तावेज सहित संपूर्ण विस्तृत विवरण वेबसाइट https://www.ireps.gov.in में उपलब्ध होंगे।

सीनियर डिवीजनल मैकेनिकल इंजीनियर, सम्बलपुर

PR-1042/O/23-24

देश-विदेश की खबरों के लिए क्लिक करें

www.azadsipahi.in

'चलें गांव की ओर' कार्यक्रम का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। भाजपा नगर मंडल गढ़वा अध्यक्ष उमेश कश्यप की अध्यक्षता में नगर मंडल कार्यालय रुकमणी साहून धर्मशाला पुरानी बाजार में प्रदेश के द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम 'चलें गांव की ओर' का बैठक किया गया। मंडल प्रभारी भाजपा जिला उपाध्यक्ष हरेंद्र द्विवेदी के उपस्थिति में पंडित दीनदयाल उपाध्याय और श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्पांजलि कर और वंदे मातरम के शुरूआत से बैठक का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री यशवंत मिश्रा के द्वारा किया गया। बैठक में अध्यक्ष द्वारा विषय प्रवेश पर प्रकाश डाला गया और प्रभारी द्विवेदी के द्वारा बताया गया कि प्रदेश के द्वारा जो हम लोगों को टास्क दिया गया है। लोकसभा चुनाव के तहत मिशन 400 सीट हम सभी कार्यकर्ताओं को एक रात गांव में मतदाता के बीच बिताना है और सरकार के उपलब्धियां का चर्चा करना है। कहा कि हर बूथ के लिए एक प्रभारी और संयोजक नियुक्त करना है, हर बूथ पर जीत दर्ज हो ऐसा संकल्प लेकर हम सबको टीम भावना से काम करना है। मंडल अध्यक्ष उमेश कश्यप ने कहा कि सभी वार्ड के नियुक्त प्रभारी के नाम वार्ड नंबर 01 अनवर शाह 2 गौरी शंकर बिंद 3 गांधी पासवान 4 सुप्रीत केसरी 5 कैलाश कश्यप 6 उमेश कश्यप 7 बंधु राम 8 रविंद्र जायसवाल 9 दीपक तिवारी 10 संजय केसरी 11.आशीष कश्यप 12 संतोष कश्यप 13. यशवंत कुमार मिश्रा 14.राकेश शंकर गुप्ता 15. दामोदर गुप्ता 16.लखन गुप्ता 17. विनय गोंड 18. प्रवीण जायसवाल 19.चंदन जायसवाल 20. टिंकू गुप्ता 21. राजू सोनी इसी प्रकार सभी लोग मिलकर 21 वार्ड के दायित्वों का निर्वहन करेंगे अध्यक्ष उमेश कश्यप ने कहा और हम सभी मिलकर मोदी जी के संकल्प को साकार करेंगे और हर बूथ जीतेंगे, यही हमारा संकल्प है। अंत में धन्यवाद ज्ञापन कैलाश कश्यप के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित कैलाश कश्यप राकेश शंकर गुप्ता, गौरी शंकर बिंद, संजय केसरी, संतोष कश्यप, संतोष राम, विशाल, आशीष कश्यप, सोमनाथ सोनी, अनवर साह आदि लोग उपस्थित थे।

संबद्ध डिग्री महाविद्यालय महासंघ के पदाधिकारियों ने किया तीन दिवसीय दौरा

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। संबद्ध डिग्री महाविद्यालय महासंघ नीलांबर-पीतांबर विवि इकाई की ओर से महासंघ के पदाधिकारियों द्वारा विभिन्न संबद्ध महाविद्यालयों में तीन दिवसीय दौरा किया गया। इस क्रम में महासंघ अध्यक्ष विवेकानंद उपाध्याय, महासचिव बंशीधर सिंह तथा कोषाध्यक्ष आलोक कुमार पाठक के द्वारा बनवारी साहू महाविद्यालय लातेहार, एमके कॉलेज डंडार कला पांकी, एके सिंह कॉलेज जपला, बीएसएम कॉलेज भवनाथपुर तथा एसपीडी कॉलेज गढ़वा में दौरा किया गया।

इस क्रम में उक्त महाविद्यालय के कर्मियों ने एक स्वर से संगठनात्मक मजबूती के लिए सभी कॉलेजों की ओर से सामूहिक प्रयास करने पर सहमति जतायी गयी। साथ ही निर्णय लिया गया कि महासंघ द्वारा 2019 से जो ग्यारह सूत्री मांग किया जा रहा है, उस मांग पर अब तक विश्वविद्यालय के अधिकारियों द्वारा सकारात्मक पहल नहीं किया जाना खेद का विषय है। बैठक के दौरान विशेष रूप से अब तक संबद्ध महाविद्यालय को सिंडिकेट में प्रतिनिधित्व नहीं दिये जाने पर कालेज कर्मियों ने असंतोष जताया तथा कहा कि इस दिशा में सकारात्मक पहल करने के लिए महासंघ की ओर से विश्वविद्यालय पर दबाव दिया जायेगा। कर्मियों ने इस दौरान विवि द्वारा उत्तर पुस्तिका मूल्यांकन कार्य, प्रश्न पत्र चयन कार्य की बकाया राशि की भुगतान कराने की मांग की गयी। साथ ही इनविजीलेटर, होल्टेज आदि में वृद्धि करने की मांग की गयी। महाविद्यालय के विजिट के दौरान एके सिंह कॉलेज जपला के प्राचार्य और महासंघ के संरक्षक सूर्यमणि सिंह, प्रो. अशोक सिंह, संगठन सचिव डॉ आलोक कुमार, एमके कॉलेज पांकी के प्राचार्य तथा महासंघ के संरक्षक डा. दिलीप राम, राजीव, एसपीडी कॉलेज गढ़वा के प्राचार्य प्रो. निकलेश चौबे, डॉ. अरुण तिवारी, प्रो. परवेज आलम, प्रो. अर्जुन प्रसाद, प्रो. नीलम गुप्ता, प्रो. केबी अंसारी, सचिन चौबे आदि ने अपने-अपने विचार रखें।

महिलाओं के लिए पेंशन पाने की उम्र सीमा घटाकर 50 वर्ष की गयी : बीडीओ

आजाद सिपाही संवाददाता

मेराल। झारखंड सरकार ने महिलाओं के लिए पेंशन पाने की उम्र सीमा मौजूदा 60 वर्ष से घटाकर 50 वर्ष करने का निर्णय लिया है। बीडीओ जागो महतो ने बुधवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सरकार के निर्णय पर राज्यपाल का लगाते ही सर्वजन पेंशन के लिए लाभुकों की उम्र सीमा में परिवर्तन किया गया है। उन्होंने कहा कि सभी वर्ग की महिलाओं को पेंशन के लिए 60 वर्ष से घटाकर 50 वर्ष कर दिया गया है साथ ही एसटी तथा एससी वर्ग के पुरुष के उम्र में भी संशोधन किया गया है। संशोधन के बाद एसटी तथा एससी वर्ग के पुरुष की उम्र सीमा 60 वर्ष से घटकर 50 वर्ष कर दी गयी है। 50 वर्ष से 59 वर्ष आयु वाले लोगों को पेंशन का लाभ लेने के लिए अंचल द्वारा निर्गत जाति प्रमाण पत्र संलग्न करना अनिवार्य होगा। बीडीओ श्री महतो ने बताया कि सर्वजन पेंशन का लाभ लेने के लिए आवेदन पत्र के साथ दो फोटो, बैंक अकाउंट, आधार कार्ड तथा मतदाता पहचान पत्र संलग्न करना होगा। 60 वर्ष या उससे अधिक उम्र सीमा वाले लोगों को जाति प्रमाण पत्र संलग्न करने की आवश्यकता नहीं होगी। उन्होंने बताया कि सप्ताह में मंगलवार तथा शनिवार को प्रखंड कार्यालय आकर सर्वजन पेंशन के लिए आवेदन स्वयं जमा करना होगा। गुरुवार को पंचायत दिवस के अवसर पर आवेदन की समीक्षा कर लाभुकों का चयन किया जाएगा। शारीरिक रूप से असमर्थ लोगों के घर जाकर जांच के बाद उन्हें पेंशन की स्वीकृति प्रदान की जायेगी ताकि उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

गर्ल्स हाइस्कूल में चलाया गया सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। सड़क सुरक्षा माह 2024 के अंतर्गत जिला परिवहन पदाधिकारी महोदय के द्वारा गर्ल हाई स्कूल गढ़वा में गढ़वा में छात्राओं और शिक्षकों को सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया गया। जिला परिवहन पदाधिकारी महोदय द्वारा स्कूल में 115 छात्राओं और शिक्षकों को बताया गया कि वाहन चलाते समय हेलमेट और सीट बेल्ट जैसे सुरक्षित उपकरणों के इस्तेमाल से कैसे सड़क पर होने वाले दुर्घटनाओं को कम किया जा सकता है और अपनी और यातायात का उपयोग कर रहे अन्य व्यक्तियों के जान की रक्षा की जा सकती है। सड़क सुरक्षा के सदस्यों ने वाहन चलाते समय मोबाइल का उपयोग करना कितना खतरनाक हो सकता है, के बारे में जानकारी दी। साथ ही उन्होंने अपील किया कि वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग ना करें और सीट बेल्ट का प्रयोग करने हेतु परिवार और छात्र-छात्राओं और शिक्षकों को प्रेरित करें। जागरूकता अभियान के क्रम में यातायात नियम का कड़ाई से पालन करने के लिए सभी छात्र-छात्राओं और शिक्षकों के बीच शपथ ग्रहण करवाया गया। इसके अलावे दुर्घटना से पीड़ित व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाने वाले अस्पताल में अपना नाम दर्ज कराये, ताकि चिकित्सक प्रमाणित कर सकें कि घायल व्यक्ति को किसने मदद की है उस मददकर्ता को गुड सेमेरिटन के तहत 2,000 रु और प्रशस्ति पत्र दी जा सके। साथ ही सड़क हादसों में मृत्यु दर को कम करने के उदेश्य से लोगों को इस संशोधित अधिनियम की ज्यादा से ज्यादा जानकारी प्रदान की जा सके और लोग एक दूसरे को इसके प्रति जागरूक कर सके और इसके साथ साथ हिट एंड रन के बारे में बिस्तार पूर्वक बतलाया गया। किसी अज्ञात वाहन से दुर्घटना घटित होने पर 2,00000 (दो लाख) और गंभीर रूप से घायल होने पर 50,000 (पचास हजार) का प्रावधान है। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान मुख्य रूप से मोटरयान निरीक्षक लाल बिहारी यादव, पुलिस कंट्रोल रूम प्रभारी इंस्पेक्टर अर्जुन पासवान, सड़क सुरक्षा प्रबंधक संजय बैठा, शिक्षक शामिल थे।

एआइएमआइएम पार्टी ने कार्यकर्ता सम्मेलन का किया आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन पार्टी के तत्वावधान में कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया। पार्टी के जिला कार्यालय में आयोजित इस सम्मेलन में ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। सम्मेलन के दौरान पार्टी के जिला और प्रखंड पदाधिकारियों ने बारी-बारी से पार्टी और लोक हित से संबंधित बात रखी। साथ ही गढ़वा जिला के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने भी अपनी बात रखी। इस दौरान पलामू प्रमंडल प्रभारी सह गढ़वा रंका विधानसभा प्रभारी डॉ. एमएन खान ने कहा कि आज का कार्यकर्ता सम्मेलन मिशन 2024 को आयोजित किया गया है। उन्होंने एआईएमआईएम पार्टी को सिर्फ मुस्लिम समुदाय के पार्टी से खारिज करते हुए सभी का पार्टी बताया। उन्होंने कहा कि यह पार्टी मुस्लिम, इसाई, सीख, जैन, परसी, हिंदु सहित अन्य समुदायों के दबे-कुचले लोग, गरीब लोग, बेरोजगार सहित अन्य लोगों की के है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार, कदाचार, परिवारवाद, जातिवाद वाले लोगों के हाथ में देश की सत्ता है। जहां पर इंसाफ हो ही नहीं सकता। मौके पर पलामू प्रमंडल प्रभारी सह गढ़वा रंका विधानसभा प्रभारी डॉ. एमएन खान, जिला अध्यक्ष सत्येंद्र कुमार रजक, जिला महासचिव रमजान अंसारी, जिला युवा अध्यक्ष मोजाहिम अंसारी, जिला प्रवक्ता अब्दुर्रहमान अंसारी, जिला सोशल मीडिया प्रभारी मजहर हुसैन रजवी, जिला युवा सचिव अवध कुमार मेहता, रंका प्रखंड अध्यक्ष इबरान अंसारी, मेराल प्रखंड अध्यक्ष फारूक अंसारी, रंका युवा प्रखंड अध्यक्ष खुशदील अंसारी आदि मौजूद थे।

कई लोगों ने दूसरे दलों को छोड़ कर एआईएमआईएम का दामन थामा: एआईएमआईएम के तत्वावधान में आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन में कई लोगों ने दूसरे दलों को छोड़ कर एआईएमआईएम का दामन थामा। एआईएमआईएम की सदस्यता ग्रहण करने वाले लोगों ने कहा कि वे एआईएमआईएम पार्टी की नीति और सिद्धांतो से प्रभावित होकर वे लोग इस पार्टी के दामन थामे हैं।

लोहरदगा में दिन दहाड़े युवक की चाकू मारकर हत्या, पुलिस कर रही है जांच

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। लोहरदगा शहरी क्षेत्र के कोर्ट रोड स्थित एक सनसनीखेज मामला प्रकाश में आया है, जहां एक युवक को कुछ अज्ञात अपराधियों ने घर में जाकर चाकू से हमला कर उसे मौत के घाट उतार दिया। युवक को चाकू मारने के बाद आरोपी तुरंत घटनास्थल से फरार हो गये। इस घटना में युवक की मौत हो गयी। मृतक की पहचान कोर्ट रोड निवासी सचित उरांव के रूप में हुई है। बताया जाता है कि सचित अपने घर में था, इसी दौरान कुछ अज्ञात अपराधियों ने उसके घर जाकर उसके शरीर के कई हिस्सों पर चाकू से प्रहार कर दिया, जिससे वह बुरी तरह चोटिल हो गया। आनन फानन में घायल की पत्नी ने उसे इलाज के लिए सदर अस्पताल ले गयी, जहां उसकी मौत हो गयी। घटना के बाद सदर थाना पुलिस मामले की छानबीन में जुड़ गयी है।

आग लगने से खपरैल मकान जलकर हुआ खाक

भवनाथपुर (आजाद सिपाही। थाना क्षेत्र अंतर्गत सिंदुरिया पंचायत के शिवनगर टोला निवासी रामबहल अगरिया के खपरैल मकान में बुधवार की दोपहर आग लगने से घर जलकर राख हो गया। इस अगलगी की घटना में पीड़ित के घर में रखा हुआ अनाज और कपड़ा पूरी तरह जल गया। घर से अचानक आग की लपटे उठता हुआ देख आस पास के ग्रामीण जमुना सिंह, बबन बैठा, जोखन यादव, अशोक यादव, उपेंद्र यादव, आशीष यादव सहित कई ग्रामीणों ने आग बुझा।परिजनों ने बताया की आग कैसे लगी हमें भी पता नहीं है, इसकी जानकारी पंचायत के मुखिया नंदलाल पाठक को दिया गया है। इस घटना की सुचना मिलने पर थाना प्रभारी रामेश्वर उपाध्याय घटना स्थल पहुंच कर परिजनों से पूछताछ की। मुखिया नंदलाल पाठक ने कहा कि जो क्षति हुई है उसे सरकार से दिलाने का प्रयास करेंगे।

कर्पूरी ठाकुर गरीबों, शोषितों और दलितों की आवाज थेः रामचंद्र केशरी

झारखंड में जहां-जहां जननायक कर्पूरी ठाकुर की मूर्तियां है, वहां जन्मदिन और पुण्यतिथि के अवसर पर सरकारी कार्यक्रम आयोजित किया जाये और जन्मदिन पर अवकाश घोषित किया जाये

आजाद सिपाही संवाददाता

श्री बंशीधर नगर। पूर्व मंत्री सह भाजपा नेता रामचंद्र केशरी ने जननायक कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देकर बरसों पुरानी प्रस्तावित मांग पूरा करने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया है। श्री केशरी अपने आवास पर प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के द्वारा जननायक कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देकर सम्मानित करना हम सबों की पुरानी मांग थी, जिसे भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरा किया, साथ ही बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार तथा उनके पार्टी जदयू को एनडीए गठबंधन में शामिल करने के लिए भी प्रधानमंत्री मोदी को रामचंद्र केशरी ने धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि बिहार में एनडीए के मुख्यमंत्री बनने पर नीतीश कुमार और उनकी सरकार को बहुत-बहुत बधाई। श्री केशरी ने कहा कि जननायक कर्पूरी ठाकुर को प्रधानमंत्री जी के द्वारा उनके जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर भारत रत्न से सम्मानित करने की घोषणा के साथ ही बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा प्रधानमंत्री को धन्यवाद देने तथा जननायक कर्पूरी ठाकुर की बातों को अमल करते हुए परिवारवाद से दूर रहने जैसे बातों को कहा, इन बातों को अपने साथ भी जोड़ा, जिस पर राजद नेता के परिवार भड़क गये तथा नीतीश कुमार को भद्दी - भद्दी बातें कहने लगे। श्री केसरी ने बताया कि डॉक्टर लोहिया कर्पूरी विचार केंद्र के तहत जननायक कर्पूरी ठाकुर के जन्मदिन के पूर्व संध्या 23 जनवरी 2002 को झारखंड रांची के हिंनू में जननायक कर्पूरी ठाकुर की आदमकद प्रतिमा का अनावरण भारत सरकार के रेल मंत्री नीतीश कुमार के द्वारा किया गया था। उक्त अवसर पर मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी तथा विधि मंत्री रामजीलाल शारदा आदि काफी गण्यमान्य लोग झारखंड बिहार से उपस्थित थे। उसके पूर्व में अनावरण की तैयारी की बैठक हुई थी, उसी बैठक में डॉक्टर लोहिया कर्पूरी विचार केंद्र के अध्यक्ष होने के नाते मेरे ही अध्यक्षता में जननायक कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देने का प्रस्ताव पारित किया गया था। तथा समय-समय पर बराबर इसकी मांग करते हम सब रहे हैं, जिसके परिणाम स्वरूप आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा कर्पूरी ठाकुर जी को भारत रत्न का सम्मान दिया गया।

उन्होंने कहा कि जननायक कपूर्री ठाकुर गरीबों, शोषितो, वंचितो, दलितो की आवाज को बुलंद करने वाले नेता थे। उन्होंने कहा कि वह मांग करते हैं कि झारखंड में जहां-जहां जननायक कर्पूरी ठाकुर की मूर्तियां है, वहां जन्मदिन और पुण्यतिथि के अवसर पर सरकारी कार्यक्रम आयोजित किया जाये और जन्मदिन पर अवकाश घोषित किया जाये। मौके पर मथुरा पासवान, सोबराती अंसारी, सलीम अंसारी, राजेश विश्वकर्मा सहित अन्य लोक उपस्थित थे।

कबीसवा में ट्रैक्टर दुर्घटना में चालक की मौत

धुरकी (आजाद सिपाही)। धुरकी थाना क्षेत्र के रक्सी पंचायत अंतर्गत धुरकी बेलासपुर मुख्य पथ स्थित कबीसवा में मंगलवार की मध्यरात्रि में एक ट्रैक्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। वहीं ट्रैक्टर दुर्घटना में चालक गंभीर रूप से घायल हो गया, जो इलाज के क्रम में चालक की मौत बंशीधर नगर रेफरल अस्पताल मे हो गयी। ट्रैक्टर दुर्घटना के संबंध थाना प्रभारी संतोष कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि रात्री में घघरी गांव निवासी लव जायसवाल का खाली ट्रैक्टर वापस घर लौट रहा था। इसी दौरान कबीसवा में मुख्य पथ मे रात्रि में ट्रैक्टर का चालक तीव्र गति में चलने के क्रम मे असंतुलित होकर पलट गयी। वहीं शुरू गांव निवासी ट्रैक्टर का चालक अजीत कोरवा 30 वर्ष पिता विनोद कोरव ट्रैक्टर पलटने से गंभीर रूप से घायल हो गया था, इसके बाद पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर घायल चालक को इलाज के लिए अस्पताल मे भर्ती कराया जिसका इलाज के दौरान चालक की मौत हो गयी। उपरोक्त घटना के संबंध मे स्थानीय लोगों ने बताया कि कबीसवा मोड़ पुरी तरह अंधा मोड़ है वहीं इस घटना से पुर्व तीनबार उक्त स्थल पर दुर्घटना हो चुकी है। इधर पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर अंत्यपरीक्षण के लिए गढ़वा भेज दिया है। वहीं दुर्घटनाग्रस्त ट्रैक्टर को पुलिस ने जब्त कर थाना परिसर में लगा दिया है। इधर मृतक के परिजनों ने अभी तक किसी तरह की मामले को लेकर मामला दर्ज नही कराया है।

बेसिक कार्यक्रम को लेकर प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन और जिला प्रशासन के बीच एमओयू

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। उपायुक्त लोकेश निश्रा की अध्यक्षता में प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन और जिला प्रशासन के बीच बेसिक कार्यक्रम के संचालन के लिए बुधवार को एमओयू पर हस्ताक्षर किये गये। ज्ञात हो कि खूंटी जिले के सभी मध्य विद्यालयों में कक्षाडह से आठ तक के बच्चों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान सुनिश्चित करने के लिए प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन और जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में बेसिक कार्यक्रम की शुरूआत की गयी है। उपायुक्त के निर्देश पर अनुमंडल पदाधिकारी खूंटी की अध्यक्षता में बेसिक(बेसलाइनएडवांसमेंट ऑफ स्टूडेंट्स फॉर इम्प्रूव्ड कैपेसिटी) कार्यक्रम के संचालन के संबंध में बैठक आहूत की गयी। बेसिक कार्यक्रम को पूरे जिले में लागू करने से पहले कर्रा प्रखण्ड के सभी मध्य विद्यालयों में एक पायलट के रूप में लागू किया गया था, जिसमें 60 दिनों की बेसिक कक्षा संचालन के उपरांत बच्चों में सीखने सिखाने एवं विद्यालय के वातावरण में उत्साहजनक परिणाम प्राप्त हुए है। इरा बेसिक कार्यक्रम के आगे की रूपरेखा एवं इस कार्यक्रम के सुचारू संचालन की रणनीति पर चर्चा करने के लिए अनुमंडल पदाधिकारी की अध्यक्षता में कोर ग्रुप की बैठक हुई, जिसमें जिला शिक्षा अधीक्षक, अतिरिक्त जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, सभी सहायक कार्यक्रम पदाधिकारी के साथ। फेलो कृष्णा के अलावा राज्य प्रमुख एवं कार्यक्रम समन्वयक शामिल हुए। बैठक में कार्यक्रम की आवश्यकता, लक्ष्य एवं रामयावधि, कर्रा प्रखण्ड में जिन विद्यालयों में औसतन कम परिणाम प्राप्त हुए उनके कारणों को रामझना तथा उनके बेहतरी के लिए कार्य करना, प्रखंड-संकुल साधनसेवी की भूमिका उनके प्रशिक्षण व उनके द्वारा संचालित प्रैक्टिस क्लास, शिक्षक प्रशिक्षण की तिथि सहित कई विंदुओं पर चर्चा की गयी।

अशोक परियोजना के उत्खनन विभाग ने सम्मान समारोह सह वनभोज का आयोजन किया

पिपरवार (आजाद सिपाही)। पिपरवार क्षेत्र के बचरा दामोदर नदी तट पर अशोक परियोजना के उत्खनन विभाग के द्वारा सम्मान समारोह सह वनभोज कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्टॉफ आफिसर उत्खनन जीएसपी शर्मा और संचालन मुबारक हुसैन एंव दिलिप महतो ने संयुक्त रूप से किया। इस कार्यक्रम मे सबसे पूर्व अशोक परियोजना से सेवानिवृत हुए चीफ स्टोर कीपर मोहम्मद युनुस अंसारी को सम्मान के साथ विदाई दी गयी। कार्यक्रम मे उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों ने सेवानिवृत मोहम्मद यूनुस को माला पहनकर और बुके देकर स्वागत किया, जिसके बाद शॉल और उपहार प्रदान कर उन्हें विदाई दी गयी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपस्थित वक्ताओं ने मोहम्मद यूनुस के कार्यकाल की प्रशंसा करते हुए उनके उज्जवल एवं सुखमय जीवन की कामना की। वही मोहम्मद यूनुस ने भी अपने 40 वर्ष के कार्यकाल के अनुभव के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन कार्मिक प्रबंधक हेमचंद महतो ने किया। अंत में सभी अधिकारी और कर्मचारियों ने एक साथ बैठकर सामूहिक भोज का आनंद उठाया। वही सेवानिवृत कर्मचारी मोहम्मद यूनुस अंसारी के द्वारा सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। इस मौके पर स्टाफ ऑफिसर एक्सावेशन जीएसपी शर्मा,परियोजना अभियंता उत्खनन मिथिलेश कुमार, शंभु शरण, कार्मिक प्रबंधक शिशिर गर्ग, हेमचंद महतो, जगदीश मंडल, सुनील कुमार यादव, कौशल आर्या, आरपी सिंह, स्वरूप सन्यामत, बासुदेव साव, दिलिप महतो, आबिद हुसैन, अशोक कुमार महतो, मुबारक हुसैन, मनोज सिंह, अब्दुल अंसारी, सुशील यादव, फुलेश्वर महतो, नागेश्वर राम, रामदयाल उरांव, सलीम जावेद, बिनोद तुरी, चमटु गंझु, बलकु गंझु, बबलु गड़ेरी, मिन्टु कुमार, दिलिप सिंह, मोहम्मद समसुदीन, मोहम्मद शमीम, मोहम्मद खुर्शीद, शिवलाल महतो सहित कई अधिकारी और कर्मचारी मौजूद थे।

भंडारे के साथ पांच दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा सह हनुमत यज्ञ का समापन

धार्मिक आयोजनों से सामाजिक एकता को बढ़ावा मिलता है: कोचे

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। कर्रा प्रखंड के गुमडू गांव में गत 27 जनवरी से जारी हनुमान मंदिर का पांच दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा समारोह पूणार्हुति, महा आरती और भंडारे के साथ संपन्न हो गया। आचार्य प्रेम नारायण त्रिपाठी और राघव शरण पांडेय के नेतृत्व में बनारस से पधारे 31 पुरोहितों और बटुकों ने वैदिक विधि-विधान से सभी धार्मिक संपन्न कराये। हनुमत यज्ञ के अंतिम दिन तोरपा के विधायक कोचे मुडा, जरियागढ़ राजपरिवार के सदस्य और समाजसेवी लाल विजय नाथ शाहदेव और भाजपा के गोवंदपुर मंडल अध्यक्ष रामध्यान सिंह ने भी श्रद्धालुओं के बीच भंडारे के प्रसाद का वितरण

किया। मौके पर विधायक ने कहा कि ऐसे आयोजनों से धर्म के प्रति लोगों की धर्म के प्रति आस्था तो बढ़ती ही है, सामाजिक एकता को भी बल मिलता है। उन्होंने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजनों से सनातन धर्म को बढ़ावा मिलता है। इसके पूर्व 27 जनवरी को नवनिर्मित मंदिर परिसर से भव्य कलश यात्रा निकाली गयी थी, जिमसें 1001 महिलाओं के अलावा सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया था। पांच दिवसीय महायज्ञ के दूसरे दिन जलाधिवास और न्यास, तीसरे दिन फल-पुष्प अधिवास, मूर्ति न्यास, चौथे दिन घृताधिवास और मूर्ति न्यास और प्राण प्रतिष्ठा और रात्रि में अखंड कीर्तन का आयोजन किया गया था। महायज्ञ को सफल बनाने में समिति के अध्यक्ष विनोद सिंह, सचिव श्याम पाठक, कोषाध्यक्ष अशोक सिंह, प्रताप सिंह, रामशरण सिंह, जयप्रकाश सिंह, विशाल सिंह, अंकित सिंह, संतोष सिंह, आनंद सिंह, अमित सिंह, देवंती देवी, गंधारी देवी, विमला देवी सहित पूरे गुमडू गांव के लोगों ने योगदान दिया। मौके पर समाजसेवी डॉ हरहिर पाठक, भतत्व विभाग के पूर्व निदेशक और जेएमसीएल के महाप्रबंधक विजय कुमार ओझा, झारखंड के बालू पभारी धर्मेंद्र मेहता, जितेंद्र प्रसाद, केशव कुमार पाठक, महेंद्र शर्मा,, उमेश गोप, सुरेंद्र गोप, विनय कुमार गुप्ता सहित काफी संख्या में विभिन्न गांवों के श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।

खूंटी में तीन से पांच फरवरी तक होगा देश भर के कृषि वैज्ञानिकों का जुटान

अर्जुन मुंडा करेंगे पूर्वी क्षेत्र किसान मेला का उद्घाटन

नौ राज्यों के किसान लेंगे भाग

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। जिले के तोरपा स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में तीन से पांच फरवरी तक देश भर के कृषि वैज्ञानिकों का जुटान होगा। तीन फरवरी से शुरू हो रहे पूर्वी क्षेत्र किसान मेला में नौ राज्यों के किसान भी भाग लेंगे। मेला का उद्घाटन केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री अर्जुन मुंडा तीन फरवरी कों करेंगे। पांच फरवरी को समापन सत्र में राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन मुख्य अतिथि के तौर पर भाग लेंगे। चार

फरवरी को पूर्व लोकसभा उपाध्यक्ष कड़िया मुंडा और विकास और विकास भारती के सचिव अशोक भगत उपस्थित रहेंगे। इस संबंध में कृषि विाान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ राजन चौधरी ने बताया कि किसान मेला में विभिन्न सस्थानों और संस्थाओं द्वारा कृषि एवं इससे संबंधित 150 से ज्यादा स्टॉल लगाए जायेंगे। इसमें खेती से संबंधित विभिन्न विषयों उन्नत कृषि पद्धति, बागवानी, पशुपालन, मत्स्यपालन, मधुमक्खी पालन, लाख एवं तसर उत्पादन आदि पर किसान गोष्ठियों का आयोजन किया जायेगा तथा कृषकों की समस्याओं का तत्काल समाधान वैज्ञानिकों द्वारा किया जायेगा। मेले में टाटा ट्रस्ट द्वारा स्वास्थ्य जांच शिविर का भी आयोजन किया जायेगा, जिसमें लोगों की स्वस्थ्य जांच के साथ ही कैंसर की भी जांच की जायेगी तथा डेंटल चेकअप भी किया जायेगा। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा के प्रयास से सबसे बड़ा कृषि मेला का आयोजन इस क्षेत्र में किया जा रहा है।

धर्मांतरित लोगों को आदिवासी की सूची से हटाने के लिए विधानसभा से संकल्प प्रस्ताव पारित कर केंद्र को भेजे सरकार

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। जनजाति सुरक्षा मंच खूंटी जिला समिति द्वारा बुधवार को समाहरणालय के समक्ष डी-लिस्टिंग महाधरना का आयोजन किया गया। घंटों चले धरना-प्रदर्शन के बाद उपायुक्त लोकेश मिश्रा को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नाम ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में मांग की गयी है कि धर्मांतरित जनजातियों को जनजाति सूची से हटाकर उन्हें दिए जाने वाला आरक्षण को समाप्त करने का संकल्प प्रस्ताव विधानसभा में पारित कर केंद्र सरकार को भेजा जाए। ज्ञापन में कहा गया है कि आजादी के 75 वर्ष बीत जाने के बावजूद आज भी धर्मांतरित लोग

आदिवासियों के आरक्षण की सुविधा का अधिकतम और अनुचित लाभ उठा रहे हैं। अपनी रुढि परंपरा मानने वाले आदिवासियों के साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ जनजाति सुरक्षा मंच वर्षों से संघर्ष करता रहा है। झारखंड का नेतृत्व कर रहे आदिवासी मुख्यमंत्री से निवेदन है कि पांच दशकों से लंबित इस समस्या के समाधान के लिए प्राथमिकता के आधार पर कार्रवाई करें और आदिवासियों के साथ हो रहे इस अन्याय को हमेशा के लिए समाप्त करें। ज्ञापन में कहा गया है कि यदि आप हमारी मांग के समर्थन में निर्णय लेने का साहस करते हैं तो आदिवासियों के हित में डी-लिस्टिंग के संग्राम में आपके योगदान को झारखंड का आदिवासी समाज सदैव याद रखेगा। धरना प्रदर्शन में संदीप उरांव, हिंदुवा उरांव, भीम सिंह मुंडा, छोट राय मुंडा, दुलार मुंडा, छत्रपति सिंह मुंडा, सुदन मुंडा, लेपो मुंडा, भोंज नाग, जोहन मुंडा, सुरेंद्र सिंह मुंडा, गंदौरी गुड़िया, सोहराई मुंडा, बुधराम मुंडा सहित बड़ी संख्या में आदिवासी समाज के महिला-पुरुष शामिल थे।

तमाड़ के बामलाडीह में शिव गंगा टुसू मेला में शामिल हुए डॉ प्रदीप बलमुचू

तमाड़ (आजाद सिपाही)। तमाड़ प्रखंड के बामलाडीह के हुकुचरा शिव मंदिर परिसर में टुसु मेला में मुख्य अतिथि के तौर पर कांग्रेसी नेता प्रदीप बालमुचू शामिल हुए साथ ही युवा कांग्रेस के विधानसभा अध्यक्ष नीतीश पांडे, उपाध्यक्ष त्रिलोचन मुंडा, महासचिव राजेश सिंह मुंडा, सचिव लखिन्दर लोहरा, बुंडू प्रखंड अध्यक्ष संदीप लोहरा, तमाड़ प्रखंड अध्यक्ष धर्मेंद्र तिवारी भी अतिथि के तौर पर शामिल हुए। मेला आयोजन समिति द्वारा भव्य टुसू मेला का आयोजन किया गया। मेले में एक से एक चौड़ल देखने को मिला साथ ही मुर्गा लड़ाई और छप्पल डांस का भी आयोजन किया गया। लोगों की भीड़ मेले में पहुंची थी। मुख्य अतिथि डॉ प्रदीप बालमुचू ने मेले को संबोधित करते हुए कहा कि टुसू पर्व पांचपरगंना की पहचान है ये पर्व लोगों को आपस में मिलाने का काम करती है। हम सबों को इसका अस्तित्व बचा कर रखना होगा। तमाड़ विधानसभा युवा कांग्रेस के अध्यक्ष नीतीश पांडेय ने कहा कि पुरे पांचपरगंना में जगह जगह टुसू मेला लगाया जाता है पर कहीं कहीं इन टुसु मेला में चौड़ल ही नहीं रहता है हम सबको ये ध्यान रखना होगा की हमारी भाषा और संस्कृति बची रहे। पहले एक महिना पहले से जगह जगह टुसु की स्थापना होती थी और महिने भर नाच गान होता था पर ऐसा अब नहीं हो रहा है जो चिंता का विषय है। मेला को सफल बनाने में मुखिया बलराम सिंह मुंडा, खगेश महतो, संदीप महतो, नगेन्द्र महतो, परिक्षीत महतो, बिनोद सिंह मुंडा, शिवेश्वर महतो, संतोष सिंह मुंडा, आदि लोगों का मुख्य योगदान रहा।

सड़क दुर्घटना में मोटरसाइकिल सवार की मौत

तैमारा (आजाद सिपाही)। दशम फॉल थाना क्षेत्र के नवाडीह मोड़ के पास टाटा सफारी एवं मोटरसाइकिल में भिड़ंत होने से मोटरसाइकिल सवार की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गयी। सूत्रों के अनुसार अड़की थाना क्षेत्र के कुजीयामा गांव के दिनेश बांसमहली पेशे से राजमिस्त्री बुंडू मे अपने गोतिया से मिलकर अपने घर रांची लौट रहा था इसी बीच नवाडीह मोड़ के पास टाटा सफारी पीछे से बाइक को अपनी चपेट में ले लिया बाइक सवार टाटा सफारी में फंसकर काफी दूर तक घसीटा गया टाटा सफारी अपनी गाड़ी को साइड में लगाकर चालक मौके से फरार हो गया पुलिस को सूचना मिलने पर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया है, मृतक के दो छोटे बच्चे है

क्षेत्रीय प्रतिभा दर्शन महोत्सव का शुभारंभ

सोनाहातू (आजाद सिपाही)। प्रखंड के लांदुपडीह स्कूल मैदान में दो दिवसीय क्षेत्रीय प्रतिभा दर्शन महोत्सव का शुभारंभ हुआ। क्षेत्रीय प्रतिभा दर्शन महोत्सव का उद्घाटन बीडीओ खगेश कुमार, केन्द्रीय प्रवक्ता डॉ देवशरण भगत, सुनील कुमार सिंह, पूर्व जिप अध्यक्ष सुकरा सिंह मुंडा, उपाध्यक्ष चितरंजन महतो व खेल प्रभारी श्याम कुमार महतो ने किया। बीडीओ खगेश कुमार ने कहा कि गांव में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं हैं उसे बस मंच देने की आवश्यकता है। प्रतिभा दर्शन महोत्सव से क्षेत्रीय प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के प्रतिभा को निखारने का अच्छा अवसर है। इस दौरान क्रिकेट, फुटबॉल (बालक बालिका) कबड्डी, बॉलीबाल आदि खेल का आयोजन किया गया। फाईनल खेल आज होगी, मुख्य अतिथि सुदेश महतो उपस्थित रहेंगे। मौके पर डॉ सुधीर रंजन, पूर्व जिप सदस्य वीणा मुंडा, रमेश महतो, जतरू सिंह मुंडा, रमेश सिंह मुंडा, शंकर महतो, विपिन महतो,गोवर्धन महतो, सुषेण प्रमाणिक उपस्थित थे।

महिलाओं की गिरती जनसंख्या में सुधार लाना जरूरी : सिविल सर्जन

खूंटी (आजाद सिपाही)। जिले में 24 से 31 जनवरी तक राष्ट्रीय बालिका दिवस कार्यक्रम के तहत बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित हुए, इनमें रंगोली व चित्रांकन की विभिन्न प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्राओं को पुरस्कृत भी किया गया। अभियान के तहत सहियाओं के द्वारा रैली निकाली गयी। मौके पर जिले के सिविल सर्जन डॉ नागेश्वर मांझी ने कहा कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत में निरंतर घट रही महिलाओं की जनसंख्या के अनुपात को संतुलित करने के साथ ही उनके अधिकारों की पूर्ति करना है। भारतीय संविधान द्वारा महिलाओं को प्रदत्त अधिकार जैसे शिक्षा का अधिकार, समान सेवा का अधिकार तथा सम्मान के साथ जीने के अधिकार को सुनिश्चित करना है। कहा कि महिलाओं की गिरती जनसंख्या में सुधार लाना जरूरी है। उन्होंने बताया कि 24 दिसंबर से लेकर 30 दिसंबर के बीच जिले में 22 लड़कियों का जन्म हुआ है। कहा कि इस योजना के तहत बेटियों को एक नई प्रतिभा का विकास एवं बेटियों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच का संचार बहुत तेजी से हो रहा है। कार्यक्रम में जिला कार्यक्रम प्रबंधक, कानन बाला तिर्की, जिला डाटा प्रबंधक श्वेता सिंह, प्रमुख लिपिक सुनीता दास, जिला कार्यक्रम समन्वयक उदयन शर्मा सहित सीएचओ, एएनएम एवं अन्य स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित थे।

लोकसभा चुनाव को लेकर कोषांगों के अधिकारियों की बैठक

खूंटी (आजाद सिपाही)। आगामी लोकसभा चुनाव के सभी कार्यों के ससमय और सुचारू रूप से संचालन के लिए जिला स्तर पर विभिन्न कोषांगों का गठन किया गया है। इसे लेकर अनुमंडल पदाधिकारी अनिकेत सचान की अध्यक्षता में बुधवार को विभिन्न कोषांगों की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में वाहन कोषांग, एमसीसी, एमसीएमसी कोषांगों में प्रतिनियुक्त वरीय पदाधिकारियों को आगामी लोकसभा चुनाव 2024 के सफल क्रियान्वयन को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। कोषांग के वरीय पदाधिकारियों को निर्देश दिया गया कि आगे की कार्य योजना तैयार करते हुए काम करें। आदर्श आचार संहिता, व्यय निगरानी, मीडिया शिकायत, एमसीएमसी पेड न्यूज संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर जानकारी दी गयी। आदर्श आचार संहिता कोषांग अनुमंडल कार्यालय में चुनाव की तारीख की घोषणा तिथि से संचालित होगा। इस कोषांग के नोडल पदाधिकारी अनुमंडल पदाधिकारी होंगे। इस दौरान निर्देश दिया गया कि गठित कोषांग में प्रतिनियुक्त वरीय पदाधिकारी कोषांगों में ससमय योगदान देंगे और अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हेमंत को किया जा रहा है प्रताड़ित : मनोज चंद्रा

आजाद सिपाही संवाददाता

पिपरवार। सीसीएल पिपरवार क्षेत्र से सैकड़ो झारखंड मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ता रांची के मोराबादी में आहुत विरोध प्रदर्शन कार्यक्रम में शामिल हुए। झारखंड मुक्ति मोर्चा के सिमरिया विधानसभा प्रत्याशी मनोज चंद्रा के नेतृत्व में सभी कार्यकर्ता एक साथ वाहनों पर सवार होकर रांची रवाना हुए। रांची जाने से पूर्व सभी झामुमो

कार्यकर्ता पिपरवार क्षेत्र के बचरा चार नंबर स्थित शहीद कृष्णा महतो चौक पर जमा हुए और जमकर नारेबाजी की। इस मौके पर रैयत विस्थापित मोर्चा के केंद्रीय उपाध्यक्ष इकबाल हुसैन, जितेन्द्र सिंह, सलीम अख्तर सहित कई लोग मौजूद थे।

गांव की यह दशा देख कर बहुत ही अफसोस होता है: डॉ परमेश्वर भगत

आजाद सिपाही संवाददाता

लापुंग। ग्रामीणों क्षेत्रो में क्षेत्र भर्मण के दैरान मलगो पंचायत के गांव के अनेक तरह के समस्याओं से डीडीसी डॉ परमेश्वर भगत के समक्ष रखा गया। परमेश्वर भगत ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि झारखंड बने 23 साल के बाद भी आज हमारे सुदूरवर्ती गांव कि यह दशा देखकर बहुत ही अफसोस होती है, चाहे वो कृषि के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में हो या चिकित्सा के क्षेत्र में संगठित होकर संघर्ष करते हुए शिक्षा पर जोर देने का आहवान किया साथ ही ग्रामीणों को भरोसा दिलाया की उनके हक की आवाज उठाने के लिए वह हमेशा तत्पर रहेंगे।

बैठक के बाद डॉ परमेश्वर भगत ने सरकारी स्कूलों में बच्चो को हिन्दी व्याकरण का पाठ पढ़ाया और आगे पढ़ने के लिए मार्गदर्शन किया। मौके पर ज्योतिषराम साहू, बीरेंद्र साहू, शंकर साहू, मंगल उरांव, शिवा उरांव, कृष्णा उरांव, गणेश साहू, गंदूरा उरांव एवं कई लोग उपस्थित हुए।

एआरटी दवा के नियमित सेवन से एचआइवी पॉजिटिव व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत कर सकता है : डॉ मांझी

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। सिविल सर्जन कार्यालय के सभागार में बुधवार को झारखंड राज्य एड्स नियंत्रण समिति द्वारा खूंटी जिला पीएलएचआईवी नेटवर्क सदस्यों के साथ एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में सिविल सर्जन डॉ नागेश्वर मांझी, झारखंड राज्य एड्स नियंत्रण समिति के सहायक निदेशक संतोष कुमार सिंह, आईसीटीसी काउंसलर कामख्या नारायण सिंह, स्नेहदीप स्टेट नेटवर्क मनोज यादव सहित कुल 26 प्रतिभागी उपस्थित थे। मौके पर सिविल सर्जन ने प्रतिभागियों को बताया कि एआरटी

दवा के नियमित सेवन से एचआइवी पोजीटीव व्यक्ति स्वस्थ एवं सामान्य जीवन व्यतीत कर सकता है। झारखंड राज्य एड्स नियंत्रण समिति के सहायक निदेशक संतोष कुमार सिंह ने कहा कि एचआइवी संक्रमित व्यक्तियों के साथ कोई भेदभाव करता है अथवा किसी डॉक्टर द्वारा उसका ऑपरेशन करने से मना किया जाता है, तो एचआईवी रोकथाम एवं नियंत्रण एक्ट 2017 के अंतर्गत उसे एक लाख रुपये तक का जुर्माना और तीन माह से दो साल तक की कैद अथवा दोनों सजा हो सकती है। इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों को सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी, जिसका लाभ एचआईवी संक्रमित व्यक्ति उठा सकते हैं। बताया गया कि संक्रमित महिलाएं जो बेबी का प्लान करना चाहती हैं, वे आईसीटीसी या पीपीटीसी काउंसलर से मिलें, जिससे उनके होनेवाले बच्चे को एचआईवी से बचाया जा सके। सभी प्रतिभागियों को टोल फ्री नंबर 1097 के संबंध में जानकारी दी गई, जिस पर कॉल कर एचआईवी से संबंधित किसी भी तरह की जानकारी एवं शिकायत कर सकते हैं। बताया गया कि एचआईवी केवल असुरक्षित यौन संबंध, संक्रमित सूई के इस्तेमाल, संक्रमित खून चढ़ाने एवं संक्रमित महिलाओं से होनेवाले बच्चे को होता है।

ओरमांझी प्रखंड के ग्राम कुल्ही में भाजपा ओरमांझी मंडल की बैठक की गयी

ओरमांझी। भाजपा किसान मोर्चा झारखंड प्रदेश उपाध्यक्ष अमरनाथ चौधरी ने पार्टी द्वारा आगामी 4 फरवरी से 11 फरवरी तक शुरू होने वाली गांव चलो अभियान को लेकर भाजपा ओरमांझी मंडल की बैठक बुलाई। बैठक में बतौर मुख्य अतिथि भाजपा प्रदेश किसान मोर्चा के उपाध्यक्ष अमरनाथ चौधरी ने विस्तार पूर्वक जानकारी देते हुए मंडल के कार्यकर्ताओं को बूथ स्तर पर पार्टी को मजबूत करने का आह्वान किया। इस दौरान कहा कि गांव चलो अभियान के माध्यम से हर बूथ पर भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता विस्तारक के रूप में गांव में जाकर के नरेंद्र मोदी की ओर से शुरू की गयी योजनाओं की जानकारी तथा लाभार्थियों से वार्ता करेंगे व योजना का प्रचार-प्रसार करेंगे। बैठक में मंडल अध्यक्ष, महामंत्री अलखनाथ महतो, शशि भूषण साहू, बालक पाहन, समुंदर पाहन, राजेश गुप्ता, शशि मेहता, शंकर महतो, विजय आनंद,अमित राज कुमार, अजय साहू,राजेंद्र चौधरी, आनंद कुमार,गणेश महतो, विवेक सिंह, रामलखन महतो, सुरेंद्र प्रजापति निलमोहन पाहन, रामइकबाल तिवारी, चेतू मुंडा, नेवालाल महतो, रामकिशोर महतो, सोनालाल महतो, जेठराज नायक, संतोष महतो, संदीप, कमलेश लोहार, गौतम प्रसाद, राजेश्वर महतो, ओम प्रकाश साहू, सिकंदर महतो, रमक्किंकर पाहन, लक्ष्मण महतो, राजेन्द्र तिवारी, गवेसवर महतो, शंकर महतो, मुंगेसवर महतो, अरविंद महतो, विकास सिंह भोक्ता, जगदीश कुमार, धनेश्वर महतो, मोती महतो, रंजीत नायक, दिलेश्वर साहू, कैलाश महतो, अफताब आलम सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे ।

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 01 फरवरी, 2024
www.azadsipahi.in

रामदेव और लवांग लत्ता बनाये गये प्रदेश कांग्रेस के सोशल मीडिया समन्वयक

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। रामदेव सिंह और लवांग लत्ता निराला को झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सोशल मीडिया का समन्वयक (कोऑर्डिनेटर) मनोनीत किया गया है। इससे पार्टी के नेताओं-कार्यकर्ताओं में हर्ष है। उनका कहना है कि आज सोशल मीडिया संवाद और प्रचार प्रसार का सशक्त माध्यम बन चूका है। बिना सोशल मीडिया के समाजिक सरोकार से जुड़े मुद्दों को जनता और सरकार तक आसानी से नहीं पहुंचाया जा सकता है। उन्हें सोशल मीडिया प्रभारी बनाए जाने पर प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर, पूर्व सांसद सह पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोध कांत सहाय, गजेंद्र सिंह, नलिन मिश्रा, राकेश किरण महतो, राजेश कच्छप, दीपिका पांडेय, राकेश सिन्हा, सुरेश बैठा, इंदिरा देवी, बेलस तिर्की, सुषमा हेमरोम, चन्दन बैठा, राजन सिंह, राजा मेहुल प्रसाद, मुस्ताक आलम, फारुख खान, मिन्हाज आलम, रणमिका गांधी, अब्दुल सलाम, आकाश कर्मकार, बृजेश पांडे, अवधेश नाथ शाहदेव, शिला उरांव आदि ने बधाई दी।

सोहोवती देवी पब्लिक स्कूल में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता दिवस का आयोजन

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। सोहोवती देवी पब्लिक स्कूल में बुधवार को वार्षिय खेलकूद प्रतियोगिता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित स्कूल के निदेशक डॉ अमर कुमार चौधरी के अलावा अशोक कुमार चौधरी, प्राचार्य एडवर्ड लुगुन आदि ने मशाल जलाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रतियोगिता में स्कूल के सभी बच्चों ने भाग लिया। इस दौरान कई तरह तरह के खेलों का आयोजन किया गया जिसमें बच्चों ने संदेश दिया कि स्कूलों में स्पोर्ट्स उनके समुचित विकास, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है। वहीं, स्कूल के निदेशक डॉ अमर कुमार चौधरी ने खेल के महत्व को समझाया। कहा कि शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनने के लिए खेलना अति आवश्यक है। इससे एक नई उत्साह के साथ शारीरिक क्षमता बढ़ती है। वहीं, अशोक कुमार चौधरी ने कहा कि विद्यालय में खेल प्रतियोगिताओं का बहुत बड़ा महत्व है। खेल-कूद में भी भविष्य संवारा जा सकता है। छात्राओं ने वंदना और स्वागत गीत एवं नृत्य के साथ कार्यक्रम की शुरूआत की। अंत में सभी विजेताओं को मेडल और सर्टिफिक्रेट दिया गया। मौके पर स्कूल प्रबंधक व अभिभावक आदि थे।

बेड़ो में बीडीओ ने 220 दिव्यांगजनों के बीच कंबल बांटा

बेड़ो (आजाद सिपाही)। प्रखंड के गांवों में ठंड से राहत पहुंचाने को लेकर सरकार की योजना के तहत बुधवार को प्रखंड के 220 दिव्यांगों के बीच बीडीओ पदाधिकारी संग्राम मुर्मू ने कंबल वितरित किया। बीडीओ ने बताया कि सामाजिक सुरक्षा योजना के तहत जरूरतमंद एवं दिव्यांगों को कंबल दिया गया है। जिससे उन्हें ठंड से राहत मिल सके। उन्होंने कहा कि जरूरतमंदों तक कंबल पहुंचाना मेरा उद्देश्य है। ग्रामीणों की सेवा में हमेशा तत्पर हूं। ग्रामीणों को जब भी कोई परेशानी हो, इसकी सूचना दें। समस्या का समाधान किया जाएगा। मौके पर पूर्व मुखिया सुनील कच्छप व पुरुषोत्तम भाई पटेल आदि थे।

बेड़ो में जंगली हाथी ने दो किसानों की फसल रौंदी

बेड़ो (आजाद सिपाही)। प्रखंड के चिल्द्री टंगराटोली गांव में मंगलवार की देर रात दो बजे एक जंगली हाथी ने जमकर उत्पात मचाया। उसने इसी गांव के विमल भगत का कद्दू व मटर और दशरथ उरांव का गेहूं व मटर की फसल को खाकर व रौंदकर बर्बाद कर दिया। इस घटना से आसपास के लोगों में दहशत व्याप्त है। गौरतलब हो कि इन दिनों जंगली हाथियों का उत्पात कुछ ज्यादा भी बढ़ गया है। लोग शाम होते ही अपने घरों में दुबक जाने पर मजबूर हैं। वहीं ग्रामीणों ने क्षतिपूर्ति को लेकर स्थानीय प्रशासन से मुआवजे की गुहार लगाई है।

लक्ष्य के साथ आगे बढ़ें, सफलता कदम चूमेगी : डॉ अमर चौधरी

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। जीपी मध्य/उच्च विद्यालय हेसल में बुधवार को समारोह आयोजित कर 10वीं के छात्र-छात्राओं को विदाई दी गई। कार्यक्रम का शुभारंभ रांची विवि एवं जेयूटी के पूर्व कुलसचिव डॉ अमर कुमार चौधरी के अलावा प्राचार्य ब्रजेश कुमार महतो आदि ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम में कक्षा नवम के विद्यार्थियों ने स्वागत गीत गाए और रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस अवसर पर दसवीं के छात्र-छात्राओं ने स्कूल में बिताए अपने खटे-मिठे अनुभवों को साझा करते हुए हंसी ठिठौली के पल को याद किया। डॉ अमर कुमार चौधरी ने विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि आप सभी विद्यालय के अनमोल धरोहर हैं। आप सब यहां से ग्रहण किए गए शिक्षा, संस्कार, आचरण आदि गुणों को समाज में बिखेरने का कार्य करेंगे। उन्होंनें विद्यार्थियों को इस परीक्षा में लक्ष्य के साथ बेहतर तैयारी कर उत्कृष्ट सफलता अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्राचार्य ब्रजेश कुमार महतो ने विद्यार्थियों को भविष्य के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज के बच्चे कल के भविष्य हैं। आप अभी दसवीं की परीक्षा देने जा रहे हैं। मेहनत व लगन से पढ़ाई करें और अपना सर्वश्रेष्ठ रिजल्ट दें। आप सबों में प्रतिभा की कोई कमी नही है। कहा कि हमारे विद्यालय के बच्चे हर वर्ष राज्य स्तर पर टॉप करते हैं। इस बार भी टॉप कर क्षेत्र का नाम रौशन करेंगे। इस मौके पर सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं व अभिभावक आदि उपस्थित थे।

कुशवाहा विजय कुमार ने किया हेलमेट लगाओ जीवन बचाओ अभियान का शुभारंभ

पिस्कानगड़ी (आजाद सिपाही)। जोहार पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सह हटिया विधानसभा के प्रभारी कुशवाहा विजय कुमार महतो के नेतृत्व में नगड़ी प्रखंड के विभिन्न गांव में हेलमेट लगाओ जीवन बचाओ जागरूकता अभियान चलाया गया। जिसका शुभारंभ चेकपोस्ट से प्रेमनगर तक पाटी के दर्जनों कार्यकर्ता बाइक रैली निकल कर किया। इस अभियान के माध्यम से अपील की गई कि वाहन चलाने में हमेशा हेलमेट का प्रयोग करें और जीवन को सुरक्षित बनाएं। साथ ही नारी सशक्तिकरण पर्यावरण एवं जल संरक्षण पर भी विशेष अभियान चलाया गया। मौके पर प्रखंड अध्यक्ष संतोष महतो, रंजीत प्रजापति, दीपक प्रजापति, शुभम महतो, बप्पी कश्यप आदि थे।

फुटबॉल खेल के साथ साल्हन में मां शक्ति पीठ मेला का शुभारंभ

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं: कुलदीप सिंह

मां शक्ति पीठ सबों का कल्याण करेगी : रामटहल चौधरी

आजाद सिपाही संवाददाता

कार्यक्रम के दौरान अपना पक्ष रखते गणमान्य लोग। वहीं खिलाड़ियों के साथ गणमान्य लोग।

अनगड़ा। साल्हन पतराटोली मैदान में फुटबॉल प्रतियोगिता के साथ तीन दिवसीय मां शक्ति पीठ मेला का शुभारंभ हुआ। जिसका उद्घाटन अनगड़ा कुलप्रकाश नर्सिंग कॉलेज के निदेशक कुलदीप सिंह ने किया। इ दौरान उद्घाटन मैच ओल्ड इज गोल्ड क्लब साल्हन एवं एफसी जोरार के बीच खेला गया जिसमें जोरार की टीम 1-0 से विजयी रही। इससे पहले कुलदीप सिंह के अलावा पूर्व विधायक रामकुमार पाहन, डॉ रिझु नायक, अजय महतो, नरेश साहू, राजेंद्र महतो, लालू साहू, राजू प्रमाणिक, प्रमोद सिंह, सिकंदर अंसारी, रामवृक्ष महतो, सुप्रेश महतो आदि ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर मैच शुरू कराया।

वहीं, मेला के दूसरे दिन बुधवार को मुख्य अतिथि रामटहल चौधरी और विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक रामकुमार पाहन ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर फुटबॉल मैच को शुरू कराया। इस अवसर पर कुलदीप सिंह ने कहा कि झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। यदि यहां के खिलाड़ियों को अवसर मिला तो वे राज्य, राष्ट्र से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गांव, राज्य एवं देश का नाम रौशन कर सकते हैं। वहीं, पूर्व सासंद रामटहल चौधरी ने कहा कि मां शक्ति पीठ मंदिर का निर्माण हो रहा है। मां शक्ति सभी को सुखमय जीवन का आशीर्वाद देगी। रामकुमार पाहन ने कहा कि मां शक्ति सभी का कल्याण करेंगे। मौके पर एतवा भगत, शिबु मुण्डा, राजू नायक, दीपक मुण्डा, रोहित करमाली, सज्जाद अंसारी, परमानंद साहू, रामपद चैधरी, बिरजा मुण्डा, अजय करमाली, निकु मुण्डा, बरतु मुण्डा, सरजेश महतो, रमेश महतो, सचिन, मनक, किशोर, ज्योतिष, तुलसी, प्रकाश आदि मौजूद थे।

युवा कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने फूंका केंद्र सरकार का पुतला

नामकुम (आजाद सिपाही)। रांची के लोवाडीह दुर्गा सोरेन चौक में बुधवार को युवा कांग्रेस ग्रामीण कार्यकारी जिला अध्यक्ष अमरनाथ मुंडा एवं रिशु कुजूर की अध्यक्षता में चंडीगढ़ में जनमत की लूट का आरोप लगाते हुए केंद्र सरकार का पुतला फूंका। इसमें रांची जिला ग्रामीण एवं महानगर कार्यकर्ता के अलावा झारखंड प्रदेश युवा कांग्रेस के उपाध्यक्ष कुलदिप कुमार रवि, महासिचव शदाब खान, रांची जिला ग्रामीण युवा कांग्रेस के महानगर अध्यक्ष जमील, विक्की ठाकुर, अमित खालखो, हशिब अंसारी, अल्ताफ अंसारी, चान्हों प्रखंड अध्यक्ष तौकीर खान, मांडर प्रखंड महासचिव झरिया उरांव, अनगड़ा प्रखंड अध्यक्ष विशाल स्वासी, खिजरी विधानसभा अध्यक्ष हिमांशु कुजुर, सीनियर कांग्रेस के पूर्व प्रखंड अध्यक्ष सुषमा हेमरोम, सुरेश कुमार, रामभजन सिंह मुंडा, शशिकांत कुमार आदि थे।

गांव चलो अभियान के तहत कार्यशाला का आयोजन

नामकुम (आजाद सिपाही)। भाजपा खिजरी एवं टाटीसिलवे मंडल का गांव चलो अभियान के तहत बुधवार को एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित हुआ। जिसकी अध्यक्षता खिजरी मंडल अध्यक्ष अशोक मुंडा एवं टाटीसिलवे मंडल अध्यक्ष राजेंद्र महतो ने की। इसमें ग्रामीण जिला अध्यक्ष सह खिजरी मंडल प्रभारी सुरेंद्र महतो एवं खिजरी मंडल गांव चलो अभियान के प्रभारी सह ग्रामीण जिला उपाध्यक्ष प्रभुदयाल बड़ाईक ने खिजरी मंडल के सभी कार्यकर्ताओं को मंडल के सभी शक्ति केंद्रों एवं बूथों में प्रवासी कार्यकर्ता के रूप में संयोजक सह संयोजक के माध्यम से गांव-गांव जाकर लोगों को केंद्र सरकार द्वारा चलाए गये जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी। इस दौरान चार से 11 फरवरी के बीच में पूरे मंडल में गांव चलो अभियान को पूरा करने का लक्ष्य रखा गया। कार्यशाला को भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष आरती कुजूर, महिला मोर्चा की राष्ट्रीय मंत्री आरती सिंह, राज्यसभा सांसद प्रतिनिधि मनोज सिंह ने भी संबोधित किया। इस दौरान जिप सदस्य रामअवतार केर-केट्टा को संयोजक एवं रमेश लकड़ा और प्रकाश मुंडा को सहसंयोजक बनाया गया। धन्यवाद ज्ञापन मंडल महामंत्री राजू नायक ने किया। मौके पर संतोष कुमार पांडा, मनोज कुमार सिंह, गोपाल चौधरी, दिलीप साहू, अनिरुद्ध पांडे, रितेश उरांव, सोहराय पाहन, तुलसी गोप, गणेश उरांव अरुणा देवी, लक्ष्मी केरकेट्टा , नेहरू लाल सिंह मुंडा, अशोक नायक, समीर राय, पुष्पा चौधरी, राजू लकड़ा, शिल्पी शालिनी, उर्मिला देवी, प्रज्ञा भारती, सरोज राय, सूर्यकांत मुंडा, धन सिंह मुंडा, रामश्य मुंडा, कौशल सिंह, एनपी सिंह आदि उपस्थित थे।

छात्रों ने किया जेएसएससी ऑफिस का घेराव, हंगामा

आजाद सिपाही संवाददाता

नामकुम। झारखंड के 24 जिलों से हजारों छात्रों ने बुधवार को जेएसएसी कार्यालय का घेराव किया और जेएसएससी अध्यक्ष, आयोग और सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। छात्र लगातार जेएसएससी के अध्यक्ष नीरज सिन्हा से इस्तीफे की मांग कर रहे थे। उनका आरोप है कि नीरज सिन्हा सीट बेच रहे हैं। इसमें हेंमत सरकार की भी मिलीभगत है। जब तक उनकी मांगे पूरी नहीं होती है, तब तक अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन जारी रहेगा। छात्र कार्यालय का गेट खोलने का प्रयास कर रहे थे। मौके पर मौजूद पुलिस ने छात्रों को समझाने की काफी कोशिश की। लेकिन छात्र कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थे। छात्रों को काबू पाने के लिये अंत में पुलिस को लाठीचार्ज तक करना पड़ा। हालांकि इससे शांत होने के बजाय छात्र और उग्र हो गये और गेट खोलकर कार्यालय के अंदर घुसने का प्रयास करने लगे। इसी बीच जेएसएससी के अध्यक्ष नीरज सिन्हा की गाड़ी कार्यालय के अंदर घुसी। जिसके बाद छात्र उनकी गाड़ी को देखकर उग्र हो गये और गाड़ी को रोक दिया। छात्रों ने काफी धक्का-मुक्की भी की और गाड़ी का कांच तोड दिया। जिसमें नीरज सिन्हा और स्थानीय पत्रकार को हल्की चोट भी लगी। जिसके बाद सिटी एसपी राजकुमार मेहता दल बल के साथ मौके पर पहुंचे।

पूर्व विधायक स्व. उमराव सोधो कुजूर की जयंती मनी

नामकुम (आजाद सिपाही)। उमराव साधो कुजूर मेमोरियल ट्रस्ट की ओर से बुधवार को नामकुम के सदाबहार चौक स्थित विधायक की प्रतिमा के समीप 83वीं जयंती मनायी। इस दौरान अतिथियों ने विधिवत पूजा अर्चना एवं माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित किया। मौके पर खिजरी विधानसभा क्षेत्र के लोग उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के रुप में नामकुम बीडीओ डॉ प्रवीण कुमार ने स्व उमराव साधो कुजूर द्वारा समाज के लिये किये गये कार्यों को याद किया। उन्होंने कहा कि स्व. उमराव साधो कुजूर की समाज के बीच एक अलग ही पहचान थी। समाज की सेवा के लिये हमेशा तत्पर रहने वाले उमराव साधो कुजूर लोगों के दिलों में राज किया करते थे। उन्हें जानने वाले बताते हैं, कि उमराव साधो कुजूर कर्मठ, सादगी और व्यवहार कुशल व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे। इस मौके पर वरिष्ठ पत्रकार चंदन मिश्रा, सांसद प्रतिनिधि प्रमोद कुमार सिंह, जिला परिषद सदस्य सह भाजपा नेता रामावतार केरकेट्टा, साधो कुजूर की पत्नी, आयोजन कर्ता उमराव साधो कुजूर की बेटी सह भाजपा की प्रदेश उपाध्यक्ष आरती कुजूर, खिजरी मंडल अध्यक्ष अशोक मुंडा, पूर्व मुखिया सह भाजपा नेता रितेश उरांव, भाजपा नेता मुन्ना बड़ाइक, सांसद प्रतिनिधि मनोज कुमार सिंह, बिजेंद्र राय, महिला प्रसार पदाधिकारी रेणु कुमारी, समाजसेवी प्रभाष झा, शकुंतला जयसवाल, प्रभु दयाल बड़ाइक, अनिरुद्ध पांडेय, प्रज्ञा भारती, सरोज राय, पुष्पा चौधरी, कमल गोस्वामी, दिलीप साहू, राजू नायक, लाल कालीनाथ शहदेव, रमेश लकड़ा, सुरेंद्र महतो आदि उपस्थित थे।

थाना में फर्जी रंगदारी का मामला दर्ज, कोर्ट में चल रहा जमीन का मामला

आजाद सिपाही संवाददाता

लापुंग। रातू थाना क्षेत्र के हुरहुरी गांव के पूरन साहू, अशोक साहू, दीप्ती देवी, कुंती देवी सहित पूरे परिवार पर 30 लाख रुपया रंगदारी मांगने का कथित रूप से फर्जी मुकदमा रातू थाना में अमर कुमार सिंह और रामलाल सिंह ने दर्ज क राया है। यह मामला जमीन विवाद का है। खाता नंबर 147 प्लॉट 40 रकबा 86 डिसमिल जमीन का दो रजिस्ट्री पट्टा के माध्यम से 1957 व 1959 को भगन साहू उर्फ भगन महतो को झखरा टॉड के लक्ष्मण सिंह लिया है। उक्त जमीन पर उनके पोता पूरन साहू का दखल कब्जा बरकरार है। उक्त प्लॉट में मामूली त्रुटि खाता नंबर गलत हो जाने के कारण जमाबंदी 58 डिसमिल का नहीं हुआ। उक्त जमीन का मामला सिविल 2019 में कोर्ट व एसडीओ कोर्ट में चल रहा है। पूरन साहू का कहना है कि रामलाल सिंह उक्त जमीन का बाउंड्री खुद गिराकर फर्जी मुकदमा किया है। जमीन का मामला कोर्ट में चलरहा है। उन्होंने थाना प्रभारी से निवेदन किया कि उक्त मुकदमे की जांचकर उचित कदम उठाए। पूरन साहू के घर से जमीन की दूरी लगभग दो किमी है। इस कारण उन लोगों को जान से मारने की धमकी खुद आरोप गुंडा के माध्यम से दे रहा था। संसद संजय सेठ के हस्तक्षेप से बाउंड्री पर रोक लगी थी, पर रात में पुनः बाउंड्री वॉल का निर्माण किया जा रहा है।

रांची जिला कोऑर्डिनेटर बनाये गये महेश मनीष

कांके (आजाद सिपाही)। झारखंड प्रदेश यूथ कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष सह जय जवान झारखंड कमेटी के झारखंड स्टेट कोऑर्डिनेटर कुमार रोशन ने महेश कुमार मनीष को रांची जिला कोऑर्डिनेटर बनाया है। इसके साथ ही राज्य के सभी जिलों में जुझारू कांग्रेस कार्यकर्ताओं को जिला कोऑर्डिनेटर नियुक्त किया है। यह सभी कोऑर्डिनेटर कांग्रेस के दिग्गज नेता सह सांसद राहुल गांधी के भारत जोड़ो न्याय यात्रा में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाएंगे। महेश कुमार ने बताया कि वह वर्तमान में रांची जिला कांग्रेस कमेटी के महासचिव हैं।

66वीं जयंती पर समारोह आयोजित कर किये गये याद

लोककला के उत्थान में स्व आनंद राम महली का योगदान अविस्मरणीय: हरिनारायण महली

आजाद सिपाही संवाददाता

लोककलाकार स्व आनंद राम महली को श्रद्धांजलि देते रंगकर्मी व ग्रामीण।

बेड़ो। लोककला के उत्थान में स्व आनंद राम महली के योगदानों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उक्त बातें हरिनारायण महली ने कही। वे बुधवार को बेड़ो प्रखंड के दिघिया गांव में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लोक कलाकार स्व आनंद राम महली की स्मृति में 66 वां जयंती समारोह सह सांस्कृतिक कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि को रूप में संबोधित कर रहे थे। इससे पूर्व महली समाज के लोगों, रंगकर्मियों, लोक कलाकारों, समाज सेवियों व शिक्षाविदों ने लोक कलाकार स्व आनंद राम महली की तस्वीर पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। वहीं महली समाज के लोक कलाकारों व अन्य कलाकारों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर जनमानस को झूमने व थिरकने पर विवश कर दिया। समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी हरिनारायण महली ने कहा कि लोक कलाकार स्व आनंद राम महली ने सात देशों की यात्रा कर अपनी नागपुरी भाषा की लोककला की अमिट छाप अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर छोड़ा था। जिसे भुलाया नहीं जा सकता। भारत के साथ ही विदेशों में भी उन्होंने लोककला के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जो कालान्तर में अविस्मरणीय रहेगा। मौके पर वाणी कुमार राय, भवानी शरण सिंह, भीखा उरांव, धनंजय कुमार राय, हरिशंकर राम महली, कार्तिक धान, देवकुमार महली, परमेश्वर महली, अशोक महली, भोला महली, विशुन महली, दीपक इंदवार, कुंती देवी, विजय लक्ष्मी, रजनी देवी, विमला देवी, भुजन महली, सत्यनारायण महली व विश्वनाथ महली आदि ने सराहनीय योगदान दिया। समारोह का संचालन मनीष बरवार व धन्यवाद ज्ञापन हरिशंकर राम महली ने किया।

क्षेत्रीय प्रतिभा दर्शन महोत्सव का शुभारंभ

आजाद सिपाही संवाददाता

सिकिदिरी। प्रस्तावित जोन्हा प्रखंड अंतर्गत टाटी स्कूल मैदान में बुधवार को दो दिवसीय क्षेत्रीय प्रतिभा दर्शन महोत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ बतौर मुख्य अतिथि अनगड़ा पूर्वी के जिला परिषद सदस्य राजेंद्र शाही मुंडा व कांके जिप सदस्य संजय महतो द्वारा खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर किया गया। अपने संबोधन में राजेंद्र शाही मुंडा ने कहा कि प्रतिभा दर्शन कार्यक्रम में भाग लेने वाली सफल टीम विधानसभा स्तरीय टीम का सदस्य बनेगें। जिसे खेल से संबंधित सारे संसाधन प्राप्त होगा। उन्होंने यह भी कहा कि सिल्ली विधायक सुदेश महतो की सोच है कि ग्रामीण खेल प्रतिभा को राष्ट्रीय पटल तक पहुंचाया जाय। इस खेल प्रतिभा दर्शन कार्यक्रम में कुल 21 पुरुष फुटबॉल टीम, 10 महिला फुटबॉल टीम, पांच पुरुष क्रिकेट टीम, दो महिला बालीबॉल टीम, तीन पुरूष बालीबॉल टीम, एवं छह महिला कबड्डी टीमों ने अपना खेल कौशल का प्रदर्शन किया। मौके पर सुरसू मुखिया सुमित्रा देवी, बरवादाग मुखिया सारथी देवी, हेसातु पूर्व मुखिया राजेश पहान, प्रखंड खेल प्रभारी, अमर सिंह मुंडा, सिंधु कान्हू प्रखंड अध्यक्ष दीनदयाल बेदिया, बबलू उर्फ ईरफान, सीताराम साहू, मोहम्मद रिजवान, दिलीप बेदिया, राजू महली, धर्मदेव रजवार, छुटूलाल बेदिया, सुधू बेदिया, सत्यनारायण मुण्डा, शयामसुन्दर बेदिया आदि उपस्थित थे।

जीवंत झांकी में संतोष गुप्ता बने दशदथ व पत्नी बनी मां कौशल्या

आजाद सिपाही संवाददाता

ओरमांझी। दुर्गा महादेव मंदिर में तृतीय वर्ष गाठ पर आयोजित पांच दिवसीय नव चंडी महायज्ञ के उपलक्ष्य में राम कथा सुना रही देवी रेशमी शास्त्री के मुख वाणी से प्रभु श्रीराम जी के जन्म प्रसंग सुनकर भक्त भाव विभोर हो उठे। वहीं, जीवंत झांकी में राजा दशरथ और माता कौशल्या दरबार की अदभुत प्रस्तुति दिखाई गई। राजा दशरथ का किरदार ओरमांझी के उपमुखिया संतोष गुप्ता और माता कौशल्या का किरदार उनकी पत्नी ने निभाई। वहीं, राजा दशरथ की दो अन्य पत्नियों का किरदार बंगाल से आइ कलाकारों ने निभाया। इससे पूर्व राम कथा का शुभारंभ भाजपा प्रदेश नेत्री मंजू लता दूबे, नेहा गुप्ता व समाजसेवी व सम्राट होटल के संचालक राजेश साहू ने आरती करके किया। यज्ञ पूजन आचार्य पंडित मृत्युंजय गर्ग, गौतम प्रिंस, दुर्गेश धीरज व मुख्य जजमान नीरज पांडे, रूपेश पाण्डेय, युगेश पाण्डेय के अलावे दुर्गा महादेव पुजारी पंडित कुणाल गोस्वामी जोगी जी अपना योगदान दे रहे हैं। यज्ञ के सफल आयोजन में यज्ञ समिति के मुख्य संरक्षक नंदगोपाल साहू, अध्यक्ष राजगौरव तिवारी, सचिव आशीष साहू, कोषाध्यक्ष किशोर महतो, गिरधारी महतो, नंदकिशोर साहू, तुलसी महतो, नंदकिशोर दूबे, संपत मल्लाह, महेश साहू, प्रदीप महतो, संतोष गुप्ता, विजय महतो, गणेश साहू, अमर साहू गुड्डू, शुभम साहू, अतुल साहू, अनुप महतो, दीपक बडाईक, दीनदयाल लोहार मुण्डा, राजेश गुप्ता, अजित महतो, शशी पाण्डेय, मिथिलेश साहू, अशोक नरायण तिवारी, कैलाश साहू, तुलसी महतो, लक्ष्मी महतो जगदीश महतो, मनोज महतो, सतीश बडाईक, संतोष कुशवाहा, नीरज नायक, संतोष साहू ,सिद्धांत राज साहू, विक्रम महतो, अमित कुशवाहा, रामकुमार महतो अशोक पांडे, दीपा चौरसिया, सोनी देवी, रीना देवी, कविता देवी, बसंती देवी, पूजा कुमारी, ऊषा देवी, ममता देवी, अनीता देवी, किरण देवी, तुलसी महतो, दिना गोस्वामी, आनंद महतो, शशी मेहता, मुनी देवी, विवेक वर्मा आदि लगे हैं।

जेआरजीबी लेखापाल मिथिलेश राम के सेवानिवृत्त होने पर दी गयी विदाई

हरिहरगंज/पलामू (आजाद सिपाही)। हरिहरगंज शहर के झारखंड राज्य ग्रामीण बैंक में कार्यरत लेखापाल अधिकारी मिथिलेश राम को सेवानिवृत्त होने पर बुधवार को बैंक परिसर में समारोह आयोजित कर विदाई दी गई। शाखा प्रबंधक अमन कुमार जोशी, ढाब कला शाखा प्रबंधक राहुल कतरियार, क्षेत्रीय अधिकारी महेन्द्र पासवान, कार्यालय सहायक तपेंद्र कुमार, कैशियर मो. आसिफ हुसैन, लेखापाल पवन कुमार गोस्वामी सहित कई बैंक कर्मियों के अलावे सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अंग वस्त्र और माला पहनाकर सम्मानित करते हुए विदाई दी। इस दौरान शाखा प्रबंधक अमन कुमार जोशी ने कहा कि मिथिलेश राम करीब 39 वर्षों तक अपना योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि सेवानिवृत्त आम प्रक्रिया है, जिससे हर अधिकारी और कर्मी को गुजरना पड़ता है। लेकिन उनके द्वारा किए गए अच्छे कार्यों को हमेशा याद किया जाता है। वहीं, ढाब कला शाखा प्रबंधक राहुल कतरियार ने कहा कि नौकरी में आना-जाना लगा रहता, लेकिन अच्छा कार्य करने वाले को विभाग हमेशा याद रखती है। वहीं सेवानिवृत मिथिलेश राम ने 39 वर्षो का किए गए कार्यों को सभी के साथ अनुभव साझा किया। मौके पर बसपा के पूर्व प्रदेश सचिव प्रमोद कुमार रवि, राजकुमार गौतम, डॉ एसपी वर्मा, भीमदयाल रमन, सुरजमल राम, वैश्य जागृतिमंच के अध्यक्ष गंगा जायसवाल, सामाजिक कार्यकर्ता श्यामलाल मेहता आदि उपस्थित थे।

जपला एसबीएस महाविद्यालय के व्याख्याता महेंद्र सिंह की सेवानिवृत्ति पर दी गयी विदाई

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। जपला के शहीद भगत सिंह इंटर महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय के व्याख्याता महेंद्र कुमार सिंह के सेवानिवृत होने पर बुधवार को समारोह आयोजित कर विदाई दी गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य संजय कुमार सिंह और संचालन प्रो अरविंद कुमार सिंह ने किया। इस दौरान कर्मचारियों ने व्याख्याता को अंगवस्त्र व बुके देकर सम्मानित किया। साथ ही सुखद स्वास्थ्य की कामना की। वहीं, प्रभारी प्राचार्य ने कहा कि व्याख्याता महेंद्र सिंह अपने कार्यकाल के दौरान कुशलता पूर्व अपने कर्तब्यों का निर्वहन किये। उनके मधुर प्रेम और आत्मीयता को सदा याद रखेंगे। मौके पर प्रेमनाथ, धनंजय कुमार सिंह, ममता सिंह, संजय सिंह, गंगा प्रसाद चौधरी, नागेंद्र सिंह, लेखापाल अरुण कुमार सिंह, दिग्विजय सिंह आमोद, मो मुकशीद, अमित रंजन मिश्रा, आकाश सिंह, आशुतोष इंदु शेखर, हरिहर मेहता, नागेंद्र ठाकुर, नागेंद्र सिंह आदि मौजूद थे।

ओबीसी जागरूकता रथ पहुंचा मुरमा और तिसीबार गांव

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। ओबीसी एकता व अधिकार जागरूकता रथ बुधवार को तिसिबार, मुरमा, कुटमू बाजार पहुंचा। बाजार के समीप नुक्कड़ सभा को संबोधित करते हुए प्रमंडलीय संयोजक गोरख नाथ चौधरी ने कहा कि ओबीसी मोर्चा रथ का मुख्य उद्देश्य आजादी से लेकर आज तक जो ओबीसी के हक और अधिकार को दबा कर बैठे हैं, वो लोग आरक्षण के नाम पर ओबीसी समाज की हत्या किये है। जब तक ओबीसी को हक-अधिकार नहीं मिलेगा तब तक यह लड़ाई जारी रहेगी। उन्होंने 11 फरवरी को पलामू शिवाजी मैदान चलने का आग्रह किया। कहा कि ओबीसी समाज का मकसद राजनीतिक दल और संगठन को ठेस पहुंचाना नहीं, बल्कि ओबीसी को उचित हक और अधिकार दिलाना है। उन्होंने कहा कि रघुवर सरकार में 14 प्रतिशत आरक्षण मिलता था लेकिन हेमंत सरकार ने आरक्षण ही खत्म कर दिया है। कहा कि हमलोग हिंदू- मुस्लिम में फंसकर लड़ते रह जातें हैं। ओबीसी संयोजक अखतर अंसारी ने कहा कि ओबीसी की जनसंख्या के अधार पर राजनीतिक हिस्सेदारी सुनिश्चित करना जरूरी है। मौके पर अमर प्रसाद, गोपाल प्रसाद, सतेंद्र प्रसाद, विमलेश गुप्ता, शंकर प्रताप विश्वकर्मा आदि थे।

झोला छाप चिकित्सक के इंजेक्शन लगाते ही युवक की मौत, हंगामा

पुलिस के हस्तक्षेप से शांत हुआ मामला, पांकी के परसिया गांव का मामला

आजाद सिपाही संवाददाता

पांकी/पलामू। पांकी प्रखंड के परसिया गांव में झोलाछाप चिकित्सक द्वारा इलाज के दौरान इंजेक्शक लगाने के बाद एक युवक की मौत होने का मामला प्रकाश में आया है। मृतक की पहचान सुमन कुमार यादव उर्फ हरि के रूप में हुई है। वहीं, मृतक के परिजनों ने झोलाछाप चिकित्सक रामदयाल राम पर गलत इलाज करने का आरोप लगाते हुए जमकर हंगामा किया। साथ ही झोलाछाप चिकित्सक रामदयाल राम पर कार्रवाई करने की मांग की। स्थिति तनावपूर्ण होता देख पांकी पुलिस मौके पर पहुंच गई और हंगामा कर रहे लोगों को समझा बुझा कर मामला शांत कराया। उधर, मृतक के ससुर राजकुमार यादव ने बताया कि मंगलवार को दिनभर हरि ठीक ठाक था। शाम को अचानक सिर में दर्द देने लगा। इस बीच गांव के

मृतक सुमन यादव उर्फ हरि की फाइल फोटो।

रामदयाल राम नामक चिकित्सक को बुलाया गया, जिसने एक इंजेक्शन लगाया और कुछ दवा दी। पर इंजेक्शन लगाने के आधे घंटे बाद हरि तड़पने लगा। परिजन कुछ समझ पाते तब तक उसकी मौत हो गयी। वहीं, मृतक के भाई सुनील यादव ने झोलाछाप चिकित्सक रामदयाल राम पर गलत इंजेक्शन लगाने का आरोप लगाया। बताया कि पहले भी इस तरह की घटना डॉ रामदयाल राम द्वारा हो चुकी है। हालांकि समाचार लिखे जाने तक मृतक के परिजनों ने थाने में लिखित आवेदन नहीं दिया था। गौरतलब हो कि युवक की शादी साल 2020 में हुई थी। मृतक की ढाई साल का पुत्र और एक साल की एक पुत्री हैं। युवक पेशे से मजदूर था। घटना के बाद मृतक के परिजनों का रो-रो का बुरा हाल है। दूसरी ओर, घटना की सूचना मिलते ही सगालीम के मुखिया सुनील प्रजापति मृतक के घर पहुंचे और परिजनों को ढांढस बंधाया। साथ ही हर संभव मदद का भरोसा दिया। जबकि पांकी थाना प्रभारी उपेंद्र नारायण सिंह ने बताया कि उन्हें जानकारी मिला है। पुलिस जांच कर रही है। परिजनों द्वारा अभी तक लिखित आवेदन नहीं मिला है। बतातें चले कि पांकी प्रखंड में दर्जनों अवैध नर्सिंग होम है जहां इलाज कराने पहुंचने वाले भोले भाले लोगों को अक्सर जान गंवानी पड़ जाती है। परिजन द्वारा हंगामा करने पर स्वास्थ्य विभाग के आला अधिकारी द्वारा लिपापोती कर छोड़ दिया जाता है जिससे झोलाछाप चिकित्सकों का मनोबल बढ़ा रहता है।

मुझसे गलती हुई है : आरोपी चिकित्सक

वहीं, आरोपी चिकित्सक रामदयाल राम ने अपनी गलती स्वीकार की है। कहा कि मेरे द्वारा जानबूझ कर ऐसा काम नहीं किया गया है। जो चार लोग बोलेंगे, हमको मंजूर होगा। उसकी भरपाई हम करने को तैयार हैं। वहीं, पांकी चिकित्सक प्रभारी महेंद्र प्रसाद ने बताया कि घटना की सूचना मिली है। जांच की जा रही है। डॉक्टर के दोषी पाए जाने पर उस पर उचित कार्रवाई की जायेगी।

पांकी विधायक ने ऑनलाइन किया कई योजनाओं का शिलान्यास

आजाद सिपाही संवाददाता

पांकी/पलामू। नीलाम्बर पिताम्बरपुर स्थित मौर्या फार्म हाउस में बुधवार को विधायक डॉ कुशवाहा शशिभूषण मेहता ने विधायक मद की राशि से पीसीसी पथ, पुलिया, सड़क मरम्मती, शमशान घाट, आहार समेत 83 योजनाओं का ऑनलाइन शिलान्यास किया। विधायक ने कहा कि पांकी

विधानसभा में हर जनकल्याणकारी योजनाओं का धरातल पर उतारने का काम कर रहा हूं। गांव टोले मुहल्ले से लेकर मुख्य सड़कों को जोड़ने का काम किया जा रहा है। इस मौके पर प्रो बचन ठाकुर, लाला यादव, संजय चंद्रवंशी, कमेश यादव, जिला प्रतिनिध प्रकाश मेहता, मुखिया पायनर पाण्डे, निर्मल मेहता, सुनील प्रसाद गुप्ता, देवराज कुमार, सुधीर तिवारी सहित कई लोग मौजूद थे।

संत मरियम स्कूल में चलाया गया जागरूकता अभियान

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। सड़क सुरक्षा सप्ताह के तहत बुधवार शहर के संत मरियम स्कूल में सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान सह क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। छात्र-छात्राओं को सड़क सुरक्षा के प्रति विस्तार पूर्वक जानकारी दी। उन्हें दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट एवं चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट का प्रयोग करने के फायदे के बारे में बताया। उन्हें हिट एंड रन, साइनेज, गुड सेमेरिटन ड्रिंक एंड ड्राइव आदि के बारे में जानकारी दी गयी। बच्चों को यह बताया गया कि सड़क सुरक्षा का पालन कर दुर्घटनाओं में कमी लायी जा सकती है। वहीं क्विज प्रतियोगता के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। मौके पर विनीत कुमार, ट्रैफिक इंचार्ज रामजीत सिंह आदि थे।

अबुआ आवास योजना में अनियमितता किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं : योगेंद

आजाद सिपाही संवाददाता

हुसैनाबाद। प्रखंड कार्यालय सभागार में बुधवार को प्रखंड 20 सूत्री की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता 20 सूत्री अध्यक्ष योगेंद्र सिंह उर्फ गुड्डू और संचालन बीडीओ सह सचिव रोशन कुमार सिंह ने किया। बैठक में प्रखंड में संचालित स्वास्थ्य, मनरेगा, 15वें वित्त आयोग, खाद्य आपूर्ति एवं कृषि सहित अन्य विभागों की योजनावार समीक्षा की गई। इस दौरान अबुआ आवास पर विशेष चर्चा की गई। 20 सूत्री अध्यक्ष ने कहा कि अबुआ आवास योजना का लाभ अत्यंत गरीबों और बेघरों को देना सुनिश्चित करें। योजना में किसी भी प्रकार की अनियमितता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्राइवेट फाइनेंस कंपनी

द्वारा क्षेत्र के गरीब महिलाओं को लोन देने के नाम पर ठगी की जा रही है। इस पर तत्काल रोक लगाते हुए दोषियों पर कार्रवाई हो। उन्होंने लाभुकों को समय पर राशन वितरण करना सुनिश्चित करने को कहा। इसके अलावा बैठक में कई प्रस्ताव के समीक्षा की गयी। इसके बाद समाधान की दिशा में बीडीओ ने आवश्यक निर्देश दिया। मौके पर 20 सूत्री उपाध्यक्ष जीशान हसन, स्वास्थ्य उपाधीक्षक डॉ दीपक कुमार, सांसद प्रतिनिधि अखिलेश्वर मेहता, विनय पासवान, हंसराज सिंह, राजेश सिंह, एसआई शौकत खान, बीपीएम विभूति कुमार, अविनाश सिंह, प्रखंड कोऑर्डिनेटर राजू रंजन, पंचायत सेवक सूर्यदेव राम, सुपरवाइजर नीलम कुमारी, अमित कुमार, एमओ मनोज कुमार, गोदाम प्रबंधक अनिल कुमार आदि मौजूद थे।

स्पोर्ट्स

भारत के दिग्गज स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने बुधवार को जारी ताजा आइसीसी गेंदबादी रैंकिंग में शीर्ष स्थान बरकरार रखा है। जबकि हमवतन जसप्रीत बुमराह चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं। वहीं, टेस्ट बल्लेबाजों के शीर्ष-10 की रैंकिंग में विराट कोहली ही हैं।

आइसीसी टेस्ट रैंकिंग : बुमराह को भी हुआ फायदा, रवींद्र जडेजा भी शीर्ष-10 में शामिल

अश्विन की बादशाहत कायम, बल्लेबाजों में शीर्ष-10 में सिर्फ एक भारतीय

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के दिग्गज ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने बुधवार को जारी ताजा आईसीसी गेंदबाजी रैंकिंग में शीर्ष स्थान बरकरार रखा है, जबकि हमवतन जसप्रीत बुमराह चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं। इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट में भारत की 28 रन की हार के दौरान मैच में छह विकेट चटकाने वाले अश्विन के 853 रेटिंग अंक हैं, जबकि आधा दर्जन विकेट लेने वाले तेज गेंदबाज बुमराह एक पायदान चढ़कर चौथे स्थान पर पहुंच गए। वहीं, टेस्ट बल्लेबाजों की शीर्ष-10 की रैंकिंग में भारत का सिर्फ एक खिलाड़ी है। टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग की बात करें तो शीर्ष 10 में

गेंदबाद आर अश्विन।

अश्विन और बुमराह के अलावा तीसरे भारतीय बाएं हाथ के स्पिनर रवींद्र जडेजा हैं। वह छठे स्थान पर काबिज हैं। जडेजा टेस्ट ऑलराउंडर की रैंकिंग में शीर्ष पर बने हुए हैं। हालांकि, उन्हें इंग्लैंड के जो रूट से कड़ी चुनौती मिल सकती है जो हैदराबाद टेस्ट में शानदार प्रदर्शन करने के साथ ही चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं। अगर इंग्लैंड का यह दिग्गज गेंद से भी अच्छा प्रदर्शन जारी रखता है तो जडेजा को इस सीरीज में ही पीछे छोड़ सकता है।

रूट ऑलराउंडरों की सूची में टॉप-5 में

रूट को मुख्य रूप से उनके बल्लेबाजी कौशल के लिए जाना जाता है, जबकि 33 साल के इस तेज गेंदबाज ने हैदराबाद टेस्ट में पांच विकेट चटकाए थे। उन्होंने दूसरी पारी में इंग्लैंड के लिए पहला ओवर भी फेंका था। पांच विकेट ने रूट को टेस्ट ऑलराउंडरों की सूची में एक नई करियर-बेस्ट रेटिंग पर पहुंचा दिया है। रूट ऑलराउंडरों में अश्विन और शाकिब-अल-हसन से पीछे हैं, जबकि अक्षर पटेल एक पायदान गिरकर छठे स्थान पर खिसक गए हैं।

कोहली बल्लेबाजों में शीर्ष-10 में शामिल

बल्लेबाजों में शीर्ष-10 में एकमात्र भारतीय विराट कोहली हैं। इंग्लैंड के खिलाफ शुरूआती दो टेस्ट से बाहर होने के बावजूद कोहली की रैंकिंग में एक स्थान का सुधार हुआ और वह छठे स्थान पर पहुंच गए हैं। वहीं, हैदराबाद में इंग्लैंड को मैच जिताने वाले ओली पोप 20 स्थान की छलांग के साथ 15वें स्थान पर पहुंच गए। पोप ने दूसरी पारी में 196 रन बनाकर भारत को हैरान कर दिया था। पोप के इंग्लैंड टीम के साथी बेन डकेट ने भी अपनी रैंकिंग में सुधार किया और भारत के खिलाफ 35 और 47 रन की पारी खेलने के बाद पांच पायदान के फायदे के साथ 22वें स्थान पर पहुंच गए। ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा गाबा में वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टेस्ट की पहली पारी में अर्धशतक के बाद दो स्थान के सुधार के साथ आठवें स्थान पर पहुंच गए। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ प्रभावशाली प्रदर्शन के बाद वेस्टइंडीज के तीन तेज गेंदबाजों ने भी अपनी रैंकिंग में सुधार किया। केमार रोच दो स्थान ऊपर 17वें, अल्जारी जोसेफ चार स्थान ऊपर 33वें और गाबा में प्लेयर ऑफ द मैच रहे शमर जोसेफ 42 स्थान के फायदे के साथ 50वें स्थान पर पहुंच गए हैं। ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज के बीच अब तीन मैचों की वनडे सीरीज खेली जाएगी। वहीं, भारत और इंग्लैंड के बीच दो फरवरी से विशाखापत्तनम में सीरीज का दूसरा टेस्ट खेला जाएगा।

महत्वपूर्ण न्यूज

जल यात्रा के दौरान वाहन से गिर कर घायल युवक की मौत, गांव में शोक

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के ऊपरी कला पंचायत के मोबारकपुर गांव निवासी अमित कुमार सिंह के एकलौता पूत्र ओम प्रकाश सिंह ऊर्फ गोलू की मौत रांची के निजी अस्पताल में मंगलवार की रात के इलाज के दौरान हो गई। जानकारी के अनुसार विगत 27 जनवरी को मोबारकपूर में देवी मंदिर सह शिव हनुमान प्राण प्रतिष्ठा सह सतचंडी महायज्ञ अनुष्ठान को लेकर जल यात्रा निकाली गईं थी इस दौरान देवरी सोन नदी घाट जाने के क्रम में एक वाहन से गिरकर गोलू गंभीर रूप से घायल हो गया था। उसे लोगों ने तत्काल अनुमंडलीय अस्पताल पहुंचाया जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिऐ सदर अस्पताल रेफर कर दिया था, उसकी स्थिती वहां भी बिगड़ती देख बेहतर इलाज के लिए रांची के रिम्स अस्पताल भेज दिया था। परिजनों ने उसे रांची के सैंमफोर्ड अस्पताल में भर्ती कराया था। तीन दिनों के बाद उसकी मौत हो गई। इसकी सूचना मिलते ही गांव में मातम छा गया। देर रात शव पहुंचते ही उसके घरों में कोहराम मच गया। उसका अन्तिम संस्कार बुधवार को गांव से कुछ दूरी पर स्थित शमशान घाट पर किया गय। उसके निधन पर स्थानीय विधायक कमलेश कुमार सिंह, पूर्व विधायक संजय कुमार यादव, भाजपा के वरिष्ठ नेता अशोक सिंह, रविंद्र कुमार सिंह, कर्नल संजय सिंह, प्रभात कुमार सिंह, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता धनंजय कुमार तिवारी आदि ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

पलामू सांसद लालगढ़ वासियों के साथ कर रहे सौतेला व्यवहार : धर्मेंद्र चौधरी

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। पलामू सांसद विष्णु दयाल राम लालगढ़ वासियों के साथ सौतेला व्यवहार कर रहे हैं। उक्त बातें विश्रामपुर प्रखंड के लालगढ़ के मुखिया धर्मेंद्र चौधरी ने कही। वे बुधवार क अपने आवास पर पत्रकारों से बात कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हाल के दिनों में लालगढ़ स्टेशन के पास की जो स्थिती है वो किसी से छिपी नहीं है। ना ही फुट ओवरब्रिज है और ना हीं अंडरपास। पलामू एक्सप्रेस को रुकवाने के लिए हम सभी ग्रामीणों के साथ कई बार लालगढ़ व पंजरी फाटक के पास धरना प्रदर्शन भी किया। साथ ही सांसद से मिलकर कई बाद हस्ताक्षरयुक्त आवेदन भी दिया। लेकिन अभी तक इसपर मामले का न हल ही हुआ और न ही इसपर कोई विचार ही किया गया। स्थिति जस की तस बनी हुई है। धर्मेंद्र चौधरी ने बताया कि कोरोना काल के पहले लालगढ स्टेशन पर पलामू एक्सप्रेस का ठहराव हुआ करता था। जिससे तोलरा, पंजरी, डंडा सहित सैकड़ो गांव के लोग लाभावित होते थे। धर्मेंद्र चौधरी ने कहा कि हमलोग पलामू सांसद का प्रचार-प्रसार कर हरसंभव मदद किए। लेकिन सांसद द्वारा हमलोगों के साथ सौतेला व्यवहार किया गया हैं। उन्होंने कहा कि सैकड़ों लोगों के साथ एक बार फिर डीआरएम एवं रेलमंत्री से मिलकर इस समस्या का समाधान करने की मांग करेंगे।

शिक्षक कन्हाई राम हुए सेवानिवृत्त, दी गयी विदाई

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। विश्रामपुर कन्या मध्य विद्यालय के प्रधानाध्यापक कन्हाई राम बुधवार को सेवानिवृत हो गये। इस अवसर पर उनके सम्मान में विद्यालय में विदाई सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता शिक्षक नीतीश कुमार व संचालन आशीष राणा ने किया। शिक्षकों ने कन्हाई राम के कार्यकाल की सराहना करते हुए कहा कि इन्होंने अनुसाशन व संस्कार पूर्ण शिक्षा बच्चों को दी है। कन्हाई राम ने कहा कि स्कूल के छात्राओं का हमेशा अपने बच्चों जैसा ख्याल रखा है। बच्चों ने भी मुझे पूरा सम्मान दिया है। समारोह में स्कूली बच्चों ने विदाई गीत गाकर माहौल को कुछ समय के लिये गमगीन कर दिया। मौके पर दयाशंकर बाजपेयी शिक्षिक अरविंद कुमार, संजय कुमार, देवेश कुमार, कमरुल हक, अनिता कुमारी, रविरंजन पाठक, कमरोज आलम, चंदन कुमार और बेबी देवी आदि उपस्थित थे।

प्रखंड में धान केंद्र नहीं खोलने पर किसानों में रोष, सत्ता पक्ष व विपक्ष दोनों मौन : सुधीर सिंह

नीलांबर पितांबरपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। जिला प्रशासन के सुस्ती के कारण नीलांबर पीतांबरपुर प्रखंड में अभी तक धान क्रय केंद्र नहीं खोला गया। जिस करण किसानों में रोष व्याप्त है। प्रखंड क्षेत्र किसान आंदोलन करने केलिए चेतावनी भी दे दी है। प्रखंड क्षेत्र के पूणार्डीह निवासी किसान सह समाजसेवी सुधीर सिंह ने कहा कि धान क्रय केंद्र पदाधिकारी राजेश पाठक से इस संबंध में जानकारी लिया तो उन्होंने कहा कि हमारे पास 5-6 से अधिक विभाग का प्रभार है। इसलिए धान क्रय केंद्र चलाना हमारे बस के बात नहीं है। यह कहकर प्रखंड कृषि पदाधिकारी सह धान क्रय पदाधिकारी बात को टाल देते हैं। वहीं पैक्स अध्यक्ष मनोरंजन दुबे तथा जगरनाथ दूबे भी पदाधिकारी को केंद्र पर नहीं आने की बात करते हैं। और बोलते हैं कि जिस दिन धान क्रय केंद्र पर क्रय पदाधिकारी आकर पासवर्ड लोगिन कर देंगे उसी दिन से धान की खरीदारी शुरू कर दी जाएगी। प्रखंड में दो धान क्रय केंद्र है लेस्लीगंज एवं कोट खास गांव में लेकिन दोनों केन्द्र का एक ही हाल है। इस मामले में सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों नेता मौन हैं। नतीजा किसानों को अपनी धान को औने पौने दामों में व्यापारी के पास बेचने पर मजबूर हैं। सुधीर सिंह ने कहा कि अगर धान खरीदारी जल्द शुरू नहीं की गई तो प्रखंड के किसानों को साथ लेकर पदाधिकारीयों के खिलाफ आंदोलन करने पर बाध्य हो जाएंगे। दूसरी ओर, इस बाबत पूछे जाने पर प्रखंड कृषि पदाधिकारी सह धान क्रय पदाधिकारी राजेश पाठक ने बताया कि अभी हम लोगों का धान क्रय केंद्र का आईडी पासवर्ड प्राप्त नहीं हुआ है। एक-दो दिन के अंदर आईडी पासवर्ड प्राप्त होते ही धान की खरीदारी शुरू कर दी जाएगी।

चलो गांव की ओर कार्यक्रम को लेकर भाजपा की बैठक

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। चलो गांवों की ओर कार्यक्रम को लेकर बुधवार को विश्रामपुर नप मुख्यालय में भाजपा नगर मंडल की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता महामंत्री मनीष कुमार व संचालन उपाध्यक्ष रजनीश कुमार ने किया। इस अवसर पर रामचंद्र यादव ने भाजपा नेताओं व कार्यकर्ताओं को चलो गांवों की ओर कार्यक्रम के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी। इस मौके पर भाजपा जिला कार्यसमिति किरण देवी, महिला मोर्चा अध्यक्ष किरण शर्मा, महामंत्री अर्चना देवी, प्रभुषण चंद्रवंशी आदि मौजूद थे।

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 01 फरवरी, 2024
www.azadsipahi.in

बोकारो स्टील प्लांट के सेवानिवृत्त कर्मचारियों को दी गयी विदाई

बोकारो (आजाद सिपाही)। बोकारो स्टील प्लांट के सेवानिवृत कर्मियों के लिए बुधवार को मानव संसाधन विकास विभाग के मेन ऑडिटोरियम में समारोह आयोजित कर विदाई दी गई। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) राजन प्रसाद के अलावा मुख्य महा प्रबंधक (सीआरएम-3) दीपक रॉय और मुख्य महा प्रबंधक (नगर प्रशासन) कुंदन कुमार उपस्थित थे। आरंभ में वरीय प्रबंधक (कार्मिक) अंकिता देव ने आगंतुकों का स्वागत किया। उन्होंने सेवानिवृत हो रहे कर्मियों को अंतिम निपटारा एवं मैत्री भवन से संबंधित जानकारी दी और प्रत्येक सेवानिवृत हो रहे कर्मियों का बायोडाटा प्रस्तुत किया। अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) राजन प्रसाद ने सेवानिवृत्त हो रहे कर्मियों को उनके निष्ठापूर्ण सेवा के लिए बधाई देते हुए उनके सुखमय जीवन की कामना की।

इस बार 10वीं की परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों का विधायक ने बढ़ाया उत्साह

मन लगाकर पढ़ें और अच्छे नंबर से पास हों विद्यार्थी: लंबोदर महतो

दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते गोमिया विधायक डॉ लंबोदर महतो व अन्य। इस बार 10वीं की परीक्षा देने वाले विद्यार्थी व स्कूल की शिक्षक-शिक्षिकाएं।

आजाद सिपाही संवाददाता

ललपनिया। गोमिया प्रखंड अंतर्गत होसिर पूर्वी पंचायत स्थित होसिर उच्च विद्यालय में 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोह आयोजित हुआ। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए विधायक डॉ लंबोदर महतो ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। सर्वप्रथम विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं ने विधायक का स्वागत किया। वजबकि बच्चों ने स्वागत गान किया। इस अवसर पर विधायक ने कहा कि आज के बच्चे कल के भविष्य हैं। आप लोग इस बाद 10वीं की परीक्षा देने जा रहे हैं। इसलिए मन लगाकर पढ़ाई करें और अपना रिजल्ट अच्छा करें। उन्होंने कहा कि बच्चों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं होती है। बस उन्हें तराशने वाला चाहिए। इस दिशा में होसिर उच्च विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं काफी मेहनत भी कर रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आप सब सकारात्मक सोंच के साथ निरंतर आगे बढ़ें, सफलता अवश्य मिलेगी। कठिन परिश्रमी बनें और हमेशा अच्छा करने की सोच रखें।

विधायक ने कहा कि देश और राष्ट्र के लिए कुछ करने की मन में चेष्टा बनाए रखकर आगे की तैयारी करें, क्योंकि देश का भविष्य आपके कंधों पर है। वहीं पूर्व मुखिया घनश्याम राम ने कहा कि छात्र जीवन के लिये 10वीं की परीक्षा काफी अहम होती है। इस परीक्षा से बेहतर सफलता पाने पर आगे के भविष्य को संवारने के लिये काफी मदद मिलती है। उन्होंने सभी छात्रों को बचे हुए समय में ईमानदारी पूर्वक मेहनत के साथ पढ़ाई करने को कहा। इस मौके पर प्रभारी प्रधानाध्यापक ललन प्रसाद, मुखिया सावित्री देवी, पंसस गीता देवी, उपमुखिया रंजीत साव, समाजसेवी मोहन नायक, नबीन प्रसाद, सुजीत प्रसाद, कुलदीप राम, मनोहर राम, सोहित प्रसाद, अटल हलधर, रामा ठाकुर, चितरंजन सिंह, सुनील यादव, तुमन तिवारी आदि उपस्थित थे।

गरीबों को नजरअंदाज कर संपन्न लोगों को योजना से लाभान्वित किया: सूर्यकांत

- मुखिया ने लगाया अबुआ आवास के चयन प्रक्रिया में जांच समिति कर मनमानी का आरोप
- अबुआ आवास लाभुकों के चयन में अनियमितता की डीसी से जांच की मांग, दी आंदोलन की चेतावनी

आजाद सिपाही संवाददाता

महुदा। बाघमारा प्रखंड में अबुआ आवास योजना में अनियमितता व भ्रस्टाचार का मामला फिर एक बार गरमा गया है। इसे लेकर बुधवार को सिंगड़ा पंचायत सचिवालय में मुखिया सुर्यकांत महतो के नेतृत्व में ग्रामीणों की बैठक हुई। इस दौरान ग्रामीणों ने पंचायत में अबुआ आवास के लाभुकों के चयन में अनियमितता बरतने का आरोप लगाया। कहा कि अबुआ आवास के योग्य लाभुकों की जांच करने आये चयन जांच समिति ने ग्रामसभा की सूची को दरकिनार कर उनका नाम काट दिया और अयोग्य लाभुकों को सूची में आगे कर दिया। ग्रामीणों ने पंचायत समिति व उपमुखिया पर आरोप मढ़ते हुए कहा कि इनके चयन जांच समिति में रहने के बावजूद योग्य ग्रामीणों को योजना का लाभ नहीं मिला हैं। जिससे ग्रामीणों में भारी आक्रोश है। कहा कि ग्रामसभा की सूची देकर सभी योग्य अबुआ आवास के लाभुकों को लाभ मिले और दोषी पर कार्रवाई हो। इस संबंध में ग्रामीण आदरी देवी ने बताया कि उसका नाम अबुआ आवास योजना में आया था, पर चयन समिति द्वारा काट दिया गया। उसका पति मजदूरी कर अपने परिवार का पालन पोषण करता है। गरीब होने के बाद भी आवास नहीं मिला। वहीं ग्रामीण अखिलेश कुम्भकार ने बताया कि उसका घर खपड़ैल का है। वह कई बार पंचायत प्रतिनिधियों एवं पंचायत अधिकारियों को आवेदन व आग्रह कर चुका है पर अबतक उसे कोई आवास नहीं मिला है। इस संबंध में मुखिया सूर्यकांत महतो ने कहा कि अबुआ आवास के चयन में भारी गड़बड़ी हुई है। जांच को आये चयन जांच समिति ने योग्य ग्रामीणों को दरकिनार कर योजना से वंचित कर सूची से बेदखल कर दिया। समिति द्वारा चयन प्रक्रिया में नियम विपरीत काम किया गया है। गांव में ऐसे लोगों को आवास मिला है जो आर्थिक रूप से परिपूर्ण हैं। जिसके पास पक्के मकान, चार पहिया वाहन, टीवी, फ्रीज आदि सभी जरूरत का सामान पहले से मौजूद है। चयन समिति द्वारा तमाम नियमों को ताक पर रख कर गरीब लोगों की अनदेखी की गई है। मुखिया ने धनबाद डीसी को ग्रामीणों का एक लिखित आवेदन देकर अबुआ आवास में दोबारा जांच कराने की मांग की है। मुखिया ने कहा कि अगर डीसी द्वारा जांच कर जरूरतमंदों को आवास नहीं दिलाया तो ग्रामीण आंदोलन करने को बाध्य होंगे। दूसरी ओर, पंसस पार्वती देवी ने बताया कि प्रखंड से आये अधिकारियों ने उन लोगों को तरजीह ही नहीं दी। खुद से जांच कर सभी लोगों का अंक बैठाया और चले गये।

महत्वपूर्ण न्यूज

घुमंतू बच्चों के लिए वरदान साबित हो रहा बाल अधिकार संरक्षण आयोग

कतरास (आजाद सिपाही)। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के तहत स्वामी विवेकानंद की जयंती के उपलक्ष्य में धनबाद के सहायक श्रमायुक्त कार्यालय की ओर से शुरू किए गए सड़कों पर लावारिस घूमकर जीवन व्यतीत कर रहे बच्चों को रेस्क्यू एवं पुनर्वास की व्यवस्था शुरू की गई है। इसी के मद्देनजर बुधवार को स्थानीय पुलिस की सहयोग से तेतुलमारी थाना क्षेत्र के मनसा मंदिर के समीप गुलगुलिया बस्ती में बाल अधिकार संरक्षण अयोग की जिला टीम पहुंची और घुमंतू बच्चे जो भीख मांगते हैं उनके माता पिता से मिलकर सरकारी योजनाओं के तहत मिलने वाली सुविधायों के बारे में बताया। साथ ही उनसे बच्चों को विद्यालय भेजने का आग्रह भी किया। लगे हाथ बच्चों को उपहार देकर उन्हें विद्यालय जाने के लिए समझाया और उनके अभिभावक को सरकारी पुनर्वास दिलाने की बात कही। मौके पर जिला बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष उत्तम मुखर्जी, श्रम प्रवर्तक पदाधिकारी बसंत महतो, एलपीओ विशंभर पोद्दार केश वर्कर, मोहम्मद उष्मान, सुपर वाइजर पूनम कुमारी, झारखंड ग्रामीण विकास ट्रस्ट समांयक नईम उद्दीन अंसारी आदि थे।

बेरमो में तीन घरों में ताला तोड़कर चोरी

फुसरो/बेरमो (आजाद सिपाही)। बेरमो थाना क्षेत्र के करगली बाजार मद्रसी मुहल्ला में मंगलवार की देर रात चोरों के गिरोह ने तीन बंद घरों में निशाना बनाया। इनमें से दो घरों से कीमती सामान हाथ लगे, जबकि एक घर से खाली हाथ ही लौटना पड़ा। चोरों ने सीसीएल कर्मी रामाकांत राम, बाबू स्वामी के घर में चोरी की। जबकि वृद्ध महिला जय श्री जो पुराना बीडीओ ऑफिस में इडली बेचती है, एक कमरे में सोयी थी। चोरों ने उसे कमरे की कुंडी बाहर से बंद कर दूसरे कमरे का ताला तोड़ घर में घुस तो गए पर उन्हें कुछ नहीं मिला। बताया जा रहा कि रामाकांत राम अपने घर औरंगाबाद और बाबू स्वामी अपना इलाज कराने एक माह पहले ही चेन्नई गए हुए थे। घटना की सूचना पड़ोसियों ने गृहस्वामी और पुलिस को दी। इसके बाद बेरमो पुलिस मौके पर पहुंची और जानकारी ली। इस बाबत गंगा राम ने बताया कि रामाकांत सोमवार को औरंगाबाद अपने घर गए थे। उन्होंने उन्हें रात में सोने के लिए चाभी दी थी। बताया कि वह शादी-विवाह में बैंड बजाने का काम करता है। घटना वाली रात वह ऊपरतुरियों से सुरही बारात लगाने चला गया था। देर रात दो बजे बरात लगाकर जब वापस घर लौटा तो मकान का ताला टूटा था और सारा सामान बिखरा हुआ मिला। उसने तुरंत इसकी सूचना पड़ोसियों और रामाकांत को दी। दोपहर बाद रामकांत औरंगाबाद से करगली बाजार पहुंचे और सामानों का मिलान किया। इसके बाद बेरमो थाना में लिखित आवेदन दिया। उन्होंने बताया कि चोरों ने 25 हजार नगद, चांदी का सिक्का सहित लगभग 500 ग्राम चांदी, सोने के दो नाक का व एक चंद्रमा की चोरी की है। वहीं बाबू स्वामी के घर से कितने की चोरी हुई है इसका पता नहीं चल पाया है।

22 वां इस्पातांचल स्वदेशी मेला 10 फरवरी से

बोकारो (आजाद सिपाही)। स्वदेशी जागरण मंच की ओर से 22 वां इस्पातांचल स्वदेशी मेला 10 से 18 फरवरी तक सेक्टर-4 के मजदूर मैदान में आयोजित होगा। जिसकी तैयारी की समीक्षा बैठक मंच के जिला संयोजक कुमार संजय की अध्यक्षता में हुई। मेला के सफल संचालन के लिए चार चेंबर के संजय बैध को मेला का संयोजक बनाया गया है। राष्ट्रीय मेला प्रमुख सचिंद्र बरियार ने कहा कि इस बार मेला का थीम स्वावलंबन बोकारो रहेगा। बैठक में दिलीप वर्मा, अजय चौधरी उर्फ दीपक, प्रमोद सिन्हा आदि थे।

सिंह मेंशन परिवार व जश्रसं आपके साथ ही खड़ा मिलेगा : रागिनी सिंह

गफ्फार अंसारी के नेतृत्व में सैकड़ों युवाओं ने थामा भाजपा-जश्रसं का दामन

आजाद सिपाही संवाददाता

जश्रसं के मिलन समारोह को संबोधित करती महामंत्री रागिनी सिंह।

झरिया। भौंरा 16 नंबर खेल मैदान में बुधवार को जनता श्रमिक संघ (जश्रसं) का मिलन समारोह आयोजित हुआ। जिसका नेतृत्व गफ्फार अंसारी ने किया। इसमें बतौर मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सह जश्रसं की महामंत्री रागिनी सिंह भी उपस्थित थी। इस महिलाओ-कार्यकर्ताओं ने 51 किलो का फूलों का माला पहना कर उनका अभिनंदन किया। इस दौरान गफ्फार अंसारी के नेतृत्व में सैकड़ों युवाओं ने रागिनी सिंह में अपनी आस्था व्यक्त कर जश्रसं व भाजपा का दामन थाम लिया। इस असर पर रागिनी सिंह ने सभी युवाओं को माला पहना कर पार्टी में स्वागत किया। उन्होंने कहा कि जश्रसं हमेशा अप लोगों के साथ खड़ा रहा है और आगे भी रहेगा। आप सबके साथ और सहयोग से आगे कार्य करते रहेगा। आप लोगों को पूर्ण विश्वास दिलाती हूं कि मेरी जहां भी आवश्यकता पड़ेगी आप मुझे अपने साथ पाएंगे। सिंह मेंशन परिवार और जश्रसं हमेशा परिवार की तरह आपके साथ खड़ा रहेगी। इस मौके पर सतेंद्र कुमार, उमेश यादव, अभिषेक पाण्डेय, विशाल श्रीवास्तव, चीकू महतो आदि मौजूद थे।

सरस्वती विद्या मंदिर में मनाया गया वार्षिकोत्सव

कतरास (आजाद सिपाही)। श्यामडीह सरस्वती शिशु मंदिर में बुधवार को वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस दौरान विद्यालय के बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया। छोटे-छोटे बच्चों ने मां भारती, स्वामी विवेकानंद, नेता सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी आदि विभूतियों के वेशभूषा में अलग-अलग कार्यक्रम पेश किया। वहीं, विद्यालय के सचिव विक्रम राजगढिया ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। जबकि अध्यक्ष प्रदीप खेमका ने विद्यालय के विकास पर विस्तार से चर्चा की। मौके पर कोषाध्यक्ष सुरेंद्र अग्रवाल, प्रधानाचार्य अभिमन्यु सिंह, श्रवण खेतान, सुनीता खेमका, दीपक अग्रवाल, अधिवक्ता डीएन चौधरी, नकुल चंद्र दास, कमलेश सिंह, कैलाश राजगढ़िया, चुन्ना यादव, कृष्ण कन्हैया राय, हरि अग्रवाल, संतोष जलान, अनिल बंसल, कमलेश अग्रवाल आदि मौजूद थे।

नाराजगी : 13 सूत्री मांगों को लेकर डटे रहे कार्यकर्ता

दो घंटे तक बंधक बने रहे अधिकारी-कर्मी

बस्ताकोला क्षेत्रीय कार्यालय में ताला जड़कर किया प्रदर्शन

आजाद सिपाही संवाददाता

गेट के समक्ष विभिन्न मागों को लेकर प्रदर्शन करते जश्रसं समर्थित लोग।

धनसार। मजदूर समस्याओं का निराकरन नहीं किए जाने व संगठन के कार्यकर्ताओं के साथ भेदभाव करने से नाराज जनता श्रमिक संघ (जश्रसं) के कार्यकर्ताओं ने बुधवार को बस्ताकोला क्षेत्रीय कार्यालय में ताला जड़कर दो घंटे कर प्रदर्शन किया. इस दौरान कार्यालय के अंदर काम कर रहे अधिकारी व कर्मचारी दो घंटे तक बंधक बने रहे। लोगों ने महाप्रबंधक जीसी राय को तानाशाह बताते हुए जमकर नारेबाजी की। इस प्रदर्शन में बस्ताकोला क्षेत्र के बेरा, दोबारी, घनुडीह, चांदमारी, विक्ट्री, राजापुर सहित विभिन्न कोलियरी से बीसीसीएल कर्मी और कार्यकर्ता शामिल हुए। विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे जश्रसं के क्षेत्रीय सचिव विजय कुमार ने कहा कि बस्ताकोला प्रबंधन ने हमारे यूनियन के साथ भेदभाव कर रहा है। विभिन्न कोलियरियों में मजदूर समस्याओं को लेकर संगठित और असंगठित द्वारा दिए गए मांग पत्र पर वार्ता न करने व अन्य समितियों में इस संगठन को स्थान नहीं दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पूर्व मे जश्रसं ने इन मांगों के अलावा घनुडीह में मैनुअल लोडिंग चालू करने, सभी आवासीय कालोनियों का जर्जर पाइप को बदलने, चांदमारी बेरा मार्ग में सफाई करने, बेरा से आमटाल तक सड़क बनाने की मांग सहित 13 सूत्री मांग पत्र सौंपा गया था। पर बीसीसीएल प्रबंधन इन मांगों को दरकिनार करते हुए जश्रसं से भेदभाव किया। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि अगर बस्ताकोला प्रबंधन का यही रवैया रहा तो पूरे बस्ताकोला क्षेत्र के कोलियरी का चक्का जाम कर दिया जाएगा। वहीं, दो घंटे के प्रदर्शन के बाद अधिकारी पहुंच प्रदर्शनकारियों के साथ वार्ता की। जहां मांगपत्र लेते हुए जल्द वार्ता कर समस्याओं का निष्पादन करने का आश्वासन दिया। इसके बाद आंदोलन समाप्त हुआ। इस मौके पर कार्यकारी अध्यक्ष मनोज गोप, क्षेत्रीय अध्यक्ष अनिल नोनिया, पप्पू पासवान, दिनेश पासवान, उपेंद्र सिंह, प्रेम गोप, राजू दास, देशराज, मदन राय, रूपलाल बेलदार, सुबोध सिंह और राजेश पांडे आदि उपस्थित थे।

डीएवी-6 के विद्यार्थियों ने 'संस्कृति सृजन प्रदर्शनी' में दिखाई प्रतिभा

बोकारो (आजाद सिपाही)। सेक्टर 6 स्थित डीएवी पब्लिक स्कूल में बुधवार को विभिन्न विषयों पर आधारित संस्कृति सृजन 2023-24 प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल डीएवी जोन-जी के एआरओ अरुण कुमार ने फीता काट कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। वहीं, विद्यालय के विज्ञान, कला, वाणिज्य, भाषा साहित्य, खेल, कंप्यूटर और संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों के 350 चार्ट व 250 मॉडल के प्रदर्शनी लगाई और अपनी प्रतिभाओं को दिखाया। इस मौके पर झारखंड जोन-जी के अरुण कुमार ने कहा कि इस तरह की गतिविधियों में भाग लेने से बच्चों के सामाजिक सुरक्षा के भाव के साथ ही उनमें रचनात्मक, सृजनात्मक और व्यक्तित्व का विकास होगा। वहीं, प्राचार्य बृज मोहन लाल दास ने इस दिन को विद्यार्थियों के लिए विशेष दिन बताया। कहा कि बच्चे अपने लक्ष्य की ओर तभी अग्रसर हो सकेंगे जब वे एकाग्रचित होकर नियमित अभ्यास करेंगे। उन्होंने बच्चों की प्रतिभा की काफी प्रशंसा की। मौके पर डीएवी स्वांग के प्राचार्य एसके शर्मा, डीएवी-4 के प्राचार्य एके झा, एलएमसी सदस्य ब्रह्म देव प्रसाद और सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित थे। मंच का संचालन नेहा कुमारी ने किया।

अभय सुंदरी हाई स्कूल में चलाया जागरूकता कार्यक्रम

धनबाद (आजाद सिपाही)। जिला परिवहन पदाधिकारी राजेश कुमार सिंह और वरीय पुलिस उपाधीक्षक (यातायात) राजेश कुमार के निर्देश पर सड़क सुरक्षा माह 2024 के अवसर पर हीरापुर अभय सुंदरी हाई स्कूल में बच्चों को सड़क सुरक्षा के बारे में जानकारी दी गई। उन्हें हेलमेट पहनने, ग्रुप बनाकर सड़क पर नहीं चलने, सड़क दुर्घटना होने पर तुरंत मदद करने के लिए एंबुलेंस नंबर 108 पर कॉल कर जानकारी देने सहित अन्य जानकारियां दी गई। स्कूल की प्रमुख कावेरी सरकार ने बच्चों एवं शिक्षकों के बीच सड़क सुरक्षा बुक वितरित कर सड़क सुरक्षा की शपथ दिलाई।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
NAMASTE

कार्यालय नगर परिषद रामगढ़।
आम सूचना

भारत सरकार के द्वारा केन्द्रीय योजना के तहत् National Action for Mechnised Sanitation Ecosystem (NAMASTE) स्कीम के तहत् रामगढ़ क्षेत्रांतर्गत सीवर एवं सेप्टिक टैंक से संबंधित सफाई कर्मचारियों को NAMASTE पोर्टल में प्रोफाईलिंग कराया जाना है। जिस हेतु उक्त कार्य में संलग्न सफाई मित्रों का निम्न प्रकार के दस्तावेजों की आवश्यकता है :–

1. आधार कार्ड की छायाप्रति।
2. पासपोर्ट साईज फोटो 01 पिस
3. बैंक पासबुक की छायाप्रति।
4. आईडी कार्ड जैसेः–(a) Driving License (b) Voter ID Card (c) Ration Card (d) Caste Certificate इनमें से कोई एक दस्तावेज की छायाप्रति।
5. शैक्षणिक प्रमाण पत्र की छाया प्रति।

यह सर्वे सफाई मित्र के आवास में/कार्य स्थल पर/सर्वे सिविर के माध्यम से किया जाना है इसी क्रम में नगर परिषद् रामगढ़ द्वारा दिनांक 20.02.2024 को नगर परिषद् कार्यालय में सिविर का आयोजन किया जाना है।

नमस्ते योजना का उद्देश्य सेप्टिक टैंको की सफाई और सवीरेज नेटवर्क के रखरखाव से जुड़े श्रमिकों को व्यावसायिक सुरक्षा लाभ और स्वास्थ्य बीमा का लाभ दिया जाना है। इसके अतिरिक्त, आपके पात्र आश्रित NAMASTE योजना दिशानिर्देशों के अनुसार लाभ के हकदार होंगे। इस सर्वे का उद्देश्य NAMASTE योजना के तहत पात्रता की जांच करना है।

अतः आप सभी से अनुरोध है कि उक्त सिविर में आवश्यक दस्तावेजों के साथ उपस्थित होकर अपना प्रोफाइलिंग कराये ताकि आपकी जिवन एवं आपकी परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित किया जा सके। इस सर्वेक्षण में आपकी हिस्सेदारी स्वैच्छिक है।

नोट :–अधिक जानकारी के लिए नगर परिषद् रामगढ़ से संपर्क करें।

कार्यपालक पदाधिकारी,
नगर परिषद्, रामगढ़।

PR 317431 District(23-24)D

झारखण्ड सरकार
कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल, रॉंची पूर्व, रॉंची

ई0 प्रोक्योरमेन्ट अति–अल्पकालीन निविदा सूचना

T. Reference No. :- O &M BUNDU -27/2023-24 Date 31.01.2024

Si.No.	Name of Work	Estimated Cost (in Lakhs.)	Bid Security (Lakhs.)	Cost of BOQ (Rs.)	Time of Completion
1.	Annual Operation and maintenance work of 7 MLD capacity W.T.P. Bundu Urban Pipe Water Supply Scheme for the year 2023-24 and 2024-25 Excluding the Energy Cost. under D.W. & S. Division, Ranchi East, Ranchi.	40.46018 Lakh	0.81000 Lakh	5000.00	13 Months
2.	Date of Tender Uploading on Website	06.02.2024/02.00 PM.			
3.	Document Download / Sale Start Date	06.02.2024/02.00 PM.			
4.	Bid Submission Start Date	06.02.2024/02.00 PM.			
5.	Document Download / Sale End Date	12.02.2024/04.00 PM.			
6.	Bid Submission End Date	12.02.2024/04.00 PM.			
7.	Last Date /Time of Online Payment for cost of BOQ & Earnest Money (A per direction of Secretary, IT & e Governance, Jharkhand Government vide Memo No 120 Date 03.10.2023)	12.02.2024/04.00 PM.			
8.	Date of Opening of Tender	14.02.2024/04.00 PM.			
9.	Name & Address of Office Inviting Tender	Executive Engineer, Drinking Water & Sanitation Division, Ranchi East, Ranchi.			
10.	Name & Address of Opening Officer	Executive Engineer, Drinking Water & Sanitation Division, Ranchi East, Ranchi.			
11.	Contact No. Of Procurement Office	0651-2480155			
12.	Helpline No. Of e-procurement cell	0651-2480345			

नोटः– 1. निविदा की राशि घट बढ सकती है। विशेष जानकारी के लिये वेबसाईट – http://jharkahndtenders. gov.in पर देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता
पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल, रॉंची पूर्व, रॉंची।

PR.NO.317486 Drinking Water and Sanitation(23-24):D

केआइआइटी प्लेसमेंट 2023: छात्रों को रुपये 63 लाख नौकरी की पेशकश, औसत वेतन में उल्लेखनीय वृद्धि

- कैंपस प्लेसमेंट के लिए 750 से अधिक कंपनियां आयीं
- 6200 नौकरी के प्रस्ताव उत्पन्न हुए
- 1800 छात्रों को कई नौकरी के प्रस्ताव मिले
- उच्चतम सीटीसी रुपये 63 एलपीए, औसत सीटीसी रुपये 8.2 एलपीए
- 60 कंपनियों द्वारा 1500+ सवेतन इंटर्नशिप ऑफर

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। केआईआईटी डीम्ड यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर ने स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट (केएसओएम) स्कूल ऑफ रूरल मैनेजमेंट (केएसआरएम) स्कूल के लगभग 5000 योग्य छात्रों के लिए 750 से अधिक कंपनियों से 6200 जॉब ऑफर के साथ एक बार फिर शत-प्रतिशत प्लेसमेंट हासिल किया है। जैव प्रौद्योगिकी (केएसबीटी) और स्कूल ऑफ लॉ (केएलएस) 2023 स्नातक बैच के लिए कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव में औसत वेतन पैकेज में भी महत्वपूर्ण उछाल देखा गया। इस साल औसत सीटीसी रुपये 8.2 लाख को पार कर गयी है, जबकि उच्चतम रुपये 63 लाख, जिससे कैंपस प्लेसमेंट में छात्रों को दिए जाने वाले वेतन के मामले में केआईआईटी को शीर्ष राष्ट्रीय संस्थानों की लीग में रखा गया। प्रख्यात शिक्षाविद् और सामाजिक कार्यकर्ता प्रोफेसर अच्युत सामंत द्वारा स्थापित केआईआईटी 1997 में उच्च शिक्षा संस्थान के रूप में आकार लिया। तब से, यह व्यापक आर्थिक और नौकरी बाजार परिदृश्यों के बावजूद, सभी शैक्षणिक कार्यक्रमों में लगभग पूर्ण प्लेसमेंट दर्ज कर रहा है। 2004 में भारत सरकार द्वारा इसे डीम्ड विश्वविद्यालय घोषित किये जाने के बाद, किट ने देश में व्यावसायिक शिक्षा को फिर से परिभाषित किया है और शिक्षाशास्त्र और अनुसंधान आउटपुट को पढ़ाने में मानक स्थापित किए हैं। शिक्षा मंत्रालय की एनआईआरएफ इंडिया रैंकिंग 2022 में इसे देश के 16वें पाएदान पर सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय के रूप में रखा है। यह प्रतिष्ठित टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2024 में विश्व स्तर पर 601-800 के समूह में है। विश्वविद्यालय को ठअअउ द्वारा उच्चतम अ++ ग्रेड से भी मान्यता प्राप्त है। स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी के शैक्षणिक कार्यक्रम आईईटी, यूके और एबीईटी, यूएसए द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। किट स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी में, 450 से अधिक कंपनियों द्वारा 5200 से अधिक नौकरी की पेशकश की गयी, जिसमें 1800 से अधिक छात्रों को कई ऑफर मिले। 8.20 एलपीए के साथ लगभग 2000 रुपये की औसत सीटीसी के साथ ड्रीम ऑफर थे। कैपजेमिनी द्वारा सबसे अधिक ऑफर दिए गये, इसके बाद बॉश ग्लोबल सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजीज ने क्रमशः 302 और 242 ऑफर दिए। इस वर्ष स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी में छात्रों को दिए जाने वाले वेतन पैकेज में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। रुपये की उच्चतम सीटीसी के साथ, युगाबाइट द्वारा 63 एलपीए की पेशकश की गयी थी, जबकि अमेजॅन, एटलसियन, लाइटबीम आदि जैसी 155 से अधिक कंपनियों ने 30 एलपीए रुपये से अधिक की सीटीसी की पेशकश की थी। 5 एलपीए प्लस, जिसमें सिस्को, फिलिप्स, आईओएन ग्रुप, रेजरपे सॉफ्टवेयर (पी) लिमिटेड, किकड्रम, सिलिकॉन लैब्स, श्लम्बरगर, जेडएस एसोसिएट्स, डेल टेक्नोलॉजीज, बीसीएन, आईट्रॉन, कॉमवॉल्ट, वीएमवेयर इत्यादि जैसी 47 कंपनियों ने सीटीसी की पेशकश की जो की रुपये 15 एलपीए से रुपये 25 एलपीए है। स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी की मुख्य शाखाओं के लिए, टीवीएस मोटर्स कंपनी, जेएसडब्ल्यू एनर्जी, वोल्वो ग्रुप इंडिया, सैमसंग हेवी इंडस्ट्रीज इंडिया, रॉयल एनफील्ड, आर्सेलरमित्तल, निप्पॉन स्टील इंडिया, टाटा केमिकल्स, डालमिया सीमेंट, आशियाना हाउसिंग, एफकॉन्स इंफ्रास्ट्रक्चर जैसी 50 से अधिक कंपनियां, टाटा पावर, श्नाइडर इलेक्ट्रिक, फिएट इंडिया ऑटोमोबाइल्स आदि ने 5 एलपीए से रुपये 10 एलपीए सीटीसी के साथ कैंपस का दौरा किया। लगभग 60 कंपनियों द्वारा 1500 से अधिक सशुल्क इंटर्नशिप ऑफर दिये गये, जिनमें सबसे अधिक 1269 इंटर्नशिप ऑफर हाईरिडियस द्वारा दिये गये। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट में एमबीए और बीबीए के छात्रों के प्लेसमेंट के लिए करीब 140 कंपनियां आईं। रेहलत द्वारा 22.75 एलपीए की रुपये की उच्चतम सीटीसी पेशकश की गयी थी, जबकि खिमजी रामदास, एलियन ग्रुप, टाटा कम्युनिकेशंस, हेवो डेटा, ट्रिनामिक्स जैसी कंपनियों ने रुपये 15 एलपीए। रुपये से अधिक की पेशकश की थी जो औसत सीटीसी रुपये 9.50 एलपीए थी। कुल मिलाकर, लगभग 360 से अधिक ऑफर उत्पन्न हुए, जिससे स्कूल के लिए 98.05% प्लेसमेंट दर्ज किया गया। केआईआईटी स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी (केएसबीटी) ने परिसर में आने वाली 40 से अधिक कंपनियों के साथ 89% प्लेसमेंट दर्ज किया। रुपये की उच्चतम सीटीसी। नेस्ले द्वारा 7.00 एलपीए की उच्चतम सीटीसी पेशकश की गयी थी, जबकि औसत रुपये 5 एलपीए था। एलुसिडाटा, जीएसके फार्मा, एनजीन बायोसाइंसेज, इंटास फार्मास्यूटिकल्स और हिमालय वेलनेस कंपनी जैसी कंपनियों ने रुपये 5 एलपीए से अधिक की सीटीसी की पेशकश की। कुल मिलाकर, 65 लॉ फर्मों और कंपनियों ने केआईआईटी लॉ स्कूल का दौरा किया, औसत 5 एलपीए की उच्चतम सीटीसी रुपये की वेतन पैकेज के साथ 81% प्लेसमेंट मिला। डीएफडीएल (इंटरनेशनल) द्वारा 21.00 एलपीए की पेशकश की गयी थी, जबकि रुपये भरूचा एंड पार्टनर्स (घरेलू) द्वारा 13 एलपीए की पेशकश की गयी थी। वाडिया गांधी एंड कंपनी, अर्न्स्ट एंड यंग एलएलपी, एलओआरएम इमिग्रेशन सर्विसेज एलएलपी, एचडीएफसी एर्गो जीआईसी, रॉयल सुंदरम जनरल इंश्योरेंस जैसी कंपनियों ने रुपये 6.00 एलपीए से रु. 10.00 एलपीए. सीटीसी की पेशकश की। केआईआईटी स्कूल ऑफ मैनेजमेंट (केएसआरएम) में 133 बैच के लिए 60 कंपनियों ने दौरा किया है। उच्चतम पैकेज की पेशकश अवंती फाइनेंस द्वारा 9.50 एलपीए, की गयी जिसमें नेस्ले-इंडिया, बिगबास्केट, भारत फाइनेंशियल इंक्लूजन लिमिटेड (बीएफआईएल) बीआईएसके फार्म, टेक्नोसर्व इंडिया, महिंद्रा फाइनेंस जैसी कंपनियों ने रुपये 6.00 एलपीए से रुपये 10.00 एलपीए सीटीसी की पेशकश की। स्कूल ने 96% प्लेसमेंट और औसत रु. 5.50 एलपीए सीटीसी दर्ज किया। सर्वश्रेष्ठ प्लेसमेंट प्रदर्शन ने संस्थान के अभिभावकों और छात्रों की खुशी बढ़ा दी है।

राहुल गांधी फरवरी में ओड़िशा आयेंगे

भुवनेश्वर। राहुल गांधी की भारत जोड़ न्याय यात्रा पूरे देश में चल रही है। राहुल गांधी 6 जून को ओड़िशा का दौरा करने वाले हैं। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष 6 तारीख की शाम को बीरमित्रपुर पहुंचेंगे। इसके बाद उनका भव्य स्वागत किया जायेगा। यात्रा के दौरान राहुल की न्याय यात्रा तीन संगठनात्मक जिलों में निर्धारित है। ये तीन जिले राउरकेला, सुंदरगढ़ और झारसुगुड़ा हैं। इन सभी जिलों में कांग्रेस द्वारा भारत जोड़ न्याय यात्रा आयोजित की जायेगी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने 29 तारीख को ओड़िशा का दौरा किया था।

पूर्व मध्य रेल

विविध वैद्युतिक कार्य हेतु ई–निविदा सूचना विद्युत (सामान्य) विभाग के लिये खुली निविदायें

मंडल रेल प्रबन्धक (विद्युत) पूर्व मध्य रेल, धनबाद द्वारा भारत के राष्ट्रपति की तरफ से निम्नलिखित कार्यों के निष्पादन के लिए ई–निविदा आमंत्रित की जाती है :–

ई–निविदा संख्या : ईएल/26/खुली/2023–24, **क्र.सं.** : 1, **कार्य का नाम, स्थान एवं समापन अवधि** : धनबाद मंडल में 15 स्टेशनों (मतारी, निचितपुर, तेतुलमारी, प्रधानखंटा, सरमाटांड, गुरप्पा, टनकुप्पा, बंधुवा, परसाबाद, चौबे, चिचाकी, निमियाघाट, चौधरीबंध, फुसरो और गोमिया) पर 2x25 केवीए, एटी प्रदान करके सिग्नलिंग बिजली आपूर्ति प्रणाली में वृद्धि। (कार्य समापन अवधि : छः माह)। **क्र.सं.** : 2, **कार्य के लिए प्राक्कलित राशि** : रू. 1,49,47,147.64, **क्र.सं.** : 3, **बिड सिक्युरिटी** : रू. 2,24,700.00

ई–निविदा संख्या : ईएल/27/खुली/2023–24, **क्र.सं.** : 1, **कार्य का नाम, स्थान एवं समापन अवधि** : पाथरडीह & गोमो यार्ड और अन्य क्षेत्रों में अन्य विविध कार्यों के साथ–साथ हाईमास्ट टावर उपलब्ध कराकर प्रकाश व्यवस्था में सुधार। (कार्य समापन अवधि : छः माह)। **क्र.सं.** : 2, **कार्य के लिए प्राक्कलित राशि** : रू. 1,26,91,932.62, **क्र.सं.** : 3, **बिड सिक्युरिटी** : रू. 2,13,500.00

ई–निविदा संख्या : ईएल/28/खुली/2023–24, **क्र.सं.** : 1, **कार्य का नाम, स्थान एवं समापन अवधि** : धनबाद और पतरातू में रेलवे अस्पतालों के विभिन्न वार्डों में संबद्ध कार्यों के साथ ऊर्जा कुशल वीआरएफ एयर कंडीशनर का प्रावधान। (कार्य समापन अवधि : छः माह)। **क्र.सं.** : 2, **कार्य के लिए प्राक्कलित राशि** : रू. 50,67,192.77, **क्र.सं.** : 3, **बिड सिक्युरिटी** : रू. 1,01,400.00

• **ई–निविदा बंद होने एवं खुलने की तिथि एवं समय** : ई–निविदा बंद होने की तिथि 27.02.2024 को 11:00 बजे। ई–निविदा खुलने की तिथि 27.02.2024 को 11:30 बजे के बाद। • **वेबसाईट का विवरण** : वेबसाईट : www.ireps.gov.in. ई–निविदा के तहत मैन्युअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

मंडल रेल प्रबंधक (विद्युत)
पूर्व मध्य रेल, धनबाद
पीआर/02202/डीएचएन/ईजीईएन/टी/23–24/68

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
लैम्पस परिवार
बुंडू (रांची)

सीएम ने लक्ष्मी बस योजना शुरू की

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। बुधवार को मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से देवगढ़, अनुगोल और ढेंकानाल जिलों में लक्ष्मी बस योजना का शुभारंभ किया है। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि लक्ष्मी बस ने हमारा जीवन आसान बना दिया है। उन्होंने कहा कि यह गांव की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में अहम भूमिका निभायेगा। गौरतलब है कि यह योजना सबसे पहले मालकानगिरी में शुरू की गयी थी। पहले चरण में मालकानगिरी, नबरंगपुर, रायगडा, कलाहांडी, गजपति और कोरापुट जिलों के निवासियों को लक्ष्मी बस सेवा मिली। आज इस प्रणाली में तीन और जिले जुड़ गये। आज शुभारंभ के बाद 3 जिलों की 440 पंचायतों में 101 बसें चलेंगी। इससे 27 लाख से ज्यादा लोगों को फायदा होगा। देवगढ़ की 69 पंचायतों में चलेंगी 17 बसें और 3 लाख लोगों को होगा फायदा। अनुगोल की 176 पंचायतों में 29 बसें चलेंगी और 11 लाख 50 हजार लोगों को फायदा होगा। इसी तरह ढेंकानाल की 195 पंचायतों में 55 बसें चलेंगी और 13 लाख लोगों को फायदा होगा। इस योजना में पंचायत से प्रखंड तक बस सेवा की सुविधा दी गयी है। राज्य भर में 1000 से ज्यादा बसें चलेंगी। 5टी योजना के तहत शुरू किए गये इस कार्यक्रम में मिशन शक्ति माताओं को बस चलाने की जिम्मेदारी दी गयी है। इस मौके पर संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारा लक्ष्य पंचायत को विकास का केंद्र बनाना है। हमारा लक्ष्य गांव की अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है। उन्होंने कहा कि लक्ष्मीबस इसमें अहम भूमिका निभायेगा। इस योजना में हाल ही में शुरू की गयी श्रीजगन्नाथ एक्सप्रेस बस सेवा का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि महाप्रभु श्रीजगन्नाथ के दर्शन और श्रीमंदिर की परिक्रमा परियोजना का अनुभव लेने के लिए श्रीजगन्नाथ एक्सप्रेस बस सेवा शुरू की गयी है। माताओं के लिए बस टिकट की कीमत आधी कर दी गयी है। उन्होंने कहा, लक्ष्मी योजना ने हमारा जीवन आसान बना दिया है। यह कहते हुए कि हमारा ओडिशा नवीन ओडिशा कार्यक्रम गांव के परिवर्तन के लिए जारी है, मुख्यमंत्री ने नुआ ओड़िशा के निर्माण के लिए सभी के सहयोग की कामना की। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन की कई समस्याएं हैं। मुख्यमंत्री कार्यालय के जिला गश्ती के बाद इसकी जानकारी होने पर इस लक्ष्मी बस योजना का निर्णय लिया गया। इस बस का उपयोग ग्रामीण लोग अपने घरों से दैनिक कार्यों के लिए सुविधा एवं कम लागत के साथ कर सकते हैं। मुख्यमंत्री ने लक्ष्मी बस सेवा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि लक्ष्मी बस लोगों को लोगों से जोड़ेगी। सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को मजबूत करेगा। बच्चे को स्कूल-कॉलेज ले जाएं। किसानों को बाजारों से जोड़ें. उन्होंने कहा कि इस बस में माताएं और छात्राएं मात्र 5 रुपये में यात्रा कर सकेंगी। देवगढ़ में मौजूद परिवहन मंत्री टुकुनी साहू और ढेंकनाल में मौजूद पुर्त मंत्री प्रफुल्ल कुमार मल्लिक ने कहा कि मुख्यमंत्री की दूरदर्शिता के कारण गांव के लोगों को लाभ मिल रहा है। आज शहर का। लक्ष्मी योजना से ग्रामीण लोगों का जीवन बेहतर हुआ है। उन्होंने कहा कि लोगों का सरकार पर भरोसा बढ़ा है। कार्यक्रम में 5टी एवं नवीन ओड़िशा के अध्यक्ष ने कहा कि लक्ष्मी बस जनता की संपत्ति है। अपनी संपत्ति। कृपया इसकी उचित देखभाल करें। उन्होंने बस क्रू को सलाह दी कि वे लोगों के साथ उचित व्यवहार करें और उनकी सुरक्षा का ध्यान रखें। इस अवसर पर ढेंकानाल से विधायक सुधीर कुमार सामल, अनूगोल से विधायक रजनीकांत सिंह और विधायक ब्रजकिशोर प्रधान, देवगढ़ से जिला परिषद अध्यक्ष कौशिक कुमार प्रधान ने भाग लिया और अपना भाषण दिया। व्यापार और परिवहन विभाग की मुख्य प्रशासनिक सचिव उषा पाढ़ी ने कार्यक्रम में स्वागत भाषण दिया।

डॉ देवीप्रसन्न पटनायक को पहले विश्व उड़िया भाषा पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा

- मुख्यमंत्री उन्हें प्रशस्ति पत्र और बीस लाख रुपये का पुरस्कार देकर सम्मानित करेंगे

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। प्रथम विश्व उड़िया भाषा सम्मेलन के अवसर पर प्रख्यात भाषाविद् डॉ देवीप्रसन्न पटनायक को प्रथम विश्व उड़िया भाषा पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। प्रथम विश्व उड़िया भाषा सम्मेलन के अवसर पर, मुख्यमंत्री नवीन पटनायक प्रसिद्ध भाषाविद् पद्मश्री डॉ देवीप्रसन्न पटनायक को उड़िया भाषा के अनुसंधान के प्रति उनके जीवन भर समर्पण के सम्मान में विश्व उड़िया पुरस्कार से सम्मानित करेंगे। पुरस्कार के तौर पर उन्हें बीस लाख रुपये और प्रमाणपत्र दिया जायेगा। डॉ पटनायक के शोध ने अनुसंधान भाषा को काफी समृद्ध किया है। डॉ पटनायक भारत के एक प्रमुख विद्वान और भाषाविद् के रूप में जाने जाते हैं। डॉ पटनायक ने भारतीय भाषा संस्थान के संस्थापक निदेशक के रूप में बहुत ख्याति अर्जित की है। डॉ पटनायक को भारतीय भाषाओं के विकास के प्रति उनके समर्पित प्रयासों के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। उड़िया भाषा को शास्त्रीय दर्जा दिलाने में डॉ पटनायक का बहुमूल्य योगदान है। जी उमा महेश्वर राव अध्यक्ष भारतीय भाषा परिषद, पूर्व प्रोफेसर, भाषा विभाग हैदराबाद विश्वविद्यालय, प्रोफेसर सविता प्रधान कुलपति उड़िया विश्वविद्यालय, प्रोफेसर पी के स्वाइं कुलपति उत्कल संकृति विश्वविद्यालय, और प्रोफेसर बसंत कुमार पंडा परियोजना निदेशक, शास्त्रीय ओड़िया अध्ययन में उत्कृष्टता केंद्र, केंद्रीय शिक्षा विभाग ओड़िशा सरकार द्वारा गठित समिति ने सर्वसम्मति से इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए डॉ देवीप्रसन्न पटनायक के नाम की सिफारिश की।

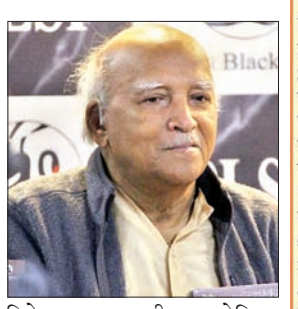

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
मां दिउड़ी होंडा शो रूम
रांची टाटा रोड, बुंडू

बोरिंग के लिए संपर्क करे
जल ही जीवन
993106883
9113754813
रांची के अंदर कहीं भी अच्छे रेट में
Contact for : Deep Boring, 405" 6" 8" Dia All Motor & Pump Fitting, Building Material

FREE FRANCHISE
Just call us : 9835502908
Alpha Institute of Computer Education
Franchise Benefit
• All Computer courses
• Vocational courses
• Authorization Letter
• Authorization Certificate
• Web Login ID & Password
• Study Material Support
• Branded Name
• PDF Certificate in 24 Hrs
• Hard Copy Certificate & Mark sheet
• Students Placement Support
• Marketing Support
• Online & Offline Certificate Verification
• Yearly Career Guidance - Seminar in your city
• Paper and Media Support
Registered Office : 262, Delta Bhawan,Adarsh Nagar, Khorha Toli,Kokar, Ranchi (Jharkhand),Mob : 9835502908
Cooperate Office : Kokar Chowk, Kokar, Ranchi (Jharkhand), Mob : 9631103045
Cooperate Office : Noorsarai, Near Police Station Nalanda, Bihar Mob : 7488289546
E-mail : alphaeducational.center@gmail.com, Web site : www.alphaec08.com

कृष्णा ज्वेलर्स
Mob : 9973853279, 9031249105
समस्या है तो ! समाधान भी है !
आचार्य प्रणव मिश्रा
प्रसिद्ध ज्योतिष रत्न गोल्डमेडलिस्ट, M.M
(ज्योतिर्विज्ञान) टॉपर 2012 एवं (P.h.D) रांची, वि. वि. रांची
गांधी चौक, सोनार गली, बीण वस्त्रालय के सामने अपर बाजार, रांची

PERFECT AQUA
सेल सर्विस एंड स्पेयर पार्ट्स
रिटेल एंड होलसेल
COMMERCIAL RO
IRON REMOVER
RO PLANT
CALL NOW
9431701163, 8340320390
PERFECT SERVICE
H.B Road, Kokar, Ranchi, Jh.
perfectaqua345@gmail.com
पानी चेक की सुविधा उपलब्ध फ्री

विकसित बीजू पटनायक पार्क का उद्घाटन

भुवनेश्वर। जिंदल स्टील एंड पावर (जेएसपी) की सामाजिक शाखा जेएसपी फाउंडेशन ने जिला प्रशासन अंगुल के सहयोग से अंगुल जिले के पाललहड़ा में बीजू पटनायक पार्क का उद्घाटन किया। इस सामुदायिक उद्यान का उद्घाटन अंगुल कलेक्टर और जिला मजिस्ट्रेट सिद्धार्थ शंकर स्वाइं और पाललहड़ा के माननीय विधायक मुकेश कुमार पाल ने किया। पाललहड़ा के लोगों को अपनी शुभकामनाएं देते हुए, जेएसपी फाउंडेशन की अध्यक्ष श्रीमती शाल्लू जिंदल ने कहा, श्जेएसपी फाउंडेशन हमेशा समुदाय के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने का प्रयास करता है।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
क्षेत्र का एकमात्र विश्वसनीय शिक्षण संस्थान जहाँ बच्चों को दी जाती है कम फीस में अच्छी शिक्षा
SWAMI VIVEKANAND PUBLIC SCHOOL
Patra Toli Adarsh Nagar Bundu
स्वामी विवेकानंद शैक्षणिक समाज सेवा संघ द्वारा संचालित (पंजीकृत)
A 26-Year-long journey of excellence
REGISTRATION OPEN FOR ADMISSION 2024-2025
JAC/ CBSE पाठ्यक्रम से आधारित
कक्षा नर्सरी से दशम् तक
Sailent Features
*Modern Education Programs & Techniques
*Strong Partnership With Parents.
*Qualified & Caring Faculty
*CCTV Camera Surveillance.
*Holistic Education & Skill Enhancement
*Smart Classes, e-learning
*Safe & Secure Environment.
*Hostel Facility For Boys & Girls.
Call Us For Details- 7004675262 (O)

वर्मा प्रेस प्रा० लि० राँची
Verma's® Today®
शृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं–

Class - X		Class - IX	
• Hindi	₹ 140	• Hindi	₹ 140
• English	₹ 140	• English	₹ 140
• Mathematics	₹ 140	• Mathematics	₹ 140
• Science	₹ 140	• Science	₹ 140
• Social Science	₹ 140	• Social Science	₹ 140
• Sanskrit	₹ 120	• Sanskrit	₹ 120
• Hindi – B	₹ 140	• Hindi – B	₹ 80
• Hindi Vyakaran– II	₹ 120	• Hindi Vyakaran– II	₹ 120
• English Grammar– II	₹ 120	• English Grammar– II	₹ 120
• Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100	• Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100
• Hindi Practical	₹ 55	• Hindi Practical	₹ 55
• English Practical	₹ 55	• English Practical	₹ 55
• Maths. Practical	₹ 65	• Maths. Practical	₹ 55
• Science Practical	₹ 65	• Science Practical	₹ 70
• S. Science Practical	₹ 65	• S. Science Practical	₹ 65
• Sanskrit Practical	₹ 55	• Sanskrit Practical	₹ 55
• Maths. Practical (Combined)	₹ 90	• Maths. Practical (Combined)	₹ 75
• Science Practical (Combined)	₹ 90	• Science Practical (Combined)	₹ 75
English Medium		English Medium	
• Mathematics	₹ 200	• Mathematics	₹ 130
• Science	₹ 200	• Science	₹ 200
• Social Science	₹ 200	• Social Science	₹ 130
• Maths. Practical	₹ 80	• Maths. Practical	₹ 80
• Science Practical	₹ 80	• Science Practical	₹ 80
• S. Science Practical	₹ 80	• S. Science Practical	₹ 80

मिलते-जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान !

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित।
संपादक : हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक*** : विनोद कुमार, ***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**